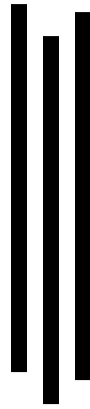


मध्यमकालीन खर्च संरचना

२०८२/८३-२०८४/८५

सभापोखरी गाउँपालिका

अन्तिम प्रतिवेदन



पेश गर्ने संस्था

मल्टिफेरियस कन्सल्टेन्सी एण्ड रिसर्च सेन्टर प्रा लि
काठमाडौं

विषय सुची

परिच्छेद एक: परिचय.....	9
१.१ पृष्ठभूमि.....	9
१.२ उद्देश्य.....	10
१.३ कानुनी व्यवस्था.....	10
परिच्छेद दुइ.....	12
विधि प्रकृया.....	12
२.१ मध्यमकालिन खर्च संरचना तर्जुमाका विधि प्रकृया.....	12
२.१.३. मध्यमकालिन खर्च संरचना सम्बन्धि विषय क्षेत्रगत समिति गठन.....	12
२.१.५ विषयगत समितिमा छलफल तथा योजना प्राथमिकीकरण.....	12
२.१.६. त्रि वर्षीय प्रक्षेपण सहित कुल वजेटको आकार तयारी.....	13
२.१.७ एकीकृत मस्यौदा तयारी.....	13
२.१.८ अन्तिम प्रतिवेदन पेश.....	13
अध्याय तीन.....	14
दीर्घकालिन सोच, मध्यकालीन लक्ष्य तथा उद्देश्य	14
२.१ परिचय.....	14
२.२ प्रमुख समस्या तथा चुनौती.....	14
२.३ प्रमुख सम्भावना तथा अवसर.....	15
२.४ गाउँपालिकाको दीर्घकालीन सोच, लक्ष्य, उद्देश्य	16
२.५ समष्टिगत रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	16
२.६ प्राथमिकताका क्षेत्रहरु.....	17
२.७ मध्यमकालिन वजेट खाका.....	21
२.८ वजेट विनियोजन र प्रक्षेपणको बाँडफाँट.....	22
२.८.१ दीगो विकास लक्षित कार्यक्रम.....	22
२.८.२ लैङ्गिक सांकेतिकरण.....	24
२.८.३ जलवायु सांकेतिकरण.....	24
२.९ गाउँ गौरवका आयोजना	24
२.९.१ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	24
२.९.२ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण.....	25
२.९.३ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि वर्षीय अनुमान.....	26
२.१० विषय क्षेत्रगत बाँडफाँट.....	27
२.११ मध्यम कालिन खर्च संरचनाको प्रारूप.....	29
४.१ कृषि.....	30
४.१.१ पृष्ठभूमि.....	30

४.१.२ समस्या तथा चुनौती.....	30
४.१.३ सम्भावना र अवसर.....	31
४.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	31
४.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	32
४.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण.....	33
४.१.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	33
४.२ पशुपन्छी	34
४.२.१ पृष्ठभूमि.....	34
४.२.२ समस्या तथा चुनौती.....	34
४.२.३ सम्भावना र अवसर.....	34
४.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	35
४.२.५ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण.....	35
४.२.६ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोतको त्रि बर्षीय अनुमान.....	36
४.३ वित्तीय तथा सहकारी क्षेत्र	36
४.३.१ पृष्ठभूमि.....	36
४.३.२ समस्या तथा चुनौती.....	36
४.३.३ सम्भावना र अवसर.....	37
४.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	37
४.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	38
४.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण.....	38
४.३.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	38
४.४ पर्यटन, संस्कृति तथा सम्पदा.....	39
४.४.१ पृष्ठभूमि.....	39
४.४.२ समस्या र चुनौती.....	39
४.४.३ सम्भावना र अवसर.....	40
४.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	40
४.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यम कालीन लक्ष्य.....	41
४.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	41
४.४.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	41
४.५ उद्योग, व्यापार, व्यवसाय तथा आपूर्ति	42
४.५.१ पृष्ठभूमि.....	42
४.५.२ समस्या र चुनौती.....	42
४.५.३ सम्भावना र अवसर.....	43
४.५.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	43
४.५.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	44

४.५.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	44
४.५.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	45
४.६ श्रम तथा रोजगारी र सामाजिक सुरक्षा.....	45
४.६.१ पृष्ठभूमि.....	45
४.६.२ समस्या र चुनौती.....	45
४.६.३ सम्भावना र अवसर.....	46
४.६.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	47
४.६.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	47
४.६.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण.....	48
४.६.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	49
परिच्छेद ५: सामाजिक क्षेत्र	50
५.१ स्वास्थ्य तथा पोषण.....	50
५.१.१ पृष्ठभूमि.....	50
५.१.२ समस्या र चुनौती.....	50
५.१.३ सम्भावना र अवसर.....	51
५.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	51
५.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यम कालीन लक्ष्य.....	51
५.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	52
५.१.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	53
५.२ शिक्षा, विज्ञान तथा नवप्रवर्द्धन.....	53
५.२.१ पृष्ठभूमि.....	53
५.२.२ समस्या र चुनौती.....	54
५.२.३ सम्भावना र अवसर.....	54
५.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	55
५.२.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	55
५.२.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	56
५.२.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	57
५.३ खानेपानी तथा सरसफाइ	57
५.३.१ पृष्ठभूमि.....	57
५.३.२ समस्या र चुनौती.....	58
५.३.३ सम्भावना र अवसर.....	58
५.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	58
५.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	59
५.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	59

५.३.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	59
५.४ महिला, बालबालिका तथा लक्षित वर्ग.....	60
५.४.१ पृष्ठभूमि.....	60
५.४.२ समस्या र चुनौती.....	60
५.४.३ सम्भावना र अवसर.....	60
५.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	61
५.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	61
५.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	62
५.४.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	63
५.५ युवा तथा खेलकूद.....	63
५.५.१ पृष्ठभूमि.....	63
५.५.२ समस्या र चुनौती.....	63
५.५.३ सम्भावना र अवसर.....	63
५.५.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	64
५.५.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	64
५.५.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	65
५.५.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	65
परिच्छेद ६ : पूर्वाधार क्षेत्र.....	66
६.१ वस्ती, आवास भवन तथा सार्वजनिक निर्माण.....	66
६.१.१ पृष्ठभूमि.....	66
६.१.२ समस्या र चुनौती.....	66
६.१.३ सम्भावना र अवसर.....	67
६.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	67
६.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	67
६.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	68
६.१.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	68
६.२ सडक पूर्वाधार तथा यातायात	69
६.२.१ पृष्ठभूमि.....	69
६.२.२ समस्या र चुनौती.....	69
६.२.३ सम्भावना र अवसर.....	70
६.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	70
६.२.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	70
६.२.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	71
६.२.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	71

६.३ सिंचाई	71
६.३.१ पृष्ठभूमि	71
६.३.२ समस्या र चुनौती	72
६.३.३ सम्भावना र अवसर	72
६.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना	72
६.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य	73
६.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण	73
६.३.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान	73
६.४ जलस्रोत, विद्युत तथा वैकल्पिक उर्जा	74
६.४.१ पृष्ठभूमि	74
६.४.२ समस्या र चुनौती	74
६.४.३ सम्भावना र अवसर	74
६.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना	75
६.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य	75
६.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण	75
६.४.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान	75
६.५ सूचना, सञ्चार तथा प्रविधि	76
६.५.१ पृष्ठभूमि	76
६.५.२ समस्या र चुनौती	76
६.५.३ सम्भावना र अवसर	76
६.५.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना	77
६.५.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य	77
६.५.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण	78
६.५.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान	78
परिच्छेद ७: वन, वातावरण तथा विपद् व्यवस्थापन	79
७.१ वन तथा जैविक विविधता	79
७.१.१ पृष्ठभूमि	79
७.१.२ समस्या र चुनौती	79
७.१.३ सम्भावना र अवसर	80
७.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना	80
७.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यम कालीनलक्ष्य	80
७.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण	81
७.१.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान	81
७.२ भू-संरक्षण तथा जलाधार व्यवस्थापन	81

७.२.१ पृष्ठभूमि.....	81
७.२.२ समस्या र चुनौती.....	82
७.२.३ सम्भावना र अवसर.....	82
७.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	83
७.२.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	83
७.२.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	84
७.२.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	84
७.३ वातावरण तथा फोहरमैला व्यवस्थापन.....	84
७.३.१ पृष्ठभूमि.....	84
७.३.२ समस्या र चुनौती.....	85
७.३.३ सम्भावना र अवसर.....	85
७.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	85
७.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	86
७.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण.....	86
७.३.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	86
७.४ विपद् जोखिम न्यूनिकरण र व्यवस्थापन तथा जलवायु उत्थानशिलता	87
७.४.१ पृष्ठभूमि.....	87
७.४.२ समस्या र चुनौती.....	87
७.४.३ सम्भावना र अवसर.....	87
७.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	88
७.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	88
७.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण.....	89
७.४.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	89
परिच्छेद ८ : संस्थागत विकास तथा सुशासन क्षेत्र.....	90
८.१ सुशासन ऐन, कानून र जवाफदेहिता	90
८.१.१ पृष्ठभूमि.....	90
८.१.२ समस्या र चुनौती.....	90
८.१.३ सम्भावना र अवसर.....	91
८.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	91
८.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	92
८.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	92
८.१.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	93
८.२ संस्थागत विकास, मानव संसाधन विकास तथा सेवा प्रवाह	93
८.२.१ पृष्ठभूमि.....	93

८.२.२ समस्या र चुनौती.....	93
८.२.३ सम्भावना र अवसर.....	94
८.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	94
८.२.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	95
८.२.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	96
८.३ वित्तिय श्रोत परिचालन	96
८.३.१ पृष्ठभूमि.....	96
८.३.२ समस्या र चुनौती.....	96
८.३.३ सम्भावना र अवसर.....	97
८.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	97
८.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीनलक्ष्य.....	98
८.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	98
८.३.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	98
८.४ योजना व्यवस्थापन.....	99
८.४.१ पृष्ठभूमि.....	99
८.४.२ समस्या र चुनौती.....	99
८.४.३ सम्भावना र अवसर.....	100
८.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना.....	100
८.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य.....	101
८.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण.....	101
८.४.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान.....	101

परिच्छेद एक: परिचय

१.१ पृष्ठभूमि

योजनावद्ध विकासलाई प्रभावकारी बनाउन सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापनको भूमिका महत्वपूर्ण हुने गर्छ । संघीय शासन व्यवस्थामा रूपान्तरित भैसकेपछि नेपालका लागि यसको महत्व अझ बढेको छ । संविधानको धारा ५६ मा उल्लिखित राज्य शक्तिको बाँडफाँडको मर्मलाई आत्मसाथ गर्दै सहकार्य, समन्वय र सहअस्थित्वका आधारमा तीन तहका सरकारले सार्वजनिक वित्तको प्रभावकारी र कुशल परिचालन गर्नु पर्ने हुन्छ । पन्ध्रौँ योजनाले परिकल्पना गरेको समृद्ध नेपाल सुखी नेपालीको दीर्घकालिन सोचलाई पुरा गर्न वि.सं. २०८७ सम्ममा मध्यम आय भएको मुलुक र वि.सं. २१०० सम्ममा समुन्नत मुलुकका रूपमा स्थापित हुने गरी सार्वजनिक वित्तको प्रभावकारी परिचालन गर्नु पर्ने हुन्छ । त्यसका लागि तीन तहका सरकार बीच हुने स्रोत साधनको विनियोजनमा कुशलता, दक्षता र वित्तिय अनुशासन उत्तिकै प्रभावकारी हुनु आवश्यक हुन्छ । यी पक्षहरुको प्रभावकारी व्यवस्थापन गर्ने औजारका रूपमा मध्यकालीन खर्च संरचनाको अवधारणा विकास गरिएको हो ।

तीन तह सरकार बीच दीर्घकालीन सोच, आवधिक योजना र वार्षिक बजेटबीच तादम्यता र सामञ्जस्यता कायम गर्न मध्यकालीन खर्च संरचनाले महत्वपूर्ण औजारका रूपमा योगदान पुर्याएको हुन्छ । यसले विकास योजनाका लाक्षित नतिजा हासिल गर्न स्रोत साधनको न्यायोचित वितरण र महत्तम परिचालन, पारदर्शी र मितव्ययी खर्च प्रणाली, पूर्वाधार निर्माण तथा सेवाको गुणस्तर तथा प्रभावकारीता, वित्तिय अनुशासन जस्ता पक्षमा सुधार ल्याउँछ ।

संघीय संरचना अन्तर्गतको सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापनलाई व्यवस्थित गर्न अन्तर सरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन २०७४ ले नेपाल सरकार तथा प्रदेश र स्थानीय तहले मध्यमकालीन खर्च संरचना तयार गर्नुपर्ने व्यवस्था गरेको छ । उक्त प्रावधान अनुसार मध्यमकालीन खर्च संरचनामा प्रस्तावित योजनाको उद्देश्य तथा सो योजनाका लागि सम्भाव्यता अध्ययन गर्न वा बजेट विनियोजनमा आवश्यकताको पुष्ट्याईलाई समेटिनु पर्ने, प्रस्तावित योजना कार्यान्वयन हुने आर्थिक वर्ष र त्यसपछिका दुई आर्थिक वर्षमा प्राप्त हुन सक्ने प्रतिफल र उपलब्धि समेत उल्लेख हुनुपर्ने व्यवस्था छ । साथै, योजना लागु गर्न आवश्यक पर्ने खर्चको विवरण र सो रकम कुन कुन स्रोतबाट के कति व्यहोर्ने र खर्च गरिएको रकमबाट प्राप्त हुन सक्ने प्रतिफल र उपलब्धिको प्रक्षेपण गरिएको हुनुपर्ने प्रावधान छ ।

आर्थिक कार्यविधि तथा वित्तिय उत्तरदायित्व ऐन २०७६ को दफा ६ मा राष्ट्रिय योजना आयोगले आवधिक योजनाको आधारमा मध्यकालीन खर्च संरचना तयार गर्नुपर्ने व्यवस्था गरेको छ । उक्त मध्यमकालीन खर्च संरचनामा आगामी तीन वर्षको समष्टिगत बजेट तथा कार्यक्रम र नतिजा खाकाका साथै प्रस्तावित आयोजना वा कार्यक्रमको क्रियाकलापगत विवरण, क्रियाकलापको अनुमानित प्रति इकाइ लागत, आयोजना वा कार्यक्रम सञ्चालनमा लाग्ने अनुमानित समय तथा सो बाट प्राप्त हुन सक्ने प्रतिफल समेत खुलाई प्रत्येक आयोजना वा

कार्यक्रमको प्राथमिकीकरण गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । सोही ऐनको दफा १३ (ख) मा अर्थ मन्त्रालयले राजस्व र व्ययको अनुमानमा मध्यमकालिन खर्च संरचना समेत समावेश गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ ।

यस सन्दर्भमा संघ र प्रदेश सरकारसँगको वित्तिय व्यवस्थापनलाई प्रभावकारी तथा उत्पादनशील बनाउन स्थानीय तहका लागि मध्यमकालिन खर्च संरचना तयार पार्नु पर्ने हुन्छ । तसर्थ देहायका उद्देश्य पुरा गर्न सभापोखरी गाउँपालिकाको मध्यमकालिन खर्च संरचना तयार पारिएको छ ।

१.२ उद्देश्य

- संघ, प्रदेश र स्थानीय तह बीचको सार्वजनिक खर्च प्रणालीमा वित्त अनुशासन कायम गरी समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम गर्नका लागि गाउँपालिकालाई प्राप्त हुने मध्यम अवधिको आन्तरिक र बाह्य श्रोतको वास्तविक अनुमान गरी बजेट खाका तर्जुमा गर्ने
- गाउँपालिकाको विकास योजनाको प्राथमिकताका क्षेत्रमा लगानीको सुनिश्चितता प्रदान गर्न स्रोत साधनको विनियोजन प्रक्रियाको पुनर्संरचना गरी प्राथमिकता प्राप्त विषयगत क्षेत्रमा बजेट बाँडफाँड गर्ने
- सार्वजनिक खर्चलाई बढी प्रभावकारी र कुशल बनाई लक्षित प्रतिफल सुनिश्चित गर्ने

१.३ कानुनी व्यवस्था

स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ को दफा २४ मा गाउँपालिका तथा नगरपालिकाले आफ्नो अधिकार क्षेत्रभित्रका विषयमा स्थानीय स्तरको विकासका लागि आवधिक, वार्षिक, रणनीतिक विषयक्षेत्रगत मध्यमकालीन तथा दीर्घकालीन योजना बनाइ लागू गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । त्यसैगरी अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ को दफा १६ मा स्थानीय तहले सार्वजनिक खर्चको विवरण तयार गर्नुपर्ने व्यवस्था गरेको र दफा १७ मा यस्तो विवरण तयार गर्दा आगामी तीन आर्थिक वर्षमा हुने खर्चको प्रक्षेपण सहितको मध्यमकालीन खर्च संरचना तयार गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । यस्तो मध्यमकालीन खर्च संरचनामा देहायका विवरणहरू खुलाउनुपर्ने व्यवस्था रहेको छः—

क) प्रस्तावित योजनाको लक्ष्य तथा उद्देश्य;

ख) प्रस्तावित योजनाको लागि सम्भाव्यता अध्ययन गर्न वा खर्च छुट्याउन आवश्यकताको पुष्ट्याई;

ग) प्रस्तावित योजना कार्यान्वयन हुनसक्ने आर्थिक वर्ष र त्यसपछिको दुई आर्थिक वर्षमा प्राप्त हुनसक्ने प्रतिफल र उपलब्धि;

घ) प्रस्तावित योजना लागू गर्न आवश्यक पर्ने खर्चको विवरण;

ङ) खर्च व्यहोर्ने स्रोत र खर्च गरिएको रकमबाट प्राप्त हुनसक्ने प्रतिफल र उपलब्धिको प्रक्षेपण;

च) प्रस्तावित योजनाको मध्यम अवधिको खर्चको रणनीति र त्यसको वार्षिक खर्चसँगको तादात्म्य;

छ) सञ्चालित योजना भए गत आ.व.मा छुट्याइएको खर्चअनुसार लक्ष्य हासिल भए नभएको यथार्थ विवरण यसैगरी आर्थिक कार्यविधि तथा वित्तीय उत्तरदायित्व ऐन, २०७६ को दफा ७ मा राष्ट्रिय स्रोत अनुमान समितिले सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय तहको कूल राष्ट्रिय स्रोत अनुमान गर्नुपर्ने व्यवस्था रहेको छ । स्थानीय तह समेतको स्रोत अनुमानका आधारमा मात्र कूल राष्ट्रिय स्रोत अनुमान गर्न सकिने भएको हुँदा सबै गाउँपालिका तथा नगरपालिकाले मध्यमकालीन खर्च संरचना तयार गर्नु आवश्यक छ ।

परिच्छेद दुइ

विधि प्रकृया

२.१ मध्यमकालिन खर्च संरचना तर्जुमाका विधि प्रकृया

२.१.१ स्रोत अनुमान तथा बजेट सीमा निर्धारण समितिको गठन

मध्यमकालिन खर्च संरचना तर्जुमाकालागि गाउँपालिकाका अध्यक्षको संयोजकत्वमा उपाध्यक्ष, कार्यपालिका सदस्यहरू, गाउँपालिकाका विषय क्षेत्रका कार्यालय प्रमुख सदस्य र प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत सदस्य सचिव हुने गरी स्रोत अनुमान तथा बजेट सीमा निर्धारण समितिको गठन गरियो ।

यो समितिको प्रमुख कार्य देहाय बमोजिम रहेको थियो :

(क) आगामी तीन वर्षको कुल स्रोत र खर्चको प्रक्षेपण गर्ने;

(ख) प्रक्षेपित कुल स्रोत र खर्चको आधारमा विषय क्षेत्रगत खर्चको सीमा निर्धारण गर्ने;

(ग) मध्यमकालीन खर्च संरचना तर्जुमा सम्बन्धी समग्र कार्यको निर्देशन गर्ने ।

घ) गाउँपालिकामा प्राप्त हुने आन्तरिक आय, राजस्व बाँडफाँडबाट प्राप्त हुने रकम, अनुदान, ऋण र अन्य आयको प्रक्षेपण र सोको सन्तुलित वितरणको खाका तथा आगामी तीन वर्षको बजेट सीमा निर्धारण गर्ने

२.१.३. मध्यमकालिन खर्च संरचना सम्बन्धि विषय क्षेत्रगत समिति गठन

मध्यमकालिन खर्च संरचना तर्जुमाकालागि गाउँपालिकाको आर्थिक, सामाजिक, पूर्वाधार, वन वातावरण तथा विपद व्यवस्थापन र संस्थागत विकास गरी पाँचवटा विषयगत समितिहरू कार्यपालिका सदस्यको संयोजकत्वमा गठन गरियो । क्षेत्रगत रूपमा हुने कार्यक्रमको खाका तयारी तथा स्रोत व्यवस्थापन गर्नु यस समितिको प्रमुख लक्ष्य रहेको थियो ।

२.१.५ विषयगत समितिमा छलफल तथा योजना प्राथमिकीकरण

विभिन्न शाखाबाट प्राप्त प्रस्तावित आयोजनाको त्रिवर्षीय प्रक्षेपण सहितको मध्यमकालिन खर्च संरचना र बजेट माथि सम्बन्धित विषयगत समितिमा दफावार छलफल गरियो । गाउँपालिकाको आवधिक योजना, संघ तथा प्रदेश सरकारका योजना, आर्थिक वर्ष २०८२/८३ मा गाउँपालिकाका लागि प्राप्त बजेट सिलिंग आदिका आधारमा विषय गत समिति सँग छलफल गरिएको थियो । साथै गाउँपालिकाले प्राप्त गरेको बजेट सिलिंगलाई सम्बोधन गर्ने गरि चालु वर्षमा कार्यन्वयनमा लैजाने आयोजना क्रमागत आयोजना तथा साल बसाली आयोजनाको प्राथमिकीकरण गरियो ।

स्रोत अनुमान तथा बजेट सीमा निर्धारण समिति

(क) अध्यक्ष वा प्रमुख — संयोजक

(ख) उपाध्यक्ष वा उपप्रमुख — सदस्य

(ग) कार्यपालिकाका सदस्यहरू मध्ये महिला, दलित वा अल्पसंख्यक समेतको प्रतिनिधित्व हुने गरी अध्यक्ष वा प्रमुखले तोकेको चार जना — सदस्य

(घ) प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत — सदस्य सचिव

२.१.६. त्रि वर्षिय प्रक्षेपण सहित कुल वजेटको आकार तयारी

गत आर्थिक वर्षको यथार्थ स्थिती, चालु आ.वको प्रक्षेपित अवस्था र मध्यमकालिन खर्च संरचनाको आधारमा आगामी ३ वर्षको वजेट तथा कार्यक्रम बारेमा वडा कार्यालय, सम्बन्धित विषयगत कार्यालय, योजना तथा प्राविधिक शाखा र सभापोखरी गाउँपालिकाको कार्यपालिकाले नीतिगत छलफल गरी आगामी आ. व ०८२।०८३ र थप २ आ. व को वजेट तथा कार्यक्रमको प्रक्षेपण गरी प्रारम्भिक प्रतिवेदन तयार गरियो । यो कार्य गर्दा निर्वाचित जनप्रतिनिधीहरू तथा गाउँपालिका विषयगत शाखाका प्रमुखहरूको संलग्नतामा योजना तथा प्राविधिक महाशाखाले समग्रमा पुनरावलोकन गरी अवधारणा पत्र तयार पारियो । स्रोत अनुमान तथा बजेट सिमा निर्धारण समितिले गाउँपालिकाको वर्तमान स्थिती, चालु आवधिक योजना, मध्यमकालिन खर्च संरचना, कुल गार्हस्थ उत्पादनको प्रक्षेपण, वित्तिय स्थिती, बाह्य एवम् आन्तरिक वित्तिय साधनको सम्भावना, करको लचकता, राजस्व प्रक्षेपण तथा कार्यगत नीति र प्राथमिकताको आधारमा आगामी आ. व र २ आ. व को कुल वजेटको आकार निर्धारण गर्यो ।

२.१.७ एकीकृत मस्यौदा तयारी

विषयगत समितिमा दफाबार छलफल गरी प्रस्ताव भएका कार्यक्रमहरूको त्रिवर्षिय खर्च प्रक्षेपण सहितको मध्यमकालीन खर्च संरचना र वजेटको एकीकृत मस्यौदा तयारी गरियो ।

२.१.८ अन्तिम प्रतिवेदन पेश

मस्यौदामा आएका सुझावहरूलाई सम्बोधन गरी मध्यमकालिन खर्च संरचनाको अन्तिम प्रतिवेदन तयार पारि अन्तिम प्रतिवेदनलाई कार्यपालिकाबाट स्वीकृत गराई अन्तिम प्रतिवेदन पेश गरियो ।

अध्याय तीन

दीर्घकालिन सोच, मध्यकालीन लक्ष्य तथा उद्देश्य

२.१ परिचय

माध्यमकालिन खर्च संरचना गाउँपालिकाको आवधिक योजनाको पुरक दस्तावेज हो । आवधिक योजनाले लिएको सोच, लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति र प्राथमिकता मध्ये आगामी तीन वर्षमा संचालन गरिने कार्यक्रम हरू लाई स्रोत सुनिश्चित गर्नका लागि माध्यमकालिन खर्च संरचना तयार पारिन्छ । सभापोखरी गाउँपालिकाको आर्थिक वर्षका (२०८२/८३—२०८५/८६) का लागि तुरुमा गरिएको मध्यमकालीन खर्च संरचनाले तीनै तहका सरकारहरूका योजनाहरूको तथा गाउँपालिकाको आवधिक योजना २०८१/८२-२०८५/८६ तथा वार्षिक नीति तथा कार्यक्रमलाई मुख्य आधारका रूपमा लिएको छ ।

२.२ प्रमुख समस्या तथा चुनौती

- जनशक्ति व्यवस्थापनमा कठिनाई हुनु
- परियोजन कार्यान्वयनमा जटिलता हुनु
- सडक स्तनरोन्नती र कालोपत्रे गर्न बजेट अपुग हुने
- आवास तथा जमिन व्यवस्थापन गर्न नसक्नु
- खानेपानी आयोजनामा पर्याप्त बजेट व्यवस्थापन गर्न नसक्नु
- विद्यार्थी संख्या र शिक्षक अनुपात शिक्षक दरवन्दी अपुग हुनु
- २ प्रस्तावित मा.वि., १ कलेज र १ प्राविधिक धार विद्यालय संचालनमा आर्थिक व्यवस्थापन कठिनाई हुनु
- जलसम्पदाको पूर्ण सदुपयोग (कृषि र खानेपानी आर्थोपार्जन) हुन नसक्नु
- संरक्षण, प्रचार, प्रसार र मर्मत संभार, पर्यटक सुरक्षा, वासस्थान भौगोलिक विकटता रहनु
- हाइड्रोपावरबाट पालिका, र स्थानीय जनतालाई प्रत्यक्ष लाभ दिलाउन नसक्नु
- कृषि भूमीको पूर्ण सदुपयोग नहुनु
- उत्पादित कृषिजन्य वस्तुको भण्डारणको समस्या हुनु
- वाह्य कृषिजन्य आयातलाई प्रतिस्थापन गराउन कठिनाई हुनु
- पूर्ण रूपमा व्यावसायिक उत्पादक बनाउन नसक्नु
- आगलागी नियन्त्रण, भुक्षय, बाढी, पहिरो, रोग व्यादी हुनु
- आर्थिक व्यवस्थापन र कार्यान्वयन चुनौती रहेको
- उपलब्ध प्राकृतिक स्रोत साधनलाई व्यवसायिक बनाउनु
- कृषि सम्बन्धी सहयोगलाई निरन्तरता दिलाई आय आर्जन वृद्धि गराउनु
- विपद कोषको बजेट वडागत बाँडफाँड गरी उद्देश्य विपरित खर्च हुनु
- वडा मेलमिलाप केन्द्र व्यवस्थापन गर्न नसक्नु
- मेलमिलाप कर्ता परिचालन गर्न नसक्नु

२.३ प्रमुख सम्भावना तथा अवसर

- दक्ष जनशक्तिको उपलब्धता हुनु
- एस्काभेटर, जेसिभी र ट्र्याक्टर जस्ता साधनहरू पालिकासित हुनु
- पूर्वाधारका डि.पि.आर.हरू तयार हुनु यातायातका साधनहरू उपलब्ध हुनु (एम्बुलेन्स, मोटरसाईकल गाडी कृषि एम्बुलेन्स)
- पालिका केन्द्र देखि वडा सम्म ट्र्याक ओपन सम्पन्न भएको
- सुकुम्बासी व्यावस्थापनका लागी पहिचान भएको
- गाउँपालिका र कोरियन रेडक्रस सोसाईटीको साझेदारीमा खानेपानी संचालन भई धेरै धारा र शौचालयहरू निर्माण भएका ।
- ५ शैया आधारभूत अस्पताल निर्माण सम्पन्न भइ संचालनको चरणमा रहेको
- २ वटा माध्यामिक विद्यालय, २ वटा प्रस्तावित मा.वि., १ वटा प्राविधिक (पशु) धार विद्यालय, १ वटा कलेज संचालनमा रहेको
- सबै वडामा वडा कार्यालय भवन निर्माण सम्पन्न भएको
- पर्यटकीय धार्मिक स्थल (सभापोखरी, वन्दुके, त्रिवेणी, मच्छिन्द्रनाथ, धर्मदेवी, बुढा बराजुथान, शिवालयहरू, २ वटा गुम्बाहरू र चर्चहरू आदि) रहेको
- निर्माणाधिन ३ वटा र चालु २ वटा हाइड्रोपावर रहेका र सम्भाव्यता अध्ययन भईरहेको ४ वटा हाइड्रोपावर रहेको
- कृषि उर्वर भुमी हुनु धान, कोदो, मकै, गहुँ, जौ लगायत नगदे वालीको पर्याप्त उत्पादन हुनु
- कृषिमा पर्याप्त लगानी हुनु (नगदेवाली - अलैंची, सुन्तला, कफी, कागती, लिची, ओखर आँप)
- विउपुँजीमा लगानी हुनु
- चरिचरन क्षेत्र वडा नं ३ को माथिल्लो भेग वन बुट्यान र खर्कहरू रहेको वडा नं ४ र ५ का अधिकांस भागमा चरण क्षेत्र रहेको (वन जंगल), वडा नं ३, ४, ५ र ६ लाई अलैंची पकेट घोषणा गरी कार्यान्वयनमा गरिएको र वडा नं २, ३ र ६ मा सुन्तला पकेट क्षेत्र छनौट भइ कार्यान्वयनमा रहेको
- कृषि सम्बन्धी संघ प्रदेश र स्थानीय तहबीच समन्वय र सहकार्यको सुरुवात भएको
- सभापोखरी गाउँपालिका क्षेत्र संखुवासभा जिल्लाको रुद्राक्ष उत्पादनको हबको रुपमा रहेको र स्थानीय जनताको मुख्य आमदानीको श्रोत रुद्राक्ष रहेको
- कृषि सम्बन्धी विभिन्न सीपमूलक तालिम प्रदान गरिएको, मेशिन यन्त्र उपकरण(मिनि टिलर ,फ्रुट क्याचर , सिकेचर), रासायनिक मलखाद्य (युरिया, डि. ए. पी.), र किटनासक बिषादीहरू र बोडोपेष्ट साथै सीँचाई पाईप गाउँपालिकाले कृषकलाई सहयोग गरेको
- विपद व्यवस्थापन कोष स्थापना भई संचालनमा रहेको र विपद प्रतिकार्य योजना तयार गरिएको साथै विपद जोखिम क्षेत्रको विधुतीय नक्शाङकन गरिको
- मेलमिलाप कर्ता उत्पादन भएको, सूचिकृत भएको र ६ वटै वडा मेलमिलाप केन्द्र संचालन भएको

२.४ गाउँपालिकाको दीर्घकालीन सोच, लक्ष्य, उद्देश्य

दीर्घकालीन सोच

"कृषि, पर्यटन, वन, खानी र पानीको सागर; समृद्ध सभापोखरीको दिगो आधार"

लक्ष्य

सभापोखरी गाउँपालिकाको समग्र विकासका लागि कृषिको आधुनिकिकरण गर्दै आर्थिक एवम् सामाजिक स्तरमा वृद्धि, वन, वातावरण एवम् दिगो पूर्वाधारहरूको विकास, स्वावलम्बी एवम् आत्मनिर्भर नागरिक तयार गरी सभ्य, सुसंस्कृत, सुशासनयुक्त समाजको निर्माण गर्ने मुख्य लक्ष्य निर्धारण गरिएको छ । यस योजनाको लक्ष्य प्राप्तिका लागि निम्न बमोजिम प्राथमिकताहरू रहेका छन् ।

१. गाउँपालिकालाई कृषि र प्राकृतिक स्रोत साधन युक्त क्षेत्रको रूपमा विकास गर्ने ।
२. गाउँपालिकाको पर्यटकीय क्षेत्रहरूको विकास तथा प्रवर्द्धन गर्ने ।
३. गाउँपालिकामा सामाजिक, आर्थिक र भौतिक पूर्वाधारको विकास गर्ने ।
४. गाउँपालिकाको विद्यमान स्रोत, साधन र सम्पदाको प्रयोग गरी समृद्ध बनाउने ।
५. सभापोखरी धार्मिक पर्यटकीय स्थललाई राष्ट्रिय सम्पदा सूचीमा सुचिकृत गराई पर्यटन उद्योगको विकास गरी पर्यटनको माध्यमद्वारा सभापोखरीबासीको आय आर्जन र रोजगारीमा वृद्धि गराउने ।

उद्देश्य

सभापोखरी गाउँपालिकाको सबै क्षेत्र र पक्षको यथार्थ वस्तुस्थिति विश्लेषण गरी दीर्घकालीन रूपमा गाउँपालिकालाई कस्तो स्थानीय तहको रूपमा विकास गर्ने र आगामी पाँच वर्षको गाउँपालिकाको विकास योजना तर्जुमा गर्ने मूल उद्देश्य रहेको यस आवधिक योजनाको अन्य विशिष्ट उद्देश्यहरू निम्न प्रकार रहेका छन्:

१. गाउँपालिकालाई आर्थिक तथा सामाजिक विकास तर्फ अग्रसर गराउनु ।
२. वातावरण मैत्री दिगो भौतिक पूर्वाधारहरूको विकास गर्नु ।
३. प्राकृतिक स्रोत र साधनहरूको दिगो उपयोग गर्नु ।
४. संस्थागत सुशासन कायम भई प्रभावकारी सेवा प्रवाह गर्नु ।

२.५ समष्टिगत रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

यस आवधिक योजनाले निर्दिष्ट गरेका लक्ष्य र उद्देश्यहरू प्राप्त गर्नेको लागि निम्न बमोजिमका रणनीति र कार्यनीतिहरू प्रस्ताव गरिएको छ:

विकास रणनीतिहरू

- प्राकृतिक श्रोतमा आधारित आर्थिक उत्पादनका अवसरहरूको अत्यधिक उपयोग गर्ने ।
- आकर्षक पर्यटकीय क्षेत्रहरूको प्रवर्द्धनका साथै उद्यम, व्यापार तथा व्यवसायको विकास गर्ने
- सामाजिक विकासका सूचकहरूमा सुधार गर्ने ।
- सामाजिक सुरक्षा तथा समावेशीतालाई सुनिश्चित गर्ने ।
- यातायात, जलश्रोत, सञ्चार तथा वस्ती विकास लगायत पूर्वाधार विकास गर्ने ।
- वन, वातावरण संरक्षण तथा जैविक विविधता कायम गर्दै विपद् जोखिम न्यूनीकरणबाट विकास र वातावरण बीच सन्तुलन कायम गर्ने ।

- वातावरण संरक्षण सम्बन्धी प्रष्ट नीति ल्याउने ।
- विकास कार्यको प्रभावकारिता र सेवा प्रवाह सदृढ गरी सुशासन अभिवृद्धि गर्ने ।
- मानवपूँजी निर्माण र सशक्तिकरण गर्न गाउँपालिकाका शिक्षित युवाहरूलाई सामाजिक परिचालनमा संलग्न गराउने ।
- गरिबी न्यूनीकरण कार्यक्रममा लगानी वृद्धि गरी नियमित अनुगमन र मूल्याङ्कन गर्ने ।
- लक्षित समूहलाई लक्षित गरेका कार्यक्रमहरूमा गाउँपालिकाले अनुदान बढाउँदै जाने ।
- गाउँपालिकाको भौतिक विकासमा उपभोक्ता समितिको लागत सहभागिता र संलग्नता बढाउँदै जाने ।
- विशेष लगानीका क्षेत्रहरूको पहिचान गर्दै गाउँपालिकाको दीर्घकालीन योजनामा समावेश गर्ने
- निजी क्षेत्रको लगानीलाई आकर्षित गरी सार्वजनिक निजी साझेदारीको सिद्धान्त अनुरूप विकास कार्य सञ्चालन गर्ने ।
- गरिबी न्यूनीकरण

२.६ प्राथमिकताका क्षेत्रहरू

गाउँपालिकाको विकासको लागि देहाय बमोजिमका प्राथमिकताका क्षेत्रहरू निर्धारण गरिएको छ;

क) पूर्वाधारको विकास तथा विस्तार

विशेष गरी बाह्रबिसे डके खाँदबारी सडक कालोपत्रे आयोजना, बाह्रबिसे वाना चैनपुर सडक कालोपत्रे आयोजना, गाउँपालिकाको केन्द्रबाट वडा कार्यालय जोड्ने सडक स्तरोन्नति, प्रशासकीय भवनको निर्माण तथा संचालन, ५ शैयाको आधारभूत अस्पतालको संचालन तथा व्यवस्थापन, सभाखोला मोटरेवल पुल निर्माण, बाह्रबिसे बगैँचा झोलुङ्गे पुल निर्माण, बाह्रबिसे सभापोखरी सडक निर्माण, सभापोखरी धार्मिक तथा पर्याटकीय स्थलको संरक्षण र विकास, बाह्रबिसे प्रहरी चौकी भवन निर्माण, हाडदुवा चालिसे बढेनी सडक स्तरोन्नति मुख्य पूर्वाधारको रूपमा लिएको पाईन्छ ।

खानेपानी तर्फ: सभापोखरी गाउँपालिकाबासीलाई सफा र स्वच्छ खानेपानी वितरणको लागि नेपाल रेडक्रस सोसाईटी खाँदबारी शाखाको समन्वयमा सभापोखरी गाउँपालिका र कोरियन रेडक्रस सोसाईटीको सहलगानीमा बृहत खानेपानी आयोजना संचालन गरिरहेको छ । सभापोखरी गाउँपालिका वडा नं १ र २ का जनतालाई एक घर एकधारा स्वच्छ खानेपानी वितरण गर्ने नितिलिई निम्नानुसारका खानेपानी आयोजना संचालन गरी ४७६ घरधुरीलाई खानेपानी वितरण भईरहेको छ । यसका अतिरिक्त सौचालयहरू समेत निर्माण भएका छन् ।

सि नं	खानेपानी आयोजनाको नाम	संचालित वडा नं	खानेपानीको धारा
१	हरेलो खानेपानी आयोजना	सभापोखरी वडा नं १	२०
२	छाँगैखोला खानेपानी आयोजना	सभापोखरी वडा नं १ र २	२३२
३	महाविर थाप्ली खानेपानी आयोजना	सभापोखरी वडा नं २	५५
४	बारखोला खानेपानी आयोजना	सभापोखरी वडा नं १	५४
५	धुपुसेरा खानेपानी आयोजना	सभापोखरी वडा नं २	२३
६	धाप्रेखोला खानेपानी आयोजना	सभापोखरी वडा नं २	१५
७	बितलब खानेपानी आयोजना	सभापोखरी वडा नं २	७६

यसै गरी नेपाल सरकारको लगानीमा बृहत सभापोखरी आयोजना साबिक सभापोखरी गा बि स मा संचालन गरी खानेपानी उपलब्ध गराई रहेको छ । यसका अतिरिक्त बाह्रबिसे खानेपानी आयोजनाले बाह्रबिसे बजार क्षेत्रमा खानेपानीको सुविधा बिस्तार गरेको पाईन्छ ।

ख) सु-शासनद्वारा सेवा प्रवाहमा सुधार

विकासको प्रतिफल प्रत्येक जनतालाई समानुपातिक तथा प्रजातान्त्रिक हिसाबले प्राप्त गर्ने वातावरण तयारीको लागि जनतालाई गरिने सेवा प्रवाहमा सु-शासन कार्य गर्नु गराउनु राज्यको दायित्व हो । राज्यको स्थानीय नेतृत्व समेतको भूमिका निर्वाह गरेको गाउँपालिकाले सेवा प्रवाहमा सुधार गरी जनतालाई सु- शासनको प्रत्याभूति गराउनु परेको छ । यसको लागि गाउँपालिकाले आफ्नो प्रशासनलाई सबलीकरण गरी सबै जनतालाई सेवा प्रवाह गर्नमा समेत ध्यान दिनु पर्दछ । सेवा सुविधा चुस्त र दुरुस्त बनाउनको लागि यस योजनाले प्रस्ताव गरेको संस्थागत विकास योजनालाई समेत ध्यान दिनुपर्ने देखिन्छ ।

सभापोखरी गाउँपालिकाले सर्वसाधारण सेवाग्राहिको जानकारीको लागि नागरिक वडापत्र राखेको, सहयोगी कक्षको व्यवस्था, आर्थिक कारोवार बिधुतीय अभिलेख प्रणाली शुत्र, र पाम्स प्रयोगमा ल्याएको, बिधुतीय हाजिरी, बिधुतीय प्रणालीबाट राजश्व संकलन, सेवा प्रवाहलाई चुस्त दुरुस्त बनाउन अधिकार प्रत्यायोजन गर्ने गरेको वार्षिक समिक्षा र सार्वजनिक सुनुवाई जस्ता सुशासनका टुल्स प्रयोग गरी कार्य संचालन गरेकोले सुशासन तथा सेवा प्रवाहमा सुधार गरेको छ । तरपनि अझै धेरै कार्य प्रकृत्यामा सुधार गर्नुपर्ने देखिन्छ ।

ग) समावेशी तथ लक्षित समूहको विकास

एक्काईसौ शताब्दीमा महिलाहरूलाई विकासको मुल प्रवाहमा ल्याउनुपर्छ भन्ने विश्वव्यापी अवधारणा तथा महिला प्रतिको विभेद अन्त्य गर्न समेत गाउँपालिकाको लक्ष्यलाई शिरमा राखी पूर्वाधार विकास निर्माणमा योजना तथा कार्यान्वयनमा समेत महिला सशक्तिकरण र लैङ्गिक समानताको पक्षलाई बढी भन्दा बढी प्रयोग गर्नु पर्दछ । यस किसिमको अवधारणालाई व्यवहारमा ल्याई मूर्त रुप समेत दिनुपर्ने देखिन्छ । यसको लागि महिला वर्गको लक्षित कार्यक्रमहरूलाई गाउँपालिकाले प्राथमिकताका साथ अवलम्बन गर्नुपर्ने देखिन्छ । योजना तर्जुमा तथा कार्यक्रम कार्यान्वयनमा महिलाहरूलाई सक्रिय सहभागिता गराउन सकेमा महिला सशक्तिकरण हुन पुग्दछ । सामाजबाट बञ्चित भएको कारणले समाजमा अझै पनि उत्पीडित, दलित, आदिवासी र जनजातिहरूले जीवन यापनमा कठिनाई भोग्नुपर्ने बाध्यतात्मक परिस्थिति बनेको छ । गाउँपालिकाले आवधिक योजनाको लक्ष्य र सिद्धान्तलाई आत्मसाथ गर्दै उत्पीडित, दलित, जनजातिको उत्थानको लागि विभिन्न कार्यक्रमहरू जस्तै महिला सिप विकास कार्यक्रम, किशोरी आत्मरक्षा कार्यक्रम, किशोरीहरूको लागि स्यानिटरी प्याड बितरण, क्षमता विकासका कार्यक्रमहरू, सुत्केरी आमा भेटघाट कार्यक्रम संचालन गरेको छ । लक्षित वर्ग अपाङ्गको लागि सहयोगी सामग्री वितरण, अपाङ्गता भएको परिवारका सदस्यलाई स्वास्थ्य बिमा कार्यक्रम, दलित वर्गको उत्थानको लागि दलित शिप विकास कार्यक्रम, दलित सशक्तिकरण कार्यक्रम, आधारभूत सिपमा आधारित सामग्री खरिद गरी वितरणका लगायत विभिन्न जात जातिको संस्कार र संस्कृतिको संरक्षण र विकासका लागि आर्थिक सहयोगका कार्यक्रम समावेश गरेको छ । महिला मैत्री खेलकुद कार्यक्रम महिला तेक्न्दो प्रशिक्षकको व्यवस्था गरेकोले सामाजिक समावेशितामा समेत जोड दिएको पाईयो ।

घ) सामाजिक परिचालन र सहकारिताको विकास

समाजको सर्वपक्षीय विकासको लागि नागरिकको आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्रको समेत विकास हुनुपर्ने र यसका लागि सामाजिक परिचालन र विकास कार्यमा सहकारिताको स्पष्ट अवधारणा अपनाई कार्य गर्नुपर्ने देखिन्छ ।

यसको लागि समाजका हरेक वर्ग र समुदायलाई परिचालन गरी विकास कार्यलाई प्रभावकारी रूपमा अगाडी बढाउन सकिन्छ । त्यसकारण सामाजिक परिचालन र सहकारिताको योजना निर्माणमा महत्वपूर्ण स्थान रहेको हुन्छ । योजना तर्जुमा देखि कार्यान्वयनको तहसम्म सामाजिक परिचालनको अवस्था उल्लेखनीय रूपमा वृद्धि हुनेछ ।

सहकारीताको माध्यमबाट स्थानीय स्तरमा छरिएर रहेका श्रोतहरूको संकलन गरी स्थानीय समाजको आवश्यकता अनुसार सदस्यहरूको आवश्यकता परिपूर्ति गर्नु र संकलित पूँजी परिचालन गरी आय आर्जनमा वृद्धि गर्नु सानातिना उद्यमसिल कार्यहरूमा लगानि गरी रोजगारी सृजना गर्नु आत्मनिर्भर बनाई वितीय साक्षरताको समेत जानकारी दिलाई संस्थागत विकास गर्नु सहकारीताको मूल धर्म हो । सहकारीताको माध्यमबाट जनताको श्रोत संकलन परिचालन र व्यवस्थापन गर्न सभापोखरी: गाउँपालिकामा ३ वटा सहकारीहरू बाह्रबिसे सभापोखरी बचत तथा ऋण सहकारी संस्था लि. सभापोखरी -३, चतनसिल महिला बचत तथा ऋण सहकारी संस्था लि. सभापोखरी - १, र सभापोखरी कृषि उद्यम दुग्ध तथा पशुपालन बहुउद्देश्य सहकारी संस्था लि.सभापोखरी -२, कृषासिल रहेका पाईयो । सहकारी कार्यालयसंग समन्वय गरी कीपोमिक्स लगायत वितीय सुशासन तथा संस्थागत क्षमता विकास तालीम संचालनमा सभापोखरी गाउँपालिकाले वार्षिक कार्यक्रम राखेर सहयोग समन्वय र सहजिकरण गरेको देखिन्छ । यसबाट थप आर्थिक तथा सामाजिक विकासमा टेवा पुग्ने देखिन्छ ।

सामुदायिक परिचालन अन्तर्गत सि बि आर एफ परिचालन गरी प्रत्येक वडाका गाउँ गाउँमा आमा समूह गठन गरिएका छन् । अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको समुह गठन गरीएका छन् । समूहका सदस्यहरूकाट नियमित बैठक बस्ने बचत संकलन गर्ने र सो बचतबाट संकलित भएको रकम सोही समुहका सदस्यहरूलाई आवश्यकता अनुसार ऋण परिचालन गरिदै आएको र यस कार्यबाट समुह परिचालन र विकासमा सहयोग पुगेको छ ।

(ड) पर्यटन प्रवर्द्धन तथा धार्मिक, ऐतिहासिक र विविध साँस्कृतिक सम्पदाहरूको संरक्षण र विकास

गाउँपालिकामा पर्यटन विकासका साथै स्थानीय जातजाति र पिछडिएका वर्गहरूको बसोबास रहेकोले उनिहरूको कला, संस्कृति, धर्म लगायत गाउँपालिकामा भएका धार्मिक, पुरातात्विक, ऐतिहासिक तथा विविध साँस्कृतिक सम्पदाहरूको संरक्षण र विकास गर्नु जरुरी छ । कुनै पनि योजनाले त्यस क्षेत्रको धार्मिक, साँस्कृतिक तथा पुरातात्विक महत्वका सम्पदाहरूको संरक्षण गर्नुमा जोड दिनुपर्ने हुन्छ । यस आवधिक योजनाले पर्यटन प्रवर्द्धन, ऐतिहासिक र साँस्कृतिक सम्पदाहरूको संरक्षण र विकासलाई समेत प्राथमिकतामा राखेको छ ।

सभापोखरी धार्मिक पर्याटकीय स्थलको संरक्षण सभापोखरी जाने पदमार्ग निर्माण र रेलिड निर्माण, लालीगुरास पदमार्ग निर्माण, सभापोखरी धाममा हेलीबाट जाने भक्तजनको लागि हेली प्याड निर्माण, खानेपानी तथा बासस्थानको व्यवस्था, पाटी पौवा निर्माण, पोखरीको सरसफाई तथा सौन्दर्यकरण बाटोमा पर्ने विभिन्न स्थानमा विश्रामस्थल सूचना पाटी र संकेत चिन्हको व्यवस्था गरिएको छ ।

यसैगरी दुम्सीकुर, त्रिवेणीधाम, बन्दुके, जस्ता पर्याटकीय स्थलको संरक्षण र विकासमा समेत लगानी गरेको छ । पर्याटको सुबिधाको लागि होमस्टे संचालन तथा प्रचार प्रसार गरेको छ । बुढा बराजु थान मन्दिर निर्माण, शिवालय मन्दिर निर्माण, गुम्बाहरू र चर्चहरू निर्माण गरी धार्मिक पर्यटन प्रवर्द्धनमा जोड दिएको छ । साँस्कृतिक सम्पदाको संरक्षण र विकासमा लिम्बु जातिको धान नाच, चासोक तडनाम, राई जातिको चण्डी नाच, उधौली उभौली पर्व, तामाङ जातिको तामाङ सेलो, डम्फु नाच, मगर जातिको मारुनी नाच, क्षेत्री ब्राम्हण समाजको देवली, तीज, जनैपूर्णिमा, नेवर जातिको लाखे नाच, लगायत साँस्कृतिक चाडपर्व भेषभूषाको संरक्षण गरी विकास गर्न आवश्यक सहयोग गर्दै आएकोछ ।

च) कर्मचारी तथा पदाधिकारीको क्षमता अभिवृद्धि

संविधानमा नै स्थानीय तहको एकल र साझा अधिकारहरू परिभाषित छन्। स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ ले स्थानीय निकायलाई बढी सक्षम बनाउने र विकासको प्रतिफल आम जनतालाई प्रदान गर्ने हिसाबले विभिन्न विषयगत तालिमहरू प्रदान गर्ने, अनलाईन सफ्टवेयर तालिम, आन्तरिक आय वृद्धि गरी विकास कार्यक्रममा खर्च गर्न सकिएमा स्थानीय निकायको क्षमता अभिवृद्धि हुने निश्चित छ । सभापोखरी गाउँपालिकाको कार्यालयमा जनप्रतिनिधीलाई प्रभावकारी सेवा प्रवाह, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन, सार्वजनिक खरिद प्रकृया र जनप्रतिनिधीको भूमिका सम्बन्धी क्षमता अभिवृद्धि तालिम दिलाईएको । कर्मचारीलाई प्रभावकारी सेवा प्रवाह गुनासो व्यवस्थापन, अनलाईनबाट कार्य सम्पादन गर्न क्षमता विकास तालिम, सार्वजनिक खरिद र सुशासन व्यवस्थापन, तालिम दिलाई सक्षम अभिवृद्धि गरिएको ।

छ) प्रभावकारी अनुगमन र मूल्याङ्कन

योजना तथा कार्यक्रमहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयन सहभागितामूलक अनुगमन र मूल्याङ्कन प्रणालीको विशिष्ट योगदान रहन्छ । प्रभावकारी रूपमा गरिने नियमित अनुगमन तथा सुझाव सल्लाह श्रोत साधनको परिचालनमा मितव्ययिता ल्याउनु र विकास निर्माणका कार्यमा गुणस्तरीय कायम गराउने आधार हो । जनताको लागि गरिने विकास निर्माण जस्ता कार्यको कार्यान्वयनमा गाउँपालिकाको मात्र अनुगमन पर्याप्त नहुने भएकोले सरोकारवालाहरू समेतको सहभागितामा अनुगमन र मूल्याङ्कन पद्धतिको विकास गर्नु पर्दछ । यसको लागि समुदायका हरेक वर्गबाट र संस्थाहरूबाट प्रभावकारी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गर्नुपर्ने हुन्छ । यसो हुन सकेमा कार्य योजनाहरूले स्थायित्व पाउनुका साथै प्रभावकारी रूपमा यसको प्रभाव समुदायमा पर्ने गर्दछ । नियमित अनुगमन, योजनाहरूको कार्यान्वयन मूल्याङ्कनको लागि गाउँपालिका स्थित सरोकारवाला निकायहरूलाई परिचालन गरिनु पर्दछ । गाउँपालिकाबाट संचालन गरिएका सबै आयोजना तथा कार्यक्रमहरूको सरवकारवालाहरू समेतको उपस्थितिमा प्रभावकारी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गर्ने गरेको पाईयो । २ लाख भन्दा कम लागतका आयोजनाहरू वडा अनुगमन समितिबाट र सो भन्दा माथिका आयोजना तथा कार्यक्रम गाउँपालिका उपाध्यक्षको संयोजकत्वमा गठित अनुगमन समितिबाट संयुक्त रूपमा अनुगमन गर्ने गरेको पाईयो । शाखागत रूपमा संचालन भएका कार्यक्रम र खरिद प्रकृत्यामा समेत जनप्रतिनिधीको संलग्नतामा अनुगमन गरेको पाईयो । यसले श्रोत साधनको सही परिचालन हुने विकास निर्माणका लक्ष्यित उद्देश्य समयमा पुरा हुने देखिन्छ ।

२.७ मध्यमकालिन बजेट खाका

बजेटका स्रोतहरू	२०७९/८० को यथार्थ	२०८०/८१ को यथार्थ	२०८१/८२ को संसोधित अनुमान	प्रक्षेपण			३ बर्ष को जम्मा प्रक्षेपण
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५	
राजस्व तथा अनुदान	४९०८८६	३६६९०३	३८५९३२	४५७७९२	५४३५०६	६४५७८४	१६४७०८२
आन्तरिक आय	१३६९३३	४११६८	४७३४३	५४४४५	६२६११	७२००३	१८९०५९
राजस्व बाँडफाँडबाट प्राप्त आय	७२९६१	७१३०८	७१४४०	८५४५१	१०२२३५	१२२३४६	३१००३२
नेपाल सरकार	७००७५	६८६६३	६८६६३	८२३९६	९८८७५	११८६५०	२९९९२०
प्रदेश सरकार	२८८६	२६४५	२७७७	३०५५	३३६०	३६९७	१०११२
नेपाल सरकार वित्तीय हस्तान्तरण	२६०३५४	२३७४००	२४९२७०	२९९१२४	३५८९४९	४३०७३९	१०८८८११
वित्तीय समानीकरण अनुदान	१०१२००	८९०००	९३४५०	११२१४०	१३४५६८	१६१४८२	
सशर्त अनुदान	१३७१५४	१२८९००	१३५३४५	१६२४१४	१९४८९७	२३३८७६	
समपुरक अनुदान	९५००	८०००	८४००	१००८०	१२०९६	१४५१५	
विशेष अनुदान	१२५००	११५००	१२०७५	१४४९०	१७३८८	२०८६६	
प्रदेश सरकार वित्तीय हस्तान्तरण	२०६३८	१७०२७	१७८७८	१८७७२	१९७११	२०६९६	५९१८०
वित्तीय समानीकरण अनुदान	५४००	५४११	५६८२	५९६६	६२६४	६५७७	१८८०७
सशर्त अनुदान	५२३८	१६१६	१६९७	१७८२	१८७१	१९६४	५६१७
समपुरक अनुदान	१००००	१००००	१०५००	११०२५	११५७६	१२१५५	३४७५६
बचत (+ वा —)	४९०८८६	३६६९०३	३८५९३२	४५७७९२	५४३५०६	६४५७८४	१६४७०८२

२.८ वजेट विनियोजन र प्रक्षेपणको बाँडफाँट

२.८.१ दीगो विकास लक्षित कार्यक्रम

संकेत न	दीगो विकास लक्ष्य	आयोजना संख्या	०८२/८३ को खर्च अनुमान		०८३/८४ को खर्च प्रक्षेपण		०८४/८५ को खर्च प्रक्षेपण	
			रकम	प्रतिशत	रकम	प्रतिशत	रकम	प्रतिशत
१	हरेक क्षेत्रमा रहेका सबै स्वरूपका विषम गरीबीको अन्त्य	६	४३६२०	०.०९	४७९८२	०.०९	५२७८०.२	०.०८८
२	भोकमरीको अन्त्य गर्ने, खाद्य सुरक्षा तथा उन्नत पोषण प्राप्ति र दीगो कृषिको प्रवर्द्धन	५	६९२४०	०.१४	७६१६४	०.१४	८३७८०.४	०.१३९
३	सबै उमेर समुहका व्यक्तिको स्वस्थ जीवनको सुनिश्चितता	४	२३४००	०.०५	२५७४०	०.०५	२८३१४	०.०४७
४	समावेशी तथा समतामुलक गुणस्तरीय शिक्षा	९	३४२००	०.०७	३७६२०	०.०७	४१३८२	०.०६९
५	लैङ्गिक समानता हासिल गर्ने	७	५१३०	०.०१	५६४३	०.०१	६२०७.३	०.०१०
६	खानेपानी तथा सरसफाईको उपलब्धता र यसको दीगो व्यवस्थापन	१	१५०००	०.०३	१६५००	०.०३	१८१५०	०.०३०
७	खर्चले धान्न सकिने, भरपर्दो, दीगो र आधुनिक उर्जामा सबैको पहुँच	१	१५०००	०.०३	१६५००	०.०३	१८१५०	०.०३०
८	स्थिर, समावेशी र दीगो आर्थिक बृद्धि, पूर्ण उत्पादनशील रोजगारी र मर्यादित श्रम	१	११०२५०	०.२२	१२१२७५	०.२२	१३३४०३	०.२२२
९	उत्थानशील पूर्वाधारको निर्माण, समावेशी र दीगो औद्योगीकरण र नव प्रवर्तन	४	१०७१००	०.२२	११७८१०	०.२२	१२९५९१	०.२१५
१०	शहर र मानव बस्तीलाई समावेशी, सुरक्षित, उत्थानशील र दीगो बनाउने	३	३६६००	०.०७	४०२६०	०.०७	४४२८६	०.०७४
११	दीगो उपभोग र उत्पादन	२०	१७५५०	०.०४	१९३०५	०.०४	२१२३५.५	०.०३५

१२	जलवायु परिवर्तन	१	३३००	०.०१	३६३०	०.०१	३९९३	०.००७
१३	पारिस्थितिकीय प्रणालीको दीगो उपयोग	९	९०००	०.०२	९९००	०.०२	१०८९०	०.०१८
१४	दीगो विकासका लागि शान्ति र समावेशी समाजको विकास गर्ने, सबैका लागि न्यायको पहुँच, प्रभावकारी, जवाफदेही तथा समावेशी संस्थाको निर्माण गर्ने	६	१९५०	०.००	२१४५	०.००	२३५९.५	०.००४
१५	दीगो विकासका लागि विश्व व्यापी साझेदारीलाई जिवन्त तुल्याउने	६	६२६७.९	०.०१	६८९४.६	०.०१	७५८४.१६	०.०१३
		८३	४९७६०८	१	५४७३६९	१	६०२१०६	१

२.८.२ लैङ्गिक सांकेतिकरण

प्राथमिकता क्रम	आयोजना संख्या	०८२/८३ को खर्च अनुमान		०८३/८४ को खर्च प्रक्षेपण		०८४/८५ को खर्च प्रक्षेपण	
		रकम	प्रतिशत	रकम	प्रतिशत	रकम	प्रतिशत
निर्दिष्ट	१५	६२७३०	०.१३	६९००३	०.१३	७५९०३.३	०.१३
सहयोगी	४०	२३८११०	०.४८	२६१९२१	०.४८	२८८११३	०.४८
तटस्थ	२८	१९६७६८	०.४०	२१६४४५	०.४०	२३८०८९	०.४०
कुल जम्मा	८३	४९७६०८		५४७३६९	१	६०२१०५.६	

२.८.३ जलवायु सांकेतिकरण

प्राथमिकता क्रम	आयोजना संख्या	०८२/८३ को खर्च अनुमान		०८३/८४ को खर्च प्रक्षेपण		०८४/८५ को खर्च प्रक्षेपण	
		रकम	प्रतिशत	रकम	प्रतिशत	रकम	प्रतिशत
अत्यन्त सान्दर्भिक	१५	१२३००	०.०२	१३५३०	०.०२	१४८८३	०.०२
सान्दर्भिक	१२	११२८६०	०.२३	१२४१४६	०.२३	१३६५६१	०.२३
तटस्थ	५६	३७२४४८	०.७५	४०९६९३	०.७५	४५०६६२	०.७५
कुल जम्मा	८३	४९७६०८		५४७३६९		६०२१०६	

२.९ गाउँ गौरवका आयोजना

२.९.१ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०÷८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१÷८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
निरपेक्षित गरिवी	प्रतिशत	१२.४	१२	११.६	११.२	१०.८
वार्षिक जनसंख्या वृद्धिदर		-०.०५२		०		०.५
प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय	रु.हजार	२००	२१०	२२५	२५०	२७५
औषत आयु (जन्म हुँदाको)	वर्ष	७२				
साक्षरता दर (५ वर्ष माथि)	प्रतिशत	७६.४	७८	८०	८३	८६
वेरोजगारी दर	प्रतिशत	९.८०	९	८	७	६

सूचक	एकाइ	२०८०÷८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१÷८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८ २/८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
खाद्यान्न उत्पादन वार्षिक वृद्धिदर (धान, मकै, गहुँको कूल)	प्रतिशत	२.४९	२.५५	२.६	२.७५	२.८५
पशुपंक्षीको वार्षिक विक्री वृद्धिदर (दुध मासुको कूल)	प्रतिशत	९८			९९	
पर्यटन व्यवसायवाट कूल रोजगारी प्रदान	संख्या	१०	२५	५०	१००	१५०
पालिकाको वार्षिक आयात निर्यातको अनुपात (आयात:निर्यात)	अनुपात	२:१		१.७५ :१		१.५:१
वैक तथा वित्तीय संस्थाहरुवाट भएको कूल कर्जा प्रवाह (कूल निक्षेप सङ्कलन रकमको)	प्रतिशत	५	६	७	८	९

२.९.२ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण

उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुल लागत (रु हजारमा)	अपेक्षित नतिजा
वाह्रविसे डके खादैबारी सडक कालोपत्रे	सडक को स्तरोन्नति गर्नु	२०८२/८३ - २०८४/८५	२०००००	सडक पहुँच सहज भएको हुने
प्रशासकीय भवन निर्माण	कार्यपालिका भवन निर्माण गर्नु	२०८२/८३ - २०८४/८५	३००००	प्रशासकीय कार्यमा सहजता आएको हुने
सभाखोला मोटरेवल पुल	पहुँच विस्तार गर्नु	२०८२/८३ - २०८४/८५	४००००	पुल निर्माण भै यातायातमा सहजता आएको हुने
आवासीय तथा नमुना विद्यालय सञ्चालन (जनज्योति माध्यामिक विद्यालय (त्रिवेणी माध्यामिक विद्यालय))	विद्यालय को गुणस्तरीयता अभिवृद्धि गर्नु	२०८२/८३ - २०८४/८५	२००००	पठनपाठनमा सहजता आएको हुने

सभापोखरी धार्मिक पर्यटकीय स्थल निर्माण	पर्यटकीय क्षेत्रको सम्बर्धन गर्नु	२०८२/८३ - २०८४/८५	३००००	पर्यटकीय क्षेत्रको सम्बर्धन भएको हुने
त्रिवेणीधाम र सिलसिले पार्क पर्यटन विकास योजना ।		२०८२/८३ - २०८४/८५	५०००	
अन्न तथा नगदेवाली (अलैंची, रूद्राक्ष, कफी, सुन्तला, अम्लिसो) उत्पादन प्रवर्द्धन कार्यक्रम	नगदे बालीको उत्पादन अभिवृद्धि गर्नु	२०८२/८३ - २०८४/८५	१००००	नगदे बालीको उत्पादन अभिवृद्धि भएको हुने
५ सैयाको अस्पताल निर्माण सम्पन्न	स्वास्थ्य सेवामा पहुँच अभिवृद्धि गर्नु	२०८२/८३ - २०८४/८५	१७५००	स्वास्थ्य सेवामा पहुँच अभिवृद्धि भएको हुने
जम्मा			३५२५००	

२.९.३ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान हजारमा			बजेट स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२÷८३	१०५७५०	६३४५०	४२३००	१५८६३	६३४५०	२६४३७.५
२०८३÷८४	१४१०००	८४६००	५६४००	२११५०	८४६००	३५२५०
२०८४÷८५	१०५७५०	६३४५०	४२३००	१५८६३	६३४५०	२६४३७.५
जम्मा	३५२५००	२११५००	१४१०००	५२८७५	२११५००	८८१२५

२.१० विषय क्षेत्रगत बॉडफाँट

विषय क्षेत्र	२०८२/८३ को अनुमान			२०८३ / २०८४ को खर्च प्रक्षेपण			२०८४/८५ को खर्च प्रक्षेपण			जम्मा	प्रतिशत
	कुल	चालु	पुजीगत	कुल	चालु	पुजीगत	कुल	चालु	पुजीगत		
गाउँ गौरव	१०५७५०	३१७२५	७४०२५	११६३२५	३४८९८	८१४२८	१२७९५७.५	३८३८७.३	८९५७०.३	३५००३३	२१.२५
कृषि तथा पशुपालन	१५२४०	४५७२	१०६६८	१६७६४	५०२९	११७३५	१८४४०.४	५५३२.१२	१२९०८.३	५०४४४	३.०६
सिंचाई	५४०००	१६२००	३७८००	५९४००	१७८२०	४१५८०	६५३४०	१९६०२	४५७३८	१७८७४०	१०.८५
पर्यटन तथा सस्कृति	२४९००	७४७०	१७४३०	२७३९०	८२१७	१९१७३	३०१२९	९०३८.७	२१०९०.३	८२४१९	५.००
उद्योग, व्यापार, व्यवसाय तथा आपूर्ति	१९५०	५८५	१३६५	२१४५	६४४	१५०२	२३५९.५	७०७.८५	१६५१.६५	६४५५	०.३९
सहकारी तथा वित्तिय सेवा	१६७७०	५०३१	११७३९	१८४४७	५५३४	१२९१३	२०२९१.७	६०८७.५१	१४२०४.२	५५५०९	३.३७
श्रम तथा रोजगारी	४५००	१३५०	३१५०	४९५०	१४८५	३४६५	५४४५	१६३३.५	३८११.५	१४८९५	०.९०
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि	३२१००	९६३०	२२४७०	३५३१०	१०५९३	२४७१७	३८८४१	११६५२.३	२७१८८.७	१०६२५१	६.४५
स्वास्थ्य तथा पोषण	२३४००	७०२०	१६३८०	२५७४०	७७२२	१८०१८	२८३१४	८४९४.२	१९८१९.८	७७४५४	४.७०
खानेपानी तथा सरसफाइ	१५०००	४५००	१०५००	१६५००	४९५०	११५५०	१८१५०	५४४५	१२७०५	४९६५०	३.०१
महिला तथा लक्षित वर्ग	५१३०	१५३९	३५९१	५६४३	१६९३	३९५०	६२०७.३	१८६२.१९	४३४५.११	१६९८०	१.०३
युवा तथा खेलकुद	२१००	६३०	१४७०	२३१०	६९३	१६१७	२५४१	७६२.३	१७७८.७	६९५१	०.४२
वस्ती विकास, आवास, सार्वजनिक निर्माण	३६६००	१०९८०	२५६२०	४०२६०	१२०७८	२८१८२	४४२८६	१३२८५.८	३१०००.२	१२११४६	७.३६
सडक तथा यातायात	१०५४५०	३१६३५	७३८१५	११५९९५	३४७९९	८११९७	१२७५९४.५	३८२७८.४	८९३१६.२	३४९०४०	२१.१९

विद्युत तथा वैकल्पिक उर्जा	१५०००	४५००	१०५००	१६५००	४९५०	११५५०	१८१५०	५४४५	१२७०५	४९६५०	३.०१
सूचना, सञ्चार तथा प्रविधि	१६५०	४९५	११५५	१८१५	५४५	१२७१	१९९६.५	५९८.९५	१३९७.५५	५४६२	०.३३
वन जैविक विविधता हरियाली	७५०	२२५	५२५	८२५	२४८	५७८	९०७.५	२७२.२५	६३५.२५	२४८३	०.१५
भू संरक्षण तथा जलाधार	१६८००	५०४०	११७६०	१८४८०	५५४४	१२९३६	२०३२८	६०९८.४	१४२२९.६	५५६०८	३.३८
वातावरण स्वच्छता	३३००	९९०	२३१०	३६३०	१०८९	२५४१	३९९३	११९७.९	२७९५.१	१०९२३	०.६६
विपद् व्यवस्थापन तथा जलवायु परिवर्तन अनुकूलता	९०००	२७००	६३००	९९००	२९७०	६९३०	१०८९०	३२६७	७६२३	२९७९०	१.८१
नीति, कानून न्याय र सुशासन	१९५०	५८५	१३६५	२१४५	६४४	१५०२	२३५९.५	७०७.८५	१६५१.६५	६४५५	०.३९
संगठन, मानव संसाधन र क्षमता विकास	२१००	६३०	१४७०	२३१०	६९३	१६१७	२५४१	७६२.३	१७७८.७	६९५१	०.४२
स्रोत परिचालन	६००	१८०	४२०	६६०	१९८	४६२	७२६	२१७.८	५०८.२	१९८६	०.१२
योजना व्यवस्थापन	३५६७.९	१०७०	२४९८	३९२४.७	११७७	२७४७	४३१७.१५९	१२९५.१५	३०२२.०१	११८१०	०.७२
जम्मा	४९७६०८	१४९२८२	३४८३२६	५४७३६९	१६४२११	३८३१५८	६०२१०५.६	१८०६३२	४२१४७४	१६४७०८२	

२.११ मध्यम कालिन खर्च संरचनाको प्रारूप

सभापोखरी गाउँपालिकाको आ.व. २०८२/८३ देखि २०८४/८५ सम्मको मध्यकालीन खर्च संरचनाले आफ्नो समग्र बजेटको ठूलो हिस्सा भौतिक पूर्वाधार र दीर्घकालीन विकास परियोजनाहरूमा केन्द्रित गरेको छ। कुल अनुमानित खर्च रु. १ अर्ब ६४ करोड ७० लाख ८२ हजारमा करिब ७० प्रतिशत पुँजीगत खर्च र ३० प्रतिशत चालु खर्चमा छुट्याइएको छ। चालु खर्च तलब, सेवा प्रवाह र सामान्य प्रशासनका लागि प्रयोग हुने गर्दा, पुँजीगत खर्च विकास निर्माणका लागि खर्च गरिन्छ। यो अनुपातले पालिकाको योजना प्राथमिकता पूर्वाधार विकासमा रहेको स्पष्ट देखाउँछ।

सबैभन्दा बढी बजेट 'गाउँ गौरवका आयोजनामा छुट्याइएको छ, जुन कुल बजेटको २१.२५ प्रतिशत हो। दोस्रो सबैभन्दा ठूलो क्षेत्र 'सडक तथा यातायातमा रु. ३४ करोड ९० लाख ४० हजार छुट्याइएको छ, जुन ग्रामीण पहुँच सुधार, बजारिकरण, र आवागमन सहजता वृद्धि गर्ने उद्देश्यका लागि हो।

त्यसपछि 'सिंचाइ' (१०.८५%), 'वस्ती विकास, आवास तथा सार्वजनिक निर्माण' (७.३६%) र 'शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि' (६.४५%) क्षेत्रहरूमा महत्वपूर्ण बजेट विनियोजन गरिएको छ। सिंचाइमा लगानीले कृषि उत्पादन बढाउने सम्भावना हुन्छ भने वस्ती र सार्वजनिक निर्माणले जनजीवन सहज बनाउने अपेक्षा गरिएको छ। शिक्षा क्षेत्रमा लगानीले दीर्घकालीन मानव पूँजी विकास गर्ने रणनीतिक सोच देखिन्छ।

मध्यम प्राथमिकतामा रहेका क्षेत्रहरूमा 'स्वास्थ्य तथा पोषण, पर्यटन तथा संस्कृति', 'खानेपानी तथा सरसफाइ', 'कृषि तथा पशुपालन', र 'ऊर्जा' छन्, जसले जनताको जीवनस्तरमा प्रत्यक्ष प्रभाव पार्ने सेवा र उत्पादनमूलक क्षेत्रहरू प्रतिनिधित्व गर्छन्। यी क्षेत्रहरूलाई समुचित बजेट प्रदान गरिए तापनि भविष्यमा अझ बढाउन सकिने सम्भावना रहन्छ।

यता, 'सूचना प्रविधि', 'वातावरण', 'वन तथा जैविक विविधता', 'स्रोत परिचालन', 'नीति तथा सुशासन' जस्ता क्षेत्रहरूमा निकै कम बजेट छुट्याइएको छ। यद्यपि यी क्षेत्रहरू सिधै देखिने नभए पनि दीर्घकालीन प्रभाव पार्ने र दिगो विकासका लागि आवश्यक पक्ष हुन्। विशेषगरी वातावरणीय संरक्षण, जलवायु अनुकूलता, र सुशासनका पक्षमा अझ बढी ध्यान दिनुपर्ने देखिन्छ।

समग्रमा हेर्दा, सभापोखरी गाउँपालिकाको खर्च संरचनाले दीर्घकालीन भौतिक पूर्वाधार निर्माण, स्थानीय पहिचानको विकास, र सेवा प्रवाहको विस्तारमा केन्द्रित रहेको देखिन्छ। तर, दिगोपनाको दृष्टिकोणले वातावरण, सूचना प्रविधि, र संस्थागत सुधार जस्ता क्षेत्रहरूमा सुधार आवश्यक छ। साथै, खर्चको प्रभावकारी कार्यान्वयन, अनुगमन प्रणाली र स्थानीय सहभागिता सुनिश्चित गर्ने व्यवस्था पनि सँगसँगै हुन जरुरी छ, जसले लगानीको वास्तविक प्रभाव जनस्तरमा देखाउन सहयोग पुऱ्याउँछ।

परिच्छेद ४: आर्थिक क्षेत्र

आर्थिक विकास विना मानव विकास र समृद्धि हाँसिल हुन सक्दैन । यस क्षेत्र अन्तर्गत कृषि तथा पशुपन्छी विकास, पर्यटन, प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन, उद्योग, व्यापार र व्यवसाय, आपूर्ति, बैंक, वित्तीय संस्था र सहकारी क्षेत्र आदि उपक्षेत्रहरू पर्दछन् जसको व्याख्या तलको उपखण्डहरूमा गरिएको छः

४.१ कृषि

४.१.१ पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानका अधिकार सूची, कृषि क्षेत्रको समग्र विकासका लक्ष्यलाई मार्गदर्शनको रूपमा लिइएको छ । उक्त रणनीतिले कृषि विकास रणनीति (सन् २०१५ -२०३५) र दिगो विकास लक्ष्यलाई मार्गदर्शनको रूपमा लिइएको छ । उक्त रणनीतिले कृषि तथा पशुपन्छीजन्य उत्पादनको व्यावसायिकरण, यान्त्रिकरण र विविधिकरण गरी यस क्षेत्रलाई प्रतिस्पर्धी बनाउन जोड दिएको छ । विशेषतः कृषि क्षेत्रको औद्योगीकरणका माध्यमबाट थप रोजगारी सिर्जना गरी आय आर्जन, गरिबी निवारण तथा आयात व्यवस्थापनलाई समेत सम्बोधन गर्न संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको लगानीलाई कृषि क्षेत्रको समग्र विकासमा परिचालन गर्न आवश्यक छ । कृषि भूमिको समुचित उपयोग सुनिश्चित गर्न भूमि वर्गीकरण गरी भू-उपयोग योजना तर्जुमा गर्न अपिहार्य देखिन्छ ।

यस गाउँपालिका कृषिमा निर्भर जनसंख्या लगभग ८० प्रतिशत रहेको र यस गाउँपालिकामा जल, जङ्गल, जडिवुटीको भण्डार रहेको छ । पालिका क्षेत्र भरि वडा नं. १ देखि ६ सम्म उर्बर पहाडी खोंच, मध्यपहाड र उच्च पहाडी कृषि भूमिमा राम्रो उत्पादन र उत्पादकत्व रहेको छ । तरकारी खेती (विशेष गरी स्कुस, आलु, फर्सी, लौका, घिरौला, टमाटर, फुलकोभी, बन्दाकोभी, सिमी, टुसा, कुरिलो, रायो, मूला, पालुङगो) लगायतको राम्रो उत्पादन देखिएको छ साथै आलु खेतीबाट आलु उत्पादन गरेर खाद्यन्न (संकट) पनि उपयोग गर्न सकिने देखिन्छ । सभापोखरी गाउँपालिका क्षेत्र भित्र १६८ वटा कृषि फर्महरूको दर्ता भएको पाईए तापनि व्यवसायिक कृषि फर्म अत्यन्तै न्युन रहेको छ । गाउँपालिकामा रहेका केहि व्यवसायिक कृषि फर्महरूमा के एण्ड एस अलैंची तथा पशुपालन बहुउद्देश्य कृषि फर्म, थुलुङ कृषि तथा पशुपंक्षी फलफुल अलैंची फर्म, खिलिङ कृषि फर्म, मादेन कृषि नर्सरी तथा पशुपालन फर्म, कोराङ्गी कृषि नर्सरी फर्म, लेकाली भेडा फर्म थाङ्ने कृषि तथा पशुपालन बहुउद्देश्य फर्म आदि रहेका छन् ।

बेमौसमी खेती अन्तर्गत टमाटर खेती, वडा नं. २ र वडा नं. ६ का केही समूह र तरकारी फर्मले टमाटर बन्दाकोभी सिमी खेती गरेको छ । टमाटर खेती वर्षा याम र चिसो मौसममा प्लास्टिक घर भित्र राम्रो भएको, टमाटरको बजारमा माग राम्रो रहेको, टमाटर खेती गर्ने किसानको राम्रो आयआर्जन भएको छ । खाद्यन्न वालीमा धान, मकै, कोदो रहेका छन् । धान तल्लो भाग र पहाडी खोंचमा राम्रो उत्पादन भएको छ । बहुवर्षीय वालीमा सुन्तला, कफी रहेका छन् । सुन्तला खेतीका लागि वडा नं. २, ३, ४, ६ र १ वडा र कफीको लागि पनि वडा नं. १, २, ३, ४, ६ उपयुक्त छन् ।

४.१.२ समस्या तथा चुनौती

समस्या

कृषि प्रणाली परम्परागत र निर्वाहमूखी रहेको, मध्य पहाडी क्षेत्रमा सिंचाई सुविधा पर्याप्त नभएको, उन्नत मल, बीउको अभाव हुनु, राम्रो गुणस्तरीय प्लास्टिक टनेलको अभाव हुनु, विभिन्न वालीमा किरा र रोगको समस्या

हुनु; (जस्तै, आलु खेती गर्दा रातो कमिला र पुतली किराको समस्या हुनु साथै डढुवा रोगको समस्या हुनु र टमाटरको रोग - डढुवा व्याक्टेरियन रोग, किरा (leaf miner) हुनु), माटोमा खाद्यतत्त्वको कमी र रोग, किराले ग्रसित अलैंची बगान र पूरा बगानमा अलैंची मरेको अवस्था हुनु, धान, मकै, कोदो खेती भन्दा अलैंची वा अरु नगदेवालीमा बढी चासो कृषकहरूमा हुनु, धानको उत्पादन क्षेत्र र उत्पादन घट्नु, दक्ष, जागरूक किसानमा जनचेतना र प्राविधिक ज्ञानको कमी हुनु, कलमी (ग्राफ्टिक) विरूवा र प्रविधि कृषकमा कमी हुनु, कफी खेती प्रति कृषकको कम चासो हुनु, सुन्तला, कफी लयायत कृषि बजारको अभाव हुनु, स्थानीय लोकल रूद्राक्ष विरूवाको उपलब्धतामा कमी हुनु, आधुनिक कृषि औजार (pulp machine) कफीको लागि नभएको, खाद्य सुरक्षाको कमी हुनु, न्यून उत्पादकत्व र बढ्दो आयातमुखि संस्कृति हुनु, कृषि उपज सामाग्रीहरूको उचित बजारीकरण नहुनु, युवा लक्षित व्यवसायिक कृषि कार्यक्रम सञ्चालन नहुनु, आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

कृषि भूमिमा खडेरीको चुनौती रहनु, बेमौसमी खेती गर्न वर्षा र चिसोले उत्पादनमा असर गर्नु, उन्नत मल बीउ र प्रविधि कृषक सम्म सहज रूपमा पुग्यो व्यावसायिक तथा जैविक कृषि विकास गर्नु, कृषि क्षेत्रलाई आकर्षक र सम्मानित पेशाको रूपमा विकास गर्नु, बाली विविधिकरण र सङ्कीकरण गर्नु, पकेट क्षेत्र विकास गरी कृषि विकास गर्नु, कृषियोग्य जमिनमा सिंचाईको व्यवस्था गर्नु, बढ्दो आयातमुखी संस्कृतिको न्यूनीकरण गर्नु, भू-उपयोग योजना अनुसार कृषि भूमिको संरक्षण गर्नु, कृषि व्यवसायिकरण र औद्योगिकरण गर्नु, गरीब परिवारलाई खाद्यको व्यवस्था गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

४.१.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

गाउँपालिकाको अधिकांश भू-भाग कृषि उत्पादनको हिसाबले उपयुक्त हुनाले कृषि क्षेत्रको उत्पादन तथा उत्पादकत्व बढाउन सकिने, यस क्षेत्रमा कृषि प्रणाली परम्परागत र निर्वाहमुखी रहेको भएतापनि कृषिलाई आधुनिकीकरण गरी वैज्ञानिक खेती प्रणालीको विकास गर्न सकिने, कृषि पकेट क्षेत्रको विकास गरी आर्थिक अवस्थामा सुधार ल्याउन सकिने, मौसमी तथा बेमौसमी तरकारी खेती, नगदेवाली खेती (अलैंची, कफी, रूद्राक्ष, आलु, सुन्तला, जडिबुटी) विस्तार गरी कृषकहरूको जीवनस्तरमा सुधार गर्न सकिने, कृषि तथा वन पैदावारमा आधारित कच्चा पदार्थबाट सञ्चालन हुन सक्ने लघु तथा घरेलु उद्योगहरूको स्थापना गर्न सकिने, स्थानीय उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि गरी खाद्यान्न आत्मनिर्भर हुन सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

कृषिको विकास र विस्तार गरी अन्य स्थानहरूमा बिक्री गर्न सकिने, कृषिजन्य कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगहरू सञ्चालन मार्फत रोजगारीको अवसर सिर्जना गर्न सकिने, कृषिको लागि सिंचाईका श्रोतहरू उपलब्ध भएको, फलफूल, तरकारी खेतीको विकास र विस्तार गरी कृषिको आय आर्जन बढाउन सकिने, बेमौसमी तरकारी खेती गरी कृषकहरू लाभान्वित हुन सक्ने, युवाहरूलाई व्यवसायिक खेती, उच्च मूल्य उत्पादनमा आकर्षित गरी स्वरोजगार प्रदान गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

४.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

निर्वाहमुखी कृषि प्रणालीलाई व्यवसायिक कृषिमा रूपान्तरण गर्दै आम्दानी वृद्धि गर्ने ।

उद्देश्य

- कृषि क्षेत्रमा विविधिकरण, यान्त्रीकरण र आधुनिकीकरण गरी उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि गर्नु ।
- व्यवसायीकरण तर्फ क्षमता विकास गरी कृषि व्यापार बढाउँदै जीवनस्तरमा सुधार गर्नु ।

४.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उत्पादन	केजी	५६०	५६५	५७०	५८०	५९०
आफ्नो आयको दुई तिहाइ भन्दा बढी खानामा खर्च गर्ने जनसंख्याको	प्रतिशत	२५	२५	३०	३५	४०
सानास्तरका खाद्य उत्पादकहरूको औसत आय	रु हजार	७०	७२	७५	७७	८०
कृषि क्षेत्रमा संलग्न समूह र सहकारी	संख्या	७०	७२	८०	८५	९०
कृषिमा आश्रित परिवार (प्रतिशत)	प्रतिशत	७५	७२	७०	६८	६५
कुल कृषिभूमि मध्ये खेति गरिएको भूमि	प्रतिशत	११.८	१२	१३	१५	१८
स्थानीय उत्पादनले पूरा गर्ने तरकारी तथा कृषि उपजहरूको माग	प्रतिशत	३०	३५	४५	५५	६५
खाद्यान्नबालीको औसत उत्पादकत्व (प्रति हेक्टर)	मे.टन	२	२.१	२.२	२.३	२.५
कुल तरकारी उत्पादन (प्रति हेक्टर)	मे.टन	६	८	१०	१२	१४
नगदे बालीको औषत उत्पादकत्व (प्रति हेक्टर)	मे.टन	१.५	२	२.५	३	३.५
फलफूलबालीको औषत उत्पादकत्व (प्रति हेक्टर)	मे.टन	६	६	७	९	१२

४.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र/कार्यक्रम/आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षित नतिजा
१	आलुको विउ वितरण	आलु तरकारीमा आत्मनिर्भर	२०७९-२०८२	२४००	आलुको उत्पादन बढेको तर आत्मनिर्भर हुन नसकेको
२	सुन्तला खेती विस्तार कार्यक्रम	ग्रामिण क्षेत्रको आयमा बृद्धि	२०७९-२०८२	३३००	४५,००० विरुवा पालिका भित्र उत्पादन लागि तयार हुन लागेको

क्र.सं.	उपक्षेत्र/कार्यक्रम/आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षित नतिजा
३	कफी खेती विस्तार कार्यक्रम	ग्रामिण क्षेत्र कृषकको आयमा बृद्धि	२०८०-२०८२	१६००	२७,००० विरुवा २ बर्ष भित्र उत्पादन दिन सुरु हुने
४	तरकारी खेती कार्यक्रम	मानिसको पोषण स्थिति सुधार	२०७९-२०८२	७००	कृषकहरुले प्लाष्टिक टनेल भित्र तरकारी उत्पादन
५	५०% अनुदानमा मिनिटिलर वितरण	खेती लागि खनजोत गर्न	२०७९-२०८२	२५००	कृषिजन्य उत्पादन बृद्धि

४.१.७ बिषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	१५२४०	९१४४	६०९६	२२८६	९१४४	३८१०
२०८३/८४	२०३२०	१२१९२	८१२८	३०४८	१२१९२	५०८०
२०८४/८५	१५२४०	९१४४	६०९६	२२८६	९१४४	३८१०
जम्मा	५०८००	३०४८०	२०३२०	७६२०	३०४८०	१२७००

४.२ पशुपन्छी

४.२.१ पृष्ठभूमि

यस गाउँपालिका क्षेत्र भित्र पशुपालन व्यवसायका निमित्त जमिन, मौसम तथा वातावरण उचित रहेको छ । हाल यस पालिकामा बाख्रापालन ८००० भन्दा बढी रहेको साथै गाईभैसी पालन, बंगुर पालन, लोकल कुखुरा पालन, माछा पालनमा पनि गाउँवासीहरूको संलग्नता रहेको देखिन्छ । यस पालिकामा पशु उपशाखा, सहकारी/बैंक, कृषि सहकारी, पशु स्वास्थ्य, कृषि विमा, प्राविधिक उपलब्धता भएता पनि उचित व्यवस्थापन भने हुने गरेको छैन । यस गाउँपालिका क्षेत्र भित्र आधुनिक (व्यवसायिक) पशुपालन (फर्म) दर्ता अत्यन्तै कम मात्रामा रहेको पाईन्छ । गाउँपालिकाको वडा नं १ स्थित डके बजारमा २ ओटा, वडा नं. ४ मा गाई, भैसी तथा भेडा फर्महरू सञ्चालित रहेतापनि गाउँपालिका तथा वडा कार्यालयमा भने व्यवसाय दर्ता भएका छैनन् । यसरी नै वडा नं. ६ को सातबिसे तथा खोक्राडमा ३ ओटा व्यवसायिक फर्महरू रहेका छन् । वडा नं. ६ मा तीन ओटा ब्रोइलर फर्म तथा एउटा लेयर्स फर्म चालू हुने क्रममा रहेको छ । यसरी व्यवसायिक पशुपालन सञ्चालन गर्ने कामको थालनी भएतापनि गाउँपालिका तथा वडा कार्यालयसम्म सो को आधिकारिक दर्ता तथा अभिलेख रहन सकेको छैन ।

४.२.२ समस्या तथा चुनौती

समस्या

चरन क्षेत्रको समस्या तथा विकासे, उन्नत जातको घाँस नभएको, पशुलाई आहाराको कमि, जनचेतनाको कमि, आधुनिक खोर/गोठ निर्माणको कमि, उत्पादित वस्तुको उचित मूल्य नभएको, घाँसमा संकलन केन्द्र तथा बजार नभएको, भकारो सुधार नभएको, घाँसमा आधारित पशुपालन, दुग्ध संकलन केन्द्र र बजार नभएको, स्वास्थ्य चल्लाको कमि, मौरीपालन परम्परागत कम वा नगन्य मात्रामा भएको, मौरीपालन सम्बन्धि प्राविधिक ज्ञानको कमी, मौरीपालनको क्षेत्र पहिचान नभएको, पशु स्वास्थ्य प्रत्यक्ष उपचार नभएको, उन्नत र स्वास्थ्य जातको भुराको कमि, कृषकलाई सहूलियत दरमा कृषि कर्जा, परजिविको सक्रमण, जनचेतनाको कमि, स्वास्थ्य शिविरको आवश्यकता हुनु, PPR, FMD, SWINE FEVER, LSD लगाउन भ्याक्सिनको कमि, असल पशुपालन अभ्यासको कमि, हाल सम्म विमा नभएको तथा पशु बीमा सम्बन्धी जनचेतनाको अभाव हुनु, नक्ष सुधार प्रविधियुक्त नभएको, भौगोलिक विकटता, कृषि तथा पशु प्राविधिक अपुग हुनु, युवा लक्षित व्यवसायिक कृषि कार्यक्रम सञ्चालन नहुनु, परम्परागत पशुपालन तथा स्थानीय स्तरमा पुश पालनको लागि सामग्रीहरू उपलब्ध नहुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

पशुपालनलाई आकर्षक र सम्मानित पेशाको रूपमा विकास गर्नु, पकेट क्षेत्र विकास गरी पशुपालनलाई विकास गर्नु, पशु सम्बद्ध प्राविधिकको उपलब्धता सुनिश्चित गर्नु, पशु सम्बद्ध संस्थागत तथा संरचनागत व्यवस्था गर्नु, स्थानीय सरकार मातहतमा आएको पशु प्रसार सेवालाई व्यवस्थापन र सुदृढीकरण गर्नु, पशु खाद्य व्यवहारमा सुधार गरी स्थानीय उत्पादनको उपभोग प्रवृत्ति बढाउनु, पशुपालनलाई व्यवसायिकरण र औद्योगिकरण गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

४.२.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

यस क्षेत्रमा पशुपन्छी पालन परम्परागत र निर्वाहमूखी रहेको भएतापनि यसलाई आधुनिकीकरण गरी वैज्ञानिक प्रणालीको विकास गर्न सकिने, पशुपन्छी पालनमा आधारित लघु तथा घरेलु उद्योगहरूको स्थापना गर्न सकिने, दुग्ध तथा मासुजन्य उत्पादनको बढ्दो मागलाई बजार व्यवस्थापन गर्न सकिने, पानी, विरूवा, हावा, चरन क्षेत्र आदिको राम्रो स्रोत भएकाले मौरीपालनको राम्रो सम्भावना हुनु, स्थानीय उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि गरी खाद्यान्न आत्मनिर्भर हुन सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

पशुपन्छीको विकास र विस्तार गरी अन्य स्थानहरूमा बिक्री गर्न सकिने, उन्नत जातका पशुपालन गरी वरिपरिका वस्तीहरूमा समेत विस्तार गर्न सकिने, व्यवसायिक पशुपालन, कुखुरा पालन, माछा पालन मार्फत आय आर्जन बढाउन सकिने, पशुपालनको लागि उपयुक्त हावापानी रहेको, युवाहरूलाई उन्नत जातका पशुपालनमा आकर्षित गरी स्वरोजगार प्रदान गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

४.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

प्रतिस्पर्धा, आत्मनिर्भर एवं निर्यातमुखि पशुक्षेत्रलाई रुपान्तरण गर्दै समावेशी र दिगो आर्थिक वृद्धि हाँसिल गर्ने ।

उद्देश्य

- पशु क्षेत्रको उत्पादन तथा उत्पादकत्व वृद्धि गरी आर्थिक तथा पोषण सुरक्षा सुनिचित गर्नु ।
- आधुनिक व्यावसायिकरण तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता विकास गरी पशु क्षेत्रको व्यावसाय सन्तुलन गर्नु ।

४.२.५ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र/कार्यक्रम /आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुल लागत (रु हजारमा)	अपेक्षित नतिजा
१	पशुपन्छी औषधि खरिद	पशुपन्छी को उपचार	१२ महिना	१५००	७५००० पशुपन्छी को उपचार भएको
२	भकारो सुधार	उन्नत गाईभैसी को गोठ सुधार गरि दुध उत्पादन गर्ने	२०८२-२०८५	१५००	१०० वटा निर्माण भएको
३	पशुपन्छी खोप संचालन	पशुपन्छीको रोग नियन्त्रण गर्ने	२०८२-२०८५	१०००	लम्पी — ३००० खोरेत — ३००० पि पि आर -१५००० स्वाइन फिवर — २०००
४	पशु स्वास्थ्य शिविर	पशुपन्छीमा भएका समस्यालाई गाउँ टोल मा गएर सेवा प्रदान गर्ने	२०८२-२०८५	१०००	१००० कृषकहरूले पशु स्वास्थ्य सेवाबाट लाभान्वित हुने

४.२.६ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोतको त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्ग	प्रदेश
२०८२/८३	३२५८०	१९५४८	१३०३२	४८८७	१९५४८	८१४५
२०८३/८४	४३४४०	२६०६४	१७३७६	६५१६	२६०६४	१०८६०
२०८४/८५	३२५८०	१९५४८	१३०३२	४८८७	१९५४८	८१४५
जम्मा	१०८६००	६५१६०	४३४४०	१६२९०	६५१६०	२७१५०

४.३ वित्तीय तथा सहकारी क्षेत्र

४.३.१ पृष्ठभूमि

वित्तीय तथा सहकारी क्षेत्रलाई अर्थतन्त्रको एक महत्वपूर्ण खम्बाको रूपमा लिइन्छ । संविधानले सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रको सहभागिता तथा विकास मार्फत राष्ट्रिय अर्थतन्त्रलाई आत्मनिर्भर, स्वतन्त्र तथा उन्नतिशील बनाउँदै समाजवादउन्मुख स्वतन्त्र र समृद्ध अर्थतन्त्रको विकास गर्ने उद्देश्य लिएको छ ।

गाउँपालिकाको आर्थिक तथा सामाजिक विकासमा यहाँका वित्तीय तथा सहकारी संस्थाको भूमिका महत्वपूर्ण रहेको छ । सहकारी संस्थाले स्थानीय स्तरको बचतलाई गाउँ बाहिर जानबाट रोकी स्थानीय क्षेत्रमा विभिन्न आयमूलक कार्यमा लगानी गरिरहेका छन् । सहकारी संस्था प्रति जनताको अपनत्व बढी र प्रशासनिक झन्झट कमी हुने हुँदा वित्तीय क्षेत्रमा यहाँका जनताको पहुँच समेत बढेको छ । सहकारी संस्थाहरूलाई आवश्यक बजेट तथा तालिमको व्यवस्था, इन्टरनेट तथा विद्युतमा आवश्यक बजेट व्यवस्था गरी सेवाग्राहीलाई सेवा प्रवाह गर्नुपर्ने, ऋणको ब्याज दर सस्तो गरि ऋण लगानी गर्नुपर्ने देखिन्छ ।

सभापोखरी गाउँपालिका भित्र वित्तीय कारोवार गर्ने प्राईम कमर्सियल बैंक लिमिटेड १ वटा लघु वित्तीय संस्था १ वटा र सहकारी संस्था २ वटा रहेका छन् । कृषि सहकारी संस्था १ पवटा स्थापना भएकोछ । कृषि प्रविधि तथा उपकरण, विउ विजन, मल, कृषि औषधी सहज रूपमा उपलब्ध हुन सक्ने सम्भावना रहेको छ । सहकारी मार्फत बचतमा वृद्धि भएको, ऋणको लगानी तथा व्यवस्थापन भएको अवस्था छ । सहकारी मार्फत रोजगारी अवसर सिर्जना गर्ने प्रचुर सम्भावना रहेको छ ।

४.३.२ समस्या तथा चुनौती

समस्या

प्रत्येक वडाहरूमा कम्तीमा एउटा लघुवित्त तथा सहकारी पुग्न नसक्नु, कृषि सहकारी नभएकाले कृषि सामाग्री खरिद गर्न टाढा जानुपर्ने समस्या रहेको, सहकारी संस्था बचतको पहुँच सहज नभएको, कर्जाको उपलब्धता र पहुँचमा कमी हुनु, ऋण लगानीमा ब्याजदर चर्को हुनु, ऋण लिएर उत्पादनशील क्षेत्रमा लगानी नगर्ने अर्को ऋण तिर्ने ऋण लिने गरेको, अधिकतम सहकारी संस्था बचत तथा ऋण परिचालनमा केन्द्रित हुनु, समुहहरूमा संकलित बचतको उचित परिचालन नहुनु, बचत तथा ऋण सहकारीमा वित्तीय जोखिम उच्च रहनु, सहकारी क्षेत्रको संरचनात्मक र संगठनात्मक व्यवस्था अपर्याप्त एवं अप्रभावकारी रहनु, संस्थागत सुशासनको कमी हुनु, सहकारीको प्रवर्द्धनका लागि आवश्यक पर्ने औपचारिक सहकारी शिक्षा, तालिम तथा व्यवस्थित सहकारी सूचना प्रणालीको उपयुक्त विकास नहुनु, समुदायमा वित्तीय चेतनाको कमी हुनु जस्ता समस्याहरू छन् ।

चुनौती

बैंक तथा वित्तीय संस्थामा स्थानीयको पहुँच बढाउन, वित्तीय सेवा तथा सहकारी व्यवस्थापन सम्बन्धी क्षमता विकास गर्न, सहकारी तथा वित्तीय संस्थाको महत्व तथा उपयोगिता सम्बन्धमा जानकारी गराउन, सहकारी तथा वित्तीय संस्थालाई आय आर्जन तथा रोजगारीका अवसरसँग आवद्ध गर्न, सहकारी तथा वित्तीय संस्थाहरूलाई उत्पादन क्षेत्र तर्फ उन्मुख गराउन, सहकारी संस्थाहरूको नियमित नियमन तथा अनुगमन गर्न, अन्तर सहकारी समन्वय गर्न, कर्जा मा सहज पहुँच स्थापना गर्न आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

४.३.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

महिला बचत समुह तथा महिला सहकारीहरूको विकास तथा क्षमता अभिवृद्धि गर्न सकिने, अति विपन्न वर्गमा नियमित बचत गर्ने बानीको विकास गर्न प्रोत्साहन गर्न सकिने, ऋण तथा कर्जा सेवा प्रदान गर्न विभिन्न कृषि तथा महिला समुहहरू सक्रिय रहेका, उद्योग, कलकारखाना, बजार केन्द्र, व्यापारिक कारोबारको विस्तार गर्दै बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूको विकास गर्न सकिने, सहकारीको विकास मार्फत ग्रामीण अर्थतन्त्रको उचित विकास गर्न सकिने, अन्य बैङ्क तथा वित्तीय संस्थाहरूलाई आर्कषण गर्न सकिने, स्थानीय जनताको अग्रसरतामा माइक्रो फाइनेन्स तथा सहकारीहरूको विकास र विस्तार गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

वित्तीय पहुँचको विस्तार हुनु, स-साना बचत परिचालन भई पुँजी निर्माणमा सहयोग पुग्नु, जनतामा सामुदायिक तथा सहयोगी भावनाको विकास हुनु, स्थानीय स्तरमा वित्तीय अन्तरसम्बन्ध कायम हुनु, गाउँपालिकासँगको वित्तीय सहकार्यमा कृषि तथा उद्योग क्षेत्रमा सहूलियत ऋण लगानी हुनु, रोजगारीका अवसरहरू अभिवृद्धि गर्न सकिने, सहकारीहरूलाई एकिकरणका माध्यमबाट थप शक्ति बनाउन, सहकारीलाई गाउँपालिकाले विकासको साझेदारका रूपमा लिनु आदि अवसर हुन् ।

४.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

बचत तथा लगानी अभिवृद्धि गरि उत्पादन, उत्पादकत्व वृद्धि र रोजगारी सिर्जना गर्ने ।

उद्देश्य

- प्रतिस्पर्धात्मक तथा तुलनात्मक लाभका क्षेत्रहरूमा वित्त परिचालन गर्नु ।
 - वित्तीय संस्थाहरूमा सबैको सहज पहुँच स्थापना गरी बचत तथा लगानी अभिवृद्धि गर्नु ।
- बैंक तथा वित्तीय एवं सहकारी मार्फत विपन्न तथा लक्षित वर्गलाई आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्रमा परिचालन गरी ती वर्गको क्षमता विकास गर्नु ।

४.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२ /८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
सहकारीको नेतृत्वमा महिला सहभागिता	संख्या	१	१	१		
वित्तीय सेवामापहुँच	प्रतिशत	८०	८०	८२	८४	८६
सहकारी सस्थाको संख्या	संख्या	२	२	२	२	१
सहकारीमापहुँचभएका घरपरिवार	प्रतिशत	६०	६०	६५	७०	७५

४.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र/कार्यक्रम/आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षित नतिजा
१	वित्तीय सचेतना तथा लेखा व्यवस्थापन तालिम	वित्तीय सचेतना तथा क्षमता अभिवृद्धि गर्नु	२०८२/८३ — २०८४/८५	९००	वित्तीय सचेतना तथा क्षमता अभिवृद्धि भएको हुने
२	क्षमता विकास तथा संस्थागत विकास कार्यक्रम		२०८२/८३ — २०८४/८५	१००००	
३	कृषि सहकारी स्थापना तथा व्यवस्थापन		२०८२/८३ — २०८४/८५	३००००	
४	सहकारी सदस्य सिप विकास तालिम		२०८२/८३ — २०८४/८५	१५०००	

४.३.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पुँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	१६७७०	३३५४	१३४१६	१६७७०	०	०
२०८३/८४	२२३६०	४४७२	१७८८८	२२३६०	०	०
२०८४/८५	१६७७०	३३५४	१३४१६	१६७७०	०	०
जम्मा	५५९००	१११८०	४४७२०	५५९००	०	०

४.४ पर्यटन, संस्कृति तथा सम्पदा

४.४.१ पृष्ठभूमि

पर्यटन क्षेत्र अर्थतन्त्रको विकासका लागि उच्च सम्भावना बोकेको क्षेत्र हो । अद्वितीय प्राकृतिक एवम् साँस्कृतिक सम्पदा र विविधताको कारण यस क्षेत्रमा तुलनात्मक लाभ रहेको छ । खासगरी, हिमाली प्राकृतिक सुन्दरता, महत्त्वपूर्ण धार्मिक पर्यटकीय गन्तव्य तथा मौलिक साँस्कृतिक तथा पुरातात्विक सम्पदा पर्यटन क्षेत्रमा प्रचुर सम्भावना बोकेका क्षेत्रहरू हुन् । यी स्थल र सम्पदाको संरक्षण, प्रवर्द्धन र विविधिकरण गर्दै पर्यटकीयस्थलको रूपमा विकास गरी राष्ट्रिय अर्थतन्त्रको प्रमुख आधारको रूपमा यस क्षेत्रलाई विकसित गर्ने नीति नेपालको संविधानले अङ्गिकार गरेको छ । पर्यटन प्रवर्द्धनको माध्यमबाट रोजगारीका अवसर वृद्धि, गरिबी निवारण र जनताको जीवनस्तरमा सुधार ल्याई आर्थिक समृद्धिको लक्ष्य हासिल गर्न यस क्षेत्रको महत्त्वपूर्ण योगदान रहने भएकोले पर्यटन अर्थतन्त्रको प्रमुख सम्बाहक पनि हो ।

बन्दुके बौला थुम्का (वडा १), हरेलो डाँडा (वडा २), रानी ढुङ्गा (वडा ३), गोरूजुरे (वडा ४), धार्मिक स्थल सभापोखरी (वडा ५), गडी डाँडा, दुम्सीकुर र त्रिवेणीधाम (वडा ६) को समग्र ठाउँको संयुक्त रूपमा सम्भावित पर्यटकीय स्थलहरू रहेता पनि पर्यटन विकास लक्षित पर्याप्त कार्य हुन सकेको छैन । गाउँपालिकामा अझ बढी पर्यटक भित्र्याई बढीभन्दा बढी मानिसहरूलाई पर्यटन व्यवसायमा संलग्न गराई गाउँपालिकाको आर्थिक उन्नति गर्न सकिने देखिन्छ । यसको लागि गाउँपालिका क्षेत्र भित्रका अन्य पर्यटकीय सम्भावनाका क्षेत्रहरूको पहिचान गर्ने, पर्यटकीय स्थलहरूसम्म पुग्नको लागि पहुँच मार्गको विस्तार गर्ने र त्यस्ता पर्यटकीय क्षेत्रहरूमा होमस्टे सञ्चालनको लागि आवश्यक पूर्वाधार विकास गर्दै जानुपर्ने देखिन्छ । गाउँपालिकाको समृद्धिको लागि पर्यटन एक प्रमुख माध्यम हुन सक्दछ ।

४.४.२ समस्या र चुनौती

समस्या

पर्यटकीय क्षेत्रमा गर्नुपर्ने नीतिगत कुराको ज्ञान नभएको, आन्तरिक तथा बाहिरी पर्यटकहरू आउँदा उनीहरूलाई गर्नुपर्ने स्वागत सत्कारको ज्ञानको कमी हुनु, सम्भावित रमणीय ठाउँ, भूगोल र अमूल्य वस्तुको पहिचान गरी संरक्षण गर्न नसक्नु, पर्यटकीय क्षेत्रमा लगानी गर्ने तथा ध्यान पुग्न नसक्नु, पालिकामा पर्यटकहरूका लागि आवश्यक पर्ने ठाउँ वस्तुको पहिचान गर्न नसक्नु, पर्यटन प्रवर्द्धन तथा प्रचार प्रसारको कमी हुनु, पर्यटकीय क्षेत्रहरूको विस्तृत गुरुयोजना तथा डिपिआर तयार नहुनु, पर्यटन क्षेत्रको विकासमा उद्यमशिलतालाई जोड्न नसकिनु, पर्यटकीय स्थलहरूमा यातायात सुविधाको अभाव हुनु, पर्यटन पूर्वाधारको कमी हुनु, पर्यटकीय उपजको विविधिकरण, पर्यटन क्षेत्रको अपेक्षित रूपमा विकास र विस्तार हुनु नसक्नु, पर्यटकीय पूर्वाधारका कार्यक्रमलाई विशेष प्राथमिकता नदिनु, पर्यटन सम्बन्धी स्थानीय नीतिगत तथा कानूनी व्यवस्थाको कमी हुनु, पर्यटन सूचना केन्द्रको अभाव हुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

स्थानीय संस्कृतिलाई पर्यटन विकाससँग आवद्ध गर्नु, पर्यटकीय उपजहरूको विविधिकरण गर्नु र गन्तव्यहरूको विकास गर्नु, पर्यटनमा नीजि क्षेत्रको लगानी आकर्षित गर्नु, पर्यटकीय पूर्वाधारको विकास गर्न, पर्यटकहरू यस क्षेत्रमा आउँदा बस्ने, खाने, हेर्ने र लाने वस्तुहरूको अव्यवस्थित वातावरण साथ सुरक्षाको चुनौती हुनु, पर्यटकीय

पूर्वाधार विकासमा निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षित गर्नु, पर्यटकीय सेवा सुविधाको गुणस्तर वृद्धि गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

४.४.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

सभापोखरी गाउँपालिका प्राकृतिक हिसाबले प्रचुर सम्भना भएको हुँदा यहाँ पर्यटकीय हिसाबले सबै क्षेत्रमा सरोकार राख्ने आन्तरिक एवं बाह्य पर्यटकहरू यस पालिकाको विभिन्न भूगोलहरूमा अवतरण गराई यहाँ आय आर्जनको बाटो खोल्न सकिने सम्भावित क्षेत्र रहेको, धार्मिक, ऐतिहासिक, साँस्कृतिक एवं प्राकृतिक पर्यटकीय धरोहरहरू जस्तै गडीडाँडा, गोरूजुरे, बन्दुके, दुम्सिकुर देउराली, देवलथान, गुफा, खोलानाला, डाँडाकाँडा, रमणीय वनस्पति, छाँगो, झरनाहरू, त्रिवेणी बजार, गाउँवस्ती, बहुल जातीय भेषभूषा, नाच गान बाजागाजा आदिले बाह्य तथा आन्तरिक पर्यटन आकर्षण गर्न सकिने, होम स्टे, ग्रामीण पर्यटनको सम्भावना हुनु, पर्यटन बजारको सम्भावना रहेको, पदमार्ग निर्माण लगायत पर्यटन पूर्वाधारहरू विकास गर्ने सकिने, पर्यटकीय क्षेत्रहरूको प्रचार प्रसार गरी पर्यटन प्रवर्द्धन गर्न सकिने, पर्यटकीय तथा धार्मिक स्थलहरूको फोहरमैला व्यवस्थापनको लागि सरकारी, गैरसरकारी संघ संस्थाहरूसँगको सहकार्य गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

सभापोखरी धार्मिक एवं पर्यटकीय क्षेत्र संरक्षण समितिद्वारा सभापोखरीको विकास, संरक्षण, प्रचारप्रसार तथा धार्मिक पर्यटकहरूलाई आवतजावत, बास, पूजापाठमा सहज भएकाले पर्यटकको संख्यामा वृद्धि भएको, खनीज, जडीबुटि, कृषि आदि प्रचुर मात्रामा हुनु, धार्मिक पर्यटक, कृषि पर्यटक अन्य अवलोकन गर्न सकिने सम्भावित क्षेत्रहरू हुनु, स्थानीय कला संस्कृति, रीतिरिवाजको प्रचार प्रसार गरी पर्यटक आवागमन बढाउन सकिने, धार्मिक, साँस्कृतिक, प्राकृतिक सम्पदाहरूको उपयोग गरी पर्यटकीय गतिविधि बढाउन सकिने, कृषि पर्यटनको सम्भाव्यता अध्ययन गर्न सकिने, पर्यटन विकासमा निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षित गर्न सकिने, पर्यटन गुरुर्योजनाले निर्दिष्ट गरे बमोजिम पर्यटन पूर्वाधारहरू विकास गर्ने सकिने, पर्यटन क्षेत्रमा सहयोग आदान प्रदान गर्न आन्तरिक तथा बाह्य देशका स्थानीय सरकारसँग भगिनी सम्बन्ध स्थापनाका लागि पहल गर्न सकिने, पर्यटकको लागि सम्बद्ध संघ संस्थाहरूसँग समन्वय गरी आवश्यक सुरक्षाको व्यवस्था गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

४.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

सभापोखरी गाउँपालिका भित्र रहेको पवित्र धार्मिक पर्यटकीय साथै रमणीय स्थलहरूमा भौतिक पूर्वाधार संरचना निर्माण गर्दै प्रचार-प्रसार तथा प्रवर्द्धनद्वारा आर्थिक गतिविधि बढाउने ।

उद्देश्य

- गाउँपालिका भित्र रहेका महत्वपूर्ण क्षेत्रहरू जस्तै कृषि, धार्मिक, साँस्कृतिक, भौगोलिक रमणीय कुराहरूको दृश्य अवलोकन, भ्रमण गर्न आन्तरिक र बाह्य पर्यटकहरू अवतरण गराई रोजगारी श्रृजना गरी आय स्रोत बढाउनु ।
- आन्तरिक र बाह्य पर्यटक गरी ५ वर्ष भित्रमा ५ लाख पर्यटक भित्र्याउनु ।

४.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यम कालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
व्यवस्थित र स्तरीय ऐतिहासिक, धार्मिक पर्यटकीय स्थल तथा सम्पदा	संख्या	१	१	१	१	१
व्यवस्थित पार्कःउद्यान, पिकनिक	संख्या	०	०	१	०	०
बार्षिक वाह्य तथा आन्तरिक पर्यटक आगमन संख्या(हजारमा)	संख्या	१	१	१.२५	१.५	२
स्तरीय होटलको संख्या	संख्या	१	१	०	०	०
होम स्टे तथा नमुना वस्ती	संख्या	०	०	१	१	१

४.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रःकार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षित नतिजा
१	सभापोखरी धार्मिक मेला व्यवस्थापन	पर्यटकीय स्थलको संरक्षण तथा प्रवर्धन गर्ने	२०८२-२०८५	९००	पर्यटकीय स्थलको संरक्षण तथा प्रवर्धन भएको हुने
२	सभापोखरी पद मार्ग निर्माण		२०८२-२०८५	३००००	
३	बन्दुके धार्मिक तथा पिकनिक पार्क		२०८२-२०८५	६०००	
४	केलांड साकेला पार्क		२०८२-२०८५	१०००	
५	होम स्टे तथा नमुना बस्ति आयोजना		२०८२-२०८५	३०००	

४.४.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश

२०८२/८३	२४९००	४९८०	१९९२०	२४९०	१७४३०	४९८०
२०८३/८४	३३२००	६६४०	२६५६०	३३२०	२३२४०	६६४०
२०८४/८५	२४९००	४९८०	१९९२०	२४९०	१७४३०	४९८०
जम्मा	८३०००	१६६००	६६४००	८३००	५८१००	१६६००

४.५ उद्योग, व्यापार, व्यवसाय तथा आपूर्ति

४.५.१ पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले अर्थतन्त्रको विकासका लागि उद्योगधन्दा र स्रोत- साधनको संरक्षण र प्रवर्द्धन गरी श्रम, सीप र कच्चा पदार्थमा आधारित स्वदेशी लगानीलाई प्राथमिकता दिने र राष्ट्रिय हित अनुकूल आयात व्यवस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धक क्षेत्रमा वैदेशिक पुँजी तथा प्रविधिको लगानीलाई आकर्षित गर्दै औद्योगिक पूर्वाधार विकासमा प्रोत्साहन र परिचालन गर्ने नीति लिइएको छ । उद्योग, व्यापार र व्यवसाय विकासका लागि स्थानीय श्रम, सीप र कच्चा पदार्थमा आधारित साना उद्योगको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्नुपर्ने हुन्छ । यसैगरी, उद्योगमा नयाँ प्रविधि प्रयोग गरी उत्पादन लागत कम गर्दै उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि र रोजगारिका अवसर सिर्जना गर्नुपर्ने छ । सभापोखरी गाउँपालिकामा लघु, घरेलु तथा साना उद्योगहरू सञ्चालनमा छन् । होटल व्यवसाय, बहुउद्देशीय फर्म, एग्रीकल्चर फर्म, कृषि तथा पशुपालन फर्म, फ्रेस हाउस, वर्कशप, कन्सट्रक्सन तथा निर्माण सेवा, राईस मिल, क्याफे, फुड प्रडक्ट, एग्रो फर्म, टुर्स एण्ड ट्राभल्स, बुटिक, आदि दर्ता भएका छन् । यस गाउँपालिकामा रहेका व्यापार र व्यवसाय दर्ता ज्यादै न्यून रहेको छ । किराना पसल, सप्लायर्स, कम्प्युनिकेशन, रेमिट्यान्स, कोल्ड स्टोर, भाडा पसल, फेन्सी, हार्डवेयर, मदिरा पसल, मिष्ठान भण्डार, एग्रो सेन्टर, काष्ठ सप्लायर्स, कपडा पसल, आदि वाणिज्य कार्यलयमा दर्ता गरी सञ्चालनमा छन् भने केही व्यापार व्यवसाय दर्ता नगरी सञ्चालनमा रहेका छन् । उद्योग, व्यापार र व्यवसायहरू न्यून मात्रामा दर्ता भएको हुनाले गाउँपालिकाको राजस्व कम मात्रामा सङ्कलन भईरहेको छ । तसर्थ पालिकाको आन्तरिक राजस्व सङ्कलनमा वृद्धिको लागि उद्योग, व्यापार र व्यवसाय दर्ता अभियान आयोजना गरी व्यवसायीहरूलाई राजस्वको दायरामा ल्याउन पहल गर्न अत्यन्त जरुरी देखिन्छ । पालिकाको सबल पक्षको रूपमा क्रसर उद्योग मिल, रुद्राक्ष माला, राडीपाखी, वेत वास उद्योग, खनिज उद्योग, फलाम, तामा, चुना उद्योगहरू सञ्चालनमा रहेका छन् ।

४.५.२ समस्या र चुनौती

समस्या

लगानी गर्न सहज वातावरण निर्माण गरी लगानी कर्ताहरू भित्र्याउन नसक्नु, लगानी कर्ताहरूलाई शान्ति सुरक्षाको उचित वातावरण श्रृजना गर्न नसक्नु, उद्योग संचालन गर्दा कानूनी अध्यन, नीति, विधि सहज तरिकाले गर्न झन्जटिलो हुनु, उद्योग संचालन गर्न आवश्यक पर्ने कच्चा पदार्थ उत्पादन गर्न कृषकलाई उचित, तालिम, ज्ञानका कुरा दिलाई उत्पादनमा विकास गर्न नसक्नु, उद्योग मार्फत उत्पादित वस्तुलाई बजारीकरण गर्दै व्यापार गर्नको लागि ढुवानीका साधन चल्न सक्ने बाटोको अवस्था कमजोर भएकाले समयमा पुर्याई विक्री गर्न नसकिने विद्यमान अवस्था रहेको, धेरै उद्योगहरू दर्ता/ नीतिगत दायरामा नआउनु, गाउँपालिकामा उद्योग र उद्यमशिलताको कमी हुनु, औद्योगिक पूर्वाधारको कमी हुनु, औद्योगिक ग्राम स्थापना नहुनु, व्यावसायिक दक्षताको

अभाव हुनु, स्तरीय सडक यातायात, पूर्वाधार तथा बजारको व्यवस्था नहुनु, साना उद्यमी र व्यवसायीहरूको संरक्षण नहुनु, ठूला उद्योगहरू स्थापनाका लागि बाहिरी लगानी आउन नसक्नु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

आवश्यक उद्योग संचालन गर्न आवश्यक कच्चा पदार्थ संकलन गरी ल्याउन चुनौती हुनु, उद्योग संचालन गर्नको लागि औद्योगिक क्षेत्रको पहिचान गरी छुट्याउनु, बाहिरी खाद्य सामान आयात बढ्नु र निर्यात घट्नु, विश्व आर्थिक मन्दिले लगानी गर्न नसक्नु, उद्यमशिलता विकास गर्नु, स्थानीय उत्पादनको बजारीकरण गर्नु, यथोचित तथ्याङ्कको अभाव हुनु, कृषि, पशु विकास र जडिबुटीको व्यावसायिक उत्पादन गर्नु, सडक, विद्युत आदि भौतिक पूर्वाधारको पहुँच वृद्धि गर्नु, बाह्य लगानी वातावरणको निर्माण गर्नु, प्रतिस्पर्धात्मक क्षमताको पहिचान र विकास गर्नु, युवा जनशक्तिलाई उद्यमशिलता तर्फ आकर्षित गराउनु, व्यापार व्यवसायको आकार सानो हुनु, साना उद्यमी र व्यवसायीहरूको संरक्षण गर्नु, दुर्लभ र महत्वपूर्ण जडिबुटीहरूको अव्यवस्थित सङ्कलन र प्रशोधन बिना निकासी हुनु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

४.५.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

सभापोखरी गाँपालिका भित्र विभिन्न किसिमका उद्योग खोल्न सकिने सम्भावना रहेको (जस्तै, जडिबुटी प्रशोधन उद्योग, अर्गेली नेपाली कागज उद्योग, काष्ठ उद्योग, मिनरल वाटर उद्योग, फुल फुलद्वारा जुस उद्योग, मौरीबाट उत्पादित मह प्रशोधित, प्याकेजिङ्ग उद्योग, वेत वास उद्योग, दुग्ध संकलन डेरी उद्योग), उद्योग, उर्जा, पर्यटन आदि क्षेत्रमा बाह्य लगानीको सम्भावना रहनु, उद्यमशिलतालाई प्रोत्साहन वा बढावा दिन सकिने, उद्योग ग्राम स्थापना गर्न सकिने, स्थानीय स्तरबाट हुने निर्यातमा आधारित लघु घरेलु तथा साना उद्योग स्थापना र सञ्चालन गर्न सकिने, सानो स्केलमा हुने उत्पादनको एकीकृत बजार प्रवर्द्धन गर्न सकिने, एक स्थानीय तह एक वाणिज्य बैंकको नीति रहनु, वैदेशिक रोजगारबाट फर्किएका सीपयुक्त युवाको विप्रेषण आय, सीप र उद्यमशिलताको प्रयोग गर्न सकिने सम्भावना रहनु आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

स्थानीय कला संस्कृति, रीतिरिवाजको प्रचार प्रसार गरी पर्यटक आवागमन बढाउन सकिने, एक गाउँपालिका एक औद्योगिक ग्रामको केन्द्रिय नीति रहनु, लघु तथा घरेलु उद्योग दर्ता र नियमनको अधिकार स्थानीय तहमा रहनु, लघु तथा घरेलु उद्योग मार्फत स्थानीय रोजगारी सिर्जना गर्न सकिने, साना व्यवसाय र उद्यमीहरूलाई सहज नवीकरण र कर छुटको व्यवस्था गरी करको दायरामा ल्याई राजस्व सङ्कलनमा वृद्धि गर्न सकिने, विद्युतको राष्ट्रिय प्रसारण सबै स्थानीय तहमा पुर्‍याउने राष्ट्रिय नीति रहनु र गाउँपालिका प्राथमिकतामा पर्नु आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

४.५.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

लघु उद्यम तथा साना उद्योगको विकास र विस्तारद्वारा आन्तरिक राजश्वमा उद्योग व्यवसायको योगदान बढाउने उद्देश्य

➤ उद्योग व्यवसायको उत्पादन एवम् प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता वृद्धि गरि आयात व्यवस्थापन गर्नु ।

- स्थानीय साधन स्रोत सीपको उपयोग गर्दै उद्योग व्यवसायको उत्पादन वृद्धि गरि आन्तरिक राजश्वमा उद्योग क्षेत्रको योगदान बढाउनु ।
- लगानीमैत्री वातावरणको सिर्जना गरी बजार व्यवस्थापन गर्नु ।

४.५.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१	२०८१/८२	मध्यम कालीन लक्ष्य		
		१ सम्मको उपलब्धि	२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
उद्योग व्यवसाय क्षेत्रमा रोजगार व्यक्ति	जना	५०	२०	२०	२५	२६
गाउँपालिकामा दर्ता भएका उद्योग व्यवसायहरू	संख्या	१००	१२०	१२५	१२७	१३०
व्यवसाय करबाट संकलित राजस्व	रु. हजारमा	२००	२००	२२०	२२५	२३०
सञ्चालित औद्योगिक तथा व्यापार मेला	पटक	१	१	१	१	१
व्यवसायिक क्षेत्रको वार्षिक उत्पादन (कुल मूल्य अभिवृद्धि)	रु. लाखमा	१	१.२	१.३	१.३५	१.४

४.५.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रः कार्यक्रम ः आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुल लागत (रु हजारमा)	अपेक्षित नतिजा
१	प्रविधि हस्तान्तरण	सीप विकास	मंसिर र पौष महिना	१४००	स्वरोजगार
२	पुनर्ताजगि र एडभान्स तालिम	पुनर्ताजगि र सीपमा निखारता ल्याउने ।	कार्तिक र मंसिर	३५००	सीपमा दक्षता आइ रोजगारी सिर्जना हुने ।
३	नयाँ लघु उद्यमी सिर्जना गर्ने	मेड मोडेल अनुसार नयाँ उद्यमी सिर्जना र विकास गर्ने ।	भाद्र र असोज	१६००	नयाँ उद्यम व्यवसाय गर्न सक्षम हुने ।

४.५.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आब	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	१९५०	३९०	१५६०	५८५	९७५	३९०
२०८३/८४	२६००	५२०	२०८०	७८०	१३००	५२०
२०८४/८५	१९५०	३९०	१५६०	५८५	९७५	३९०
जम्मा	६५००	१३००	५२००	१९५०	३२५०	१३००

४.६ श्रम तथा रोजगारी र सामाजिक सुरक्षा

४.६.१ पृष्ठभूमि

रोजगारी र श्रमलाई नेपालको संविधानको धारा ३३ र ३४ मा मौलिक हक मा समाहित गरिएको छ । यहि हक लाई कार्यान्वयन गर्न रोजगारी हक सम्बन्धित ऐन २०७५ रोजगारीको हक सम्बन्धित नियमावली २०७५, प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम २०७५ तथा युवा रोजगारीका लागि रुपनान्तरण पहल कार्यविधि २०७६ तर्जुमा गरी स्थानीय तहमा रोजगार सेवा केन्द्र स्थापना मार्फत बेरोजगार व्यक्तिको पहिचान गर्ने सूचिकरण गर्ने र सूचिकृत व्यक्तिलाई रोजगारी प्रदान गर्ने गरिन्छ । गरिबी निवारण र आर्थिक विकासमा उल्लेख्य प्रगति गर्न सकिने तथ्यलाई मध्य नजर गरी श्रम बजारको आवश्यकता अनुरूप सीपमुलक श्रम शक्तिको विकास गर्नु आजको आवश्यकता हो ।

सबै नागरिकले स्वदेश वा वैदेशिक रोजगारीको छनौट गर्न पाउने अधिकारको पनि संविधानमा सुनिश्चित गरिएको छ । स्वदेशमा सीमित रोजगारी अवसर, युवा जनशक्तिको बढ्दो आकार, परम्परागत जीवन प्रणालीमा युवाहरुको घट्दो रुचि लगायतका कारणले नेपाली युवाहरु वैदेशिक रोजगारीमा जाने क्रम बढ्दो छ । जसले अल्पकालीन रुपमा बेरोजगारीको समस्या न्यूनीकरण गर्न मद्दत पुग्नुका साथै प्राप्त विप्रेषणले मुलुकको अर्थतन्त्रलाई चलायमान बनाउन महत्वपूर्ण योगदान गरिरहेको छ । विप्रेषण क्षेत्रको प्रभावकारी व्यवस्थापनका लागि विगतका योजनाहरुले समेट्न नसकेको कुरा यथार्थ हो । हाल यस सभापोखरी गाउँपालिकामा वैदेशिक रोजगारीलाई सुरक्षित, व्यवस्थित एवम् उपलब्धीमूलक बनाउन र वैदेशिक रोजगारबाट प्राप्त ज्ञान, सीप, पूँजी तथा अनुभवलाई उत्पादनमूलक क्षेत्रमा परिचालनका लागि प्रोत्साहन गर्न सुरक्षित वैदेशिक रोजगारीको सवाललाई प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्नु महत्वपूर्ण कार्य हुनेछ ।

सभापोखरी गाउँपालिकामा सबैजसो व्यक्तिहरु कृषि तथा पशुपालनमा आवद्ध रहेका छन् भने पर्यटक तथा धार्मिक क्षेत्रमा न्यूनतम सहभागिता रहेको छ । सडक, यातायात क्षेत्रतर्क पालिकाले विशेष जोड दिएको कारण यस क्षेत्रमा पनि रोजगारीको अवसर रहेको छ । शिक्षा, स्वास्थ्यमा रोजगारीको विद्यमान अवस्था सवल रहेको छ । केहि न्यून मात्रामा सहकारी र वित्तीय संस्थाहरु रहेका छन् । उद्योग तथा मनोरञ्जन क्षेत्रबाट कम मात्र रोजगारी उपलब्ध रहेको छ । वैदेशिक रोजगारीको खोजिमा युवा जनशक्ति रहेको छ ।

४.६.२ समस्या र चुनौती

समस्या

भौगोलिक विकटता तथा प्रचार प्रसारमा समस्या हुनु र रोजगार प्रवर्द्धन गर्न कठिनाई हुनु, फराकिलो क्षेत्र र न्यून बजारको कारण सबै सडक सुदृढमा समस्या हुँदा रोजगारमा समस्या हुनु, रोजगार सम्बन्धी जनचेतनामा कमि तथा ठुलो औद्योगिक क्षेत्र नभएको, परम्परागत तथा ठुलो रोजगारी र उत्पादन नहुने क्षेत्रहरू भएको हुँदा दिर्घकालीन रोजगारीका लागि विदेशिनुपर्ने बाध्यता हुनु, प्राप्त सीप र पूँजिको न्यून परिचालन हुनु, बाहिरी लगानी आकर्षित हुन नसक्दा गाउँपालिका क्षेत्रमा न्यून आर्थिक गतिविधि हुनु, स्थानीय मानिसहरू श्रमको लागि अन्य शहर तथा वैदेशिक रोजगारीमा गएको, सरकारी, सहकारी, निजी तथा सामुदायिक क्षेत्रबीच समन्वय नहुनु, मर्यादित श्रम सहित रोजगार सुनिश्चित नहुनु, सामाजिक सुरक्षा योजनालाई सर्वव्यापी बनाउन नसक्नु, सामाजिक सुरक्षा वितरण प्रणाली प्रभावकारी नहुनु, सामाजिक सुरक्षा योजना तर्जुमा, लगानीको आँकलन, श्रोत माथिको दवाव अनुमान गर्न आवश्यक पर्ने सूचना तथा तथ्याङ्कको कमी हुनु, अल्पसङ्ख्यक तथा पिछडिएका समुदायहरूको सामाजिक सुरक्षामा कम पहुँच हुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

रोजगार क्षेत्रमा आधुनिक प्रविधिको प्रयोगमा चुनौती रहेको, दक्ष जनशक्तिको अभाव हुनु, घट्दो जनशक्ति र विश्वमहामारीलाई न्यूनिकरण गर्न, श्रम शक्तिको माग र आपूर्ति बीचको सन्तुलन नहुनु, बाह्य स्रोतलाई आकर्षित गरी आर्थिक गतिविधि बढाउनु, बढ्दो बसाइँसराइ र वैदेशिक रोजगारीमा जाने प्रवृत्तिले स्थानीय स्तरमा जनशक्तिको कमी, पारिवारिक र सामाजिक समस्या र परनिर्भरता बढिरहेको, पालिकामा बढिरहेको विप्रेषण आयको उत्पादनमूलक क्षेत्रमा उपयोग हुन नसक्दा उपभोग बढ्दो हुनु, आर्थिक रूपमा सक्रिय जनसङ्ख्यालाई स्थानीय स्तरमा नै रोजगारीका अवसरहरू सिर्जना गर्नु, अन्तराष्ट्रिय बजारसँग प्रतिस्पर्धा गर्न सक्ने दक्ष जनशक्तिको विकास गरी वैदेशिक रोजगारमा पठाउन नसक्नु, वैदेशिक रोजगारको क्षेत्रमा ठगी लगायतका घटनाहरू बढ्नु, श्रम शक्तिको माग र आपूर्ति बीचको सन्तुलन मिलाउनु, गन्तव्य मुलुकहरूसँग द्विपक्षीय श्रम सम्झौता र त्यसको कार्यान्वयन गर्नु, वैदेशिक रोजगारको दिगो विकल्प दिनु नसक्नु, पारिवारिक तथा सामाजिक पुनः एकीकरणका सवालहरू सम्बोधन नहुनु, तालिम प्राप्त जनशक्तिको निम्ति सही कामको उपलब्धता गराउनु, आर्थिक रूपमा सक्रिय जनसङ्ख्यालाई स्थानीय स्तरमा नै रोजगारीका अवसरहरू सिर्जना गर्नु, रोजगारीको अवसर सम्बन्धी सूचनामा रोजगारी चाहने मानिसको पहुँच स्थापित गर्नु, योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा प्रणालीमा स्थानीयको पहुँच स्थापित गराउनु, सामाजिक सुरक्षा संरक्षण सम्बन्धी योजनालाई वित्तिय रूपमा दिगो बनाउनु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

४.६.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

स्थानीय लघु घरेलु तथा साना उद्योगहरू स्थापना गरी यथेष्ट रोजगार सिर्जना गर्न सकिने, वैदेशिक रोजगारबाट फर्किएका सीपयुक्त युवालाई स्थानीय श्रम तथा रोजगारीको सम्भावना हुनु, वैदेशिक रोजगारलाई सुरक्षित, व्यवस्थित, मर्यादित, उपलब्धीमूलक एवम् शोषण रहित बनाउन सुरक्षित आप्रवासन परियोजना (सामी परियोजना) सञ्चालन गर्न सकिने, स्थानीय उत्पादनले बजार प्राप्त गरी कृषकहरूले उत्पादनको उचित मूल्य पाउन सकिने, अन्तराष्ट्रिय श्रम बजारको पहिचान गर्नु, विप्रेषणको उत्पादनमूलक क्षेत्रमा लगानी गरी आय आर्जन बढाउन सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

युवा र आर्थिक रूपले सक्रिय जनसङ्ख्याको बाहुल्यता रहेको हुनाले यसको परिचालन मार्फत गाउँपालिकाले स्थानीय विकासका कार्यलाई तिब्रतर रूपमा अगाडी बढाउन सकिने, विदेशमा आर्जित विप्रेषण र सिक्रेको सीप आफ्नो थातथलोमा प्रयोग गर्न सकेमा आर्थिक विकासमा योगदान पुग्नुका साथै उत्पादन एवम् रोजगारको अवसर समेत विस्तार हुने, सीपयुक्त जनशक्तिको परिचालनद्वारा समृद्धि हासिल गर्न सकिने, विदेशबाट फर्किएका मानिसहरूलाई परिचालित गरी नविनतम उत्पादन प्रक्रियाको थालनी गर्न सकिने, स्थानीय उत्पादनमा आधारित उद्योगहरूको स्थापना गरी रोजगारी सिर्जना गर्न सकिने, स्थानीय उत्पादनलाई ब्राण्डिङ गरी बढी मूल्य प्राप्त गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

४.६.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

उत्पादनशिल क्षेत्रमा रोजगारी अभिवृद्धि गरी बेरोजगारी दरलाई न्यूनिकरण गर्ने ।

उद्देश्य

- सभापोखरी गाउँपालिका भित्र उत्पादनशील र मर्यादित रोजगारीका अवसर विस्तार गर्नु ।
- वैदेशिक रोजगारबाट आर्थिक लाभ वृद्धि हुनका साथै वैदेशिक रोजगारबाट उत्पन्न नकारात्मक प्रभावहरू पनि न्यूनिकरण गर्नु ।
- सबै नागरिकलाई अनिवार्य र सर्वव्यापी सामाजिक सुरक्षा प्रणालीमा आवद्ध गर्नु ।

४.६.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
रोजगार कार्यक्रमअन्तर्गत सञ्चालितआयोजना	संख्या	७	६	६	६	६
कार्यक्रमबाट सिर्जित रोजगारी	कार्य दिन	१००	१००	१००	१००	१००
युवा जनशक्तिको सीप अभिवृद्धि	जना	६६	१२६	६५	७०	७५
सुचकृत भएका बेरोजगारको संख्या	जना	२४१	२९४	३१४	२५०	२००

४.६.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	प्रधानमन्त्रि रोजगार कार्यक्रम	रोजगारी बढाउनु	२०८२।८३ र २०८४।८५	१५००	रोजगारी प्रबर्द्धन, ज्ञान सिप हासिल गर्न सक्ने

४.६.७ बिषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आब	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	४५००	९००	३६००	०	४५००	०
२०८३/८४	६०००	१२००	४८००	०	६०००	०
२०८४/८५	४५००	९००	३६००	०	४५००	०
जम्मा	१५०००	३०००	१२०००	०	१५०००	०

परिच्छेद ५: सामाजिक क्षेत्र

५.१ स्वास्थ्य तथा पोषण

५.१.१ पृष्ठभूमि

संविधानको एकल तथा साझा अधिकार सूची अनुसार संघ, प्रदेश र स्थानीय तहलाई स्वास्थ्य सेवाको जिम्मेवारी दिँदै स्वास्थ्य नीति, मापदण्ड, गुणस्तर, अनुमगन, परम्परागत उपचार सेवा र सरुवा रोग नियन्त्रण लगायतको कार्य संघको अधिकार भित्र राखिएको छ । यसको प्रभावकारी कार्यान्वयनको लागि अन्तर मन्त्रालय समन्वय तथा सहकार्य अपरिहार्य रहेको छ । यस परिप्रेक्षमा नेपालले विभिन्न समयमा गरेको अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिवद्धता, नेपाल सरकारका विद्यमान नीति एवम् स्वास्थ्य तथा पोषण क्षेत्रका प्रमुख समस्या, चुनौती तथा अवसरलाई समेत आधार बनाउँदै दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्ने राष्ट्रिय कार्यसूची रहेको छ । नागरिकलाई स्वस्थ बनाउन आधुनिक चिकित्सा, आयुर्वेदिक, प्राकृतिक, होमियोपेथिक चिकित्सा क्षेत्र, स्वास्थ्य सुशासन र अनुसन्धानमा लगानी बढाउन आवश्यक देखिएको छ । स्वास्थ्य क्षेत्रलाई प्रभाव पार्न अर्को महत्वपूर्ण सुचक खाद्य सुरक्षा हो । आफ्नो उत्पादनले बाह्र महिना खाद्यन्न पुग्ने परिवार सङ्ख्या र बाह्र महिना भन्दा कम समयको लागि खाद्यान्न पुग्ने घरपरिवार सङ्ख्याले पनि व्यक्तिको स्वस्थगत अवस्थालाई निर्धारित गर्दछ ।

सुरक्षित मातृत्वको लागि आवश्यक खोप सेवा, गर्भावस्थाको जाँच र सुरक्षित प्रसुति जस्ता स्वास्थ्य सेवा लिने महिलाहरु न्यून रहेको छ भने गाउँपालिका भित्रका स्वास्थ्य केन्द्रबाट विभिन्न किसिमका खोप लिने बालबालिका सङ्ख्या सन्तोषजनक रहेको देखिन्छ । मातृशिशु सुरक्षाको अवस्था हेर्दा जीवित नवजात शिशु सङ्ख्याको दरमा वृद्धि भईरहेको छ । पहाडी क्षेत्र र सडकको कमजोर अवस्थाले गर्दा स्वास्थ्य सेवामा स्थानीयवासीहरुको पहुँच न्यून रहेको छ । गाउँपालिकास्थित स्वास्थ्य चौकीहरुमा दक्ष जनशक्ति, स्वास्थ्य उपकरण, ल्याब सेवा र पूर्वाधारहरुको अभाव रहेको छ ।

सभापोखरी गाउँपालिकामा आधारभूत अस्पताल, स्वास्थ्य केन्द्र, स्वास्थ्य चौकी, स्वास्थ्य इकाइ र खोप केन्द्र, प्रसुती केन्द्र रहेका छन् । साथै एम्बुलेन्स सेवा पनि प्रदान गरिएको छ । टोल टोलमा घुम्ति स्वास्थ्य सेवा रहेको छ ।

५.१.२ समस्या र चुनौती

समस्या

अस्पतालमा पर्याप्त सामग्री नरहेको, जनशक्तिको अभाव, एकसरे लगायत ल्याबको सामग्रीको अभाव, भौतिक पूर्वाधार, जनशक्ति र सामग्रीको अभाव, यन्त्र उपकरण र दक्ष जनशक्ति अपर्याप्तता, एउटा मात्र एम्बुलेन्स पर्याप्त नभएको, सबै नागरिकहरुलाई स्वास्थ्य सेवाको पहुँचमा नल्याइएको, दीर्घ रोगी र असहायमुखि जनसंख्या भएको, अपाङ्गता भएका व्यक्ति तथा महिलाहरुको स्वास्थ्य चौकीको कमजोर पहुँच हुनु, निशुल्क तथा अत्यावश्यक औषधीको पर्याप्त मात्रामा उपलब्ध नहुनु, महिलाहरुमा पाठेघर क्यान्सर, आड खस्ने, स्तन क्यान्सर रोगको समस्या हुनु, सबै स्वास्थ्य संस्थामा प्रसुति केन्द्र (बर्थिङ सेन्टर) को अभावले प्रसुति सेवामा कठिनाई हुनु, कुपोषण, श्वास प्रश्वास जन्य स्वास्थ्य समस्या रहनु, स्वास्थ्य र पोषण सम्बन्धी चेतनाको कमी हुनु, सबै घरपरिवारमा पोषण र खाद्य सुरक्षाको पहुँच नहुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

आधारभूत स्वास्थ्य सेवालाई सबैको पहुँच भित्र ल्याउनु, सबै सुत्केरी सेवालाई संस्थागत दायरामा ल्याउनु, निशुल्क, स्वास्थ्य संस्थामा आधारभूत तथा अत्यावश्यक औषधि सर्वयाम उपलब्ध गराउनु, स्वास्थ्य संस्थाहरूमा आधारभूत सुविधा युक्त (औजार/उपकरण, दक्ष जनशक्ति र पूर्वाधार) पुर्याउनु, स्वास्थ्य बीमालाई सबै नागरिकको दायरामा पुर्याउनु, आयुर्वेद तथा स्थानीय उपचार प्रणालीलाई स्वास्थ्य संस्थाको दायरामा ल्याई व्यवस्थित र गुणस्तरीय बनाउनु, खाद्य सेचतना तथा खाद्य व्यवहार सुधारलाई स्वास्थ्य प्रणालीको अङ्गको रूपमा विकास गर्नु । स्वास्थ्य सेवा बारे जनचेतना अभिवृद्धि गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

५.१.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

स्वास्थ्य सेवाको गुणस्तर सुधार गर्न सकिने, स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम मार्फत स्वास्थ्य सेवाको पहुँचमा वृद्धि हुने, स्थानीय तहको स्वास्थ्य सेवालाई थप व्यवस्थित तथा प्रभावकारी बनाउन सकिने, बालबालिकाको लागि पोषण कार्यक्रम सञ्चालन गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

आधारभूत स्वास्थ्य स्थानीय सरकारको अधिकारमा रहनु, १५ शैया सम्मको अस्पताल सबै स्थानीय तहमा खोल्ने सरकारी नीति रहनु, अधिकांश वडामा स्वास्थ्य संस्था र खोप केन्द्र उपलब्ध हुनु, राष्ट्रिय स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम सञ्चालनमा रहनु, स्वास्थ्य सेवा गाउँपालिकाको प्राथमिकता र जनचासोको विषय रहनु, स्वास्थ्य सम्बन्धी काम गर्ने विभिन्न गैर सरकारी संस्थाको उपस्थिति हुनु, ग्रामीण स्वास्थ्य स्वयंसेविका र आमा समूहको क्रियाशीलता हुनु आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

५.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

स्वास्थ्य सेवामा सबैको पहुँचमा स्थापित गरी स्वास्थ्य सेवा प्रणालीको माध्यमबाट गुणस्तरीय सेवा उपलब्ध गराउने ।

उद्देश्य

- स्वास्थ्य प्रणालीमा सुधार तथा सेवाको गुणस्तर अभिवृद्धि गर्नु
- आधारभूत स्वास्थ्य सेवामा निःशुल्क र सर्वसुलभ पहुँच सुनिश्चित गर्नु

५.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यम कालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८	२०८१/८	मध्यम कालीन लक्ष्य		
		१ सम्मको उपलब्धि	२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	२०८२/ ८३	२०८३/ ८४	२०८४/ ८५
प्रति एक लाख जीवित जन्ममा मातृ मृत्युदर	जना	१५१	१५०	१००	९०	७०

सूचक	एकाइ	२०८०/८१	२०८१/८२	मध्यम कालीन लक्ष्य		
		सम्मको उपलब्धि	सम्मको अनुमानित उपलब्धि	२०८२/ ८३	२०८३/ ८४	२०८४/ ८५
दक्ष प्रसूतिकर्मीको सहयोगमा गराइएको बच्चाजन्मको अनुपात	प्रतिशत	९९	९९	९९.९	९९.९	९९.९
पाँच वर्षमुनिको बाल मृत्युदर (प्रतिहजार जीवितजन्म)	जना	३३	३५	४०	४५	५५
नव जात शिशुको मृत्युदर (प्रतिहजार जीवितजन्म)	जना	२८	३५	४५	५५	६५
मनोपरामर्श दिने संख्या	संख्या	४५०	४७५	५००	६००	७००
परिवार नियोजनका साधनप्रयोग गर्ने प्रजनन उमेर (१५ देखि ४९ वर्ष उमेर)का महिलाको अनुपात	अनुपात	५७	६५	७०	७५	८५
मापदण्ड अनुसार ८ पटक प्रसव पूर्व स्वास्थ्यसेवाप्राप्त गर्ने महिला(जीवितजन्ममा)	प्रतिशत	६०	६५	७०	७५	८०
हेपाटाइटिस बीखोपको तीनडोज प्राप्त गर्ने शिशुहरूको प्रतिशत	प्रतिशत	१००	१००	१००	१००	१००
क्वधरवाट स्वास्थ्य सँस्थामा पुग्न ३० मिनेट वा सोभन्दाकम समय लाग्ने घरपरिवार	प्रतिशत	६०	७०	७५	७५	७५
राष्ट्रियकार्यक्रमहरूमा समावेश गरीएका सबै खोप प्राप्त गर्ने लक्षित जनसंख्याको अनुपात	प्रतिशत	१००	१००	१००	१००	१००

५.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रःकार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	पोषण मैत्री स्वास्थ्य संस्था घोषणा	स्वास्थ्य क्षेत्रको	२०८२/८३-२०८४/८५	४०००	स्वास्थ्य क्षेत्रको सबल भएको हुने

२	पूर्ण संस्थागत प्रसूति वडा घोषणा	सबलीकरण गर्नु	२०८२/८३-२०८४/८५	५०००	
३	धुपु स्वास्थ्य चौकी भवन निर्माण		२०८२/८३-२०८४/८५	३००००	
४	विविध कार्यक्रम (सालबसाली)		२०८२/८३-२०८४/८५	१९०००	

५.१.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	२३४००	१४०४०	९३६०	३५१०	१४०४०	५८५०
२०८३/८४	३१२००	१८७२०	१२४८०	४६८०	१८७२०	७८००
२०८४/८५	२३४००	१४०४०	९३६०	३५१०	१४०४०	५८५०
जम्मा	७८०००	४६८००	३१२००	११७००	४६८००	१९५००

५.२ शिक्षा, विज्ञान तथा नवप्रवर्द्धन

५.२.१ पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले शिक्षा सम्बन्धी हकलाई मौलिक हकका रूपमा प्रत्याभूत गरेको छ । संविधानले आधारभूत तहसम्मको शिक्षामा पहुँच, आधारभूत तहसम्मको अनिवार्य र निशुल्क शिक्षा तथा माध्यमिक तहसम्मको निशुल्क शिक्षा पाउने हक प्रत्याभूत गरेको छ । अपाङ्गता भएका र आर्थिक रूपले विपन्न नागरिकलाई कानून बमोजिम निशुल्क उच्च शिक्षा पाउने, प्रत्येक नेपाली समुदायलाई कानून बमोजिम आफ्नो मातृभाषामा शिक्षा पाउने र त्यसका लागि विद्यालय तथा शैक्षिक संस्था खोल्ने र सञ्चालन गर्ने हक प्रत्याभूत गरेको छ । साथै, शिक्षालाई वैज्ञानिक, प्राविधिक, व्यवसायिक, सीपमूलक तथा रोजगारमूलक बनाउँदै शिक्षामा, राज्यको लगानी अभिवृद्धि गर्दै निजी क्षेत्रको लगानीलाई नियमन र व्यवस्थापन गरी सेवामूलक बनाउने नीति अवलम्बन गरेको छ । कुनै पनि राष्ट्रको समृद्धि उक्त देशले अपनाएको विज्ञान प्रविधि तथा नवप्रवर्द्धन सम्बन्धी नीति, सो को समग्रतामा कार्यान्वयन, त्यसका लागि गरिएको राजनैतिक प्रतिवद्धता, अनुसन्धान तथा विकासमा गरिएको राज्यको लगानी र सो बाट प्राप्त सामाजिक आर्थिक प्रतिफलको आधारमा मापन गर्ने गरिएको तथ्य विकसित मुलुकको अनुभवले देखाएको छ ।

सभापोखरी गाउँपालिकामा पर्याप्त विद्यालय भवनहरू रहेका छन् । विद्यार्थी भर्ना सबै क्षेत्रमा प्रभावकारी रहेता पनि विद्यालयमा भने विद्यार्थी संख्या न्यून छ र केन्द्रमा रहेको विद्यालयमा मात्र पर्याप्त विद्यार्थी संख्या रहेको देखिन्छ । प्राविधिक शिक्षालयको स्थापना र संचालन भएको, उच्च शिक्षाको लागि कलेज स्थापना गरिएको, आइ.सि.टि.

को स्थापना गरी अगाडी बढेको अवस्था रहेको छ । शैक्षिक गुणस्तर सुधारको लागि प्रयोगशाला, पुस्तकालय, फर्निचर, दिवा खाजा, शिक्षकको व्यवस्था गरिएको छ । एक माध्यमिक विद्यालय एक स्टाफ नर्स शिक्षाको अवधारणाको सुरुवात भएको छ । विद्यालय भवनहरुमा खानेपानी, खेलमैदान तथा शौचालय भए पनि सबै विद्यालयमा उचित व्यवस्था भएको छैन । विद्यालय भवन र खेलमैदान सामान्य रहेको र भूकम्प प्रतिरोधी नरहेको अवस्था छ । मातृभाषामा पढाइ (लिम्बु) जातीको रहेको छ । शिक्षक तालिम, शिक्षक दरबन्दी व्यवस्था, आइ.सि.टि. सामाग्री बढाउनुपर्दछ । अपाङ्गता मैत्री विद्यालय भवनहरु बनाउनुपर्नेछ ।

५.२.२ समस्या र चुनौती

समस्या

सबै विद्यालय भवनहरु पक्की नभएको, ५०% बालबालिका बीचमै कक्षा छाड्ने प्रवृत्ति रहेको, जनशक्ति र भौतिक पूर्वाधारको अभाव, कलेजको निजी जग्गा, भवन र पर्याप्त जनशक्तिको अभाव, सबै विद्यालयमा आइ.सि.टि. स्थापना नहुनु, शैक्षिक गुणस्तर न्यून रहेको, स्टाफ नर्सको व्यवस्था पूर्ण रूपमा नभएको, छात्रावासको व्यवस्था नभएको, नमूना माध्यमिक विद्यालय नरहेको, विद्यार्थी संख्याको आधारमा खानेपानी, शौचालय, खेलमैदान पर्याप्त नरहेको, सबै विद्यालयमा विद्यालय घेराबारा नभएको, लिम्बु बाहेक अन्य जातीमा पढाइको सुरुवात नभएको, शैक्षिक तालिम र आइ.सि.टि. सामाग्री बाँडफाँड नभएको, विद्यालयका भौतिक पूर्वाधार अपाङ्ग मैत्री नहुनु, लक्षित समूहका बालबालिकाको विशेष शिक्षामा पहुँचको कमी हुनु, विद्यालयमा शैक्षिक सामग्रीको कमी तथा दरबन्दी पूर्ण रूपले पूर्ति नभएको, विज्ञान र प्रविधिका विकासका निम्ति नीतिगत कानुनी तथा संस्थागत पूर्वाधारको कमी हुनु, विज्ञान र प्रविधिका विकासमा निजी क्षेत्रसँगको सहकार्य प्रभावकारी हुन सक्नु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

समावेशी र गुणस्तरीय शिक्षाको पहुँचको सुनिश्चितता गर्नु, प्राविधिक शिक्षा र विशेष शिक्षाको पहुँच बढाउनु, शैक्षिक पूर्वाधारको विकास गर्नु, शिक्षण र सिकाई दरमा सुधार गर्नु, विषयगत शिक्षकलाई पुर्नताजगी तालिम प्रदान गर्नु, गुणस्तरीय र प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षाको उपलब्धता बढाउनु, दरबन्दी अनुशासार शिक्षक पदपूर्ति गर्नु, स्थानीय स्तरमा नै गुणस्तरीय शिक्षाको अवसर बढाउनु, भौगोलिक अवस्थिति र सडक पूर्वाधारको अभावले विद्यालय पुग्ने औसत समय धेरै हुनु, विज्ञान प्रविधिको विकास तथा नविनतम प्रविधिको समग्रमा प्रयोग गर्ने वातावरण बनाउनु, वैज्ञानिक अनुसन्धान कार्यमा सघाउ पुर्याउन सक्ने विभिन्न विधागत वैज्ञानिक, विज्ञ र दक्ष प्राविधिक जनशक्तिको विकास गर्नु, प्रविधि विकासलाई उद्यमशिलतामा र उद्यमशिलतालाई उत्पादनसँग जोड्नु, देशका दक्ष एवम् विज्ञ प्रतिभा पलायन रोक्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

५.२.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

गाउँ शिक्षा ऐनको लागि आवश्यक, नियमावली, कार्यविधि निर्माण गर्न सकिने, गुणस्तरीय शिक्षाको लागि अभिभावक अनुशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षिक सुधार सम्बन्धी अन्तरक्रिया कार्यक्रम, विद्युतीय हाजिरी व्यवस्थापन, आइ.सि.टि. व्यवस्थापन लगायतका कार्यक्रम सञ्चालन गर्न सकिने, सामुदायिक विद्यालयको गुणस्तर वृद्धिका लागि अंग्रेजी माध्यममा पठनपाठन गराउन सकिने, कृषि तथा भेटिरेनरी, सूचना प्रविधि र ईन्जिनियरिङ लगायत

प्राविधिक शिक्षालय स्थापना गर्न सकिने, स्थानीय सरकारले नियमित अनुगमनबाट विद्यालय शिक्षालाई समय सापेक्ष बनाउन सकिने, शैक्षिक जनशक्ति उत्पादन गरी स्थानीय जनशक्तिको मागलाई पूर्ति गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

शैक्षिक वातावरण, पूर्वाधार र सामग्रीहरूको व्यवस्था गरी साक्षरता वृद्धि गर्न सकिने, परम्परागत तथा आधुनिक ज्ञान तथा प्रविधिको स्तरोन्नति एवम् आधुनिकीकरण गर्न सकिने, विज्ञान तथा प्रविधिको विकास एवम् अधिकतम प्रयोग गर्न सकिने, आधारभूत शिक्षा मौलिक हकको रूपमा स्थापित हुनु, शिक्षा ३ तहको सरकारको प्राथमिकतामा पर्नु, माध्यमिक शिक्षासम्मको नीति तथा योजना बनाउने अधिकार स्थानीय तहमा हुनु, स्थानीय सरकारद्वारा शिक्षामा लगानी वृद्धि हुनु, शिक्षाप्रतिको जन अभिरुचि बढ्दै जानु, विज्ञान प्रविधिको विकास, नवप्रवर्तनको उपयोग गरी उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि गर्न सकिने, अनुसन्धान तथा विकासमा योग्य जनशक्ति परिचालन गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

५.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

दक्ष मानव संसाधनको निर्माण गरी गाउँपालिकाको समृद्धिको आधार तयार गर्ने ।

उद्देश्य

- गुणस्तरीय शिक्षामा सबै वर्ग एवम् समुदायको समतामुलक पहुँच पुर्याउनु ।
- प्राविधिक, व्यवसायिक, सिपयुक्त एवम् व्यवहारिक शिक्षाको विकास एवम् विस्तार गर्नु ।

५.२.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
१५ मिनेटको दुरीमा आधारभूत तहको विद्यालयमा पहुँच हुने घरधुरी	प्रतिशत	५०	५५	६०	६५	७०
विद्यालय बाहिर ५-१५वर्ष उमेर समूहका बालबालिका	प्रतिशत	५	६	८	९	१०
छात्रवृत्ति पाउने विद्यार्थी	संख्या	११२७	११५०	११७०	१२००	१२५०
दिवा खाजा खुवाउने विद्यालय	संख्या	२८	३०	३०	३०	३०
विषयगत तालिम प्राप्त शिक्षक	प्रतिशत	३५	३७	४०	४२	
सिटिइभिटिवाट सम्बद्धनमा सञ्चालित प्राविधिक विद्यालय	संख्या	१	३	४	५	६
सामुदायिक विद्यालयमा प्राविधिक धारा अध्यापन गराउने विद्यालय	संख्या	१	१	१	१	२

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
बालबालिका मैत्री, अपाङ्गता मैत्री र भूकम्प प्रतिरोधात्मक संरचना भएको विद्यालय	संख्या	११	११	१२	१३	१४
आइसिटि सेवा उपलब्ध विद्यालय	संख्या	७	७	८	८	८
कम्प्युटर प्रयोगशाला भएका विद्यालय	संख्या	४	८	१०	१२	
व्यवस्थित विज्ञान प्रयोगशाला भएका विद्यालय	संख्या	७	७	८	८	८
सेनीटरी प्याड सहित नर्स सेवा उपलब्ध विद्यालय	संख्या	१	१	२	३	४

५.२.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रः कार्यक्रम ः आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	शिक्षक तालिम	शिक्षा क्षेत्रमा सुधार ल्याउनु	२०८२/८३-८४/८५	१०००	शिक्षा क्षेत्रमा सुधार आएको हुने
२	शिक्षक, विद्यार्थी, विद्यालय सम्मान तथा विद्यार्थी प्रतिभा प्रस्फुटन कार्यक्रम लगायत साल बसाली कार्यक्रम		२०८२/८३-८४/८५	५००००	
३	अभिभावक अनुशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षिक सुधार सम्बन्धी अन्तरक्रियात्मक कार्यक्रम		२०८२/८३-८४/८५	३०००	
४	विभिन्न परीक्षा सञ्चालन र व्यवस्थापन		२०८२/८३-८४/८५	२०००	
५	सामग्री खरिद, छपाइ तथा वितरण(प्याड, पुस्तक, क्यालेण्डर आदि)		२०८२/८३-८४/८५	१३०००	

६	प्राविधिक विषय (कृषि तथा भेरेरिनरी, सूचना प्रविधि र ईजिनियरिङ) पठनपाठन	२०८२/८३-८४/८५	१०००
७	विभिन्न बैठक सञ्चालन तथा व्यवस्थापन	२०८२/८३-८४/८५	२०००
८	तलव दिवाखाजा तथा विभिन्न(पाठ्यपुस्तक, मसलन्द,PCF आदि) अनुदान निकासी	२०८२/८३-८४/८५	२००००
९	डिजिटल विद्यालय कार्यक्रम	२०८२/८३-८४/८५	१५०००

५.२.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	३२१००	१९२६०	१२८४०	४८१५	१९२६०	८०२५
२०८३/८४	४२८००	२५६८०	१७१२०	६४२०	२५६८०	१०७००
२०८४/८५	३२१००	१९२६०	१२८४०	४८१५	१९२६०	८०२५
जम्मा	१०७०००	६४२००	४२८००	१६०५०	६४२००	२६७५०

५.३ खानेपानी तथा सरसफाइ

५.३.१ पृष्ठभूमि

खानेपानी तथा सरसफाइ मानव जीवनयापनको अत्यावश्यक आधार हो। स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐनले स्थानीय स्तरको खानेपानीलाई स्थानीय तहको अधिकारमा राखेको छ। खानेपानी तथा सरसफाइ सेवालाले नेपालको संविधानले मौलिक हकको रूपमा व्यवस्था गरेको छ। साथै, अन्तर्राष्ट्रिय रूपमा समेत दिगो विकास लक्ष्यले खानेपानी तथा सरसफाइ सम्बन्धी स्पष्ट लक्ष्यहरू निर्धारण गरेको छ। यसबाट बाल मृत्युदर कम गर्न तथा सरदर आयु वृद्धि गर्न सहयोग पुगेको, नागरिकले समग्र स्वास्थ्य स्थितिमा सुधार भई उत्पादनशील समयमा वृद्धि भएको तथा सामाजिक रहनसहन र बालबालिकाको विद्यालय उपस्थिति दरमा अनुकूल सुधार गर्न योगदान पुगेको छ। यस गाउँपालिकामा स्वच्छ खानेपानीको कार्यक्रम अगाडी बढेको, पाइपहरू वितरण भएका छन्। साना साना पानीको मुहान भएको र संरक्षण गरी संवर्द्धन गर्न आवश्यक छ। बजार क्षेत्रमा सरसफाइका कार्यक्रम हुने गरेको छ।

५.३.२ समस्या र चुनौती

समस्या

स्वास्थ्य मापदण्ड अनुसारको खानेपानी व्यवस्था सबै घरधुरीमा नहुनु, पानीको मुहानको संरक्षण पर्याप्त नहुनु, बजार क्षेत्रमा फोहोर व्यवस्थापनका लागि उपयुक्त व्यवस्था नहुनु, खानेपानी स्रोत संरक्षण तथा सरसफाइमा जनचेतनाको कमि हुनु, सरसफाइमा त्यति धेरै चासोको विषय नहुनु, स्वच्छ खानेपानीको व्यवस्था नहुँदा पानी जन्य रोगहरू बढ्नु, व्यक्तिगत तथा सामुदायिक सरसफाइको अभ्यास कमजोर हुनु, फोहोर उत्सर्जन गर्ने ठूला उद्योगहरू र बजारकेन्द्रहरू नहुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

"एक घर एक धारा र एक घर एक चर्पी" नीतिको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्नु, स्वच्छ पानीको वितरण गर्नु, खानेपानीका मुहानहरूको संरक्षण गर्नु, खानेपानी प्रणालीको दीगो व्यवस्थापन गर्नु, सरसफाइको अभ्यास बढाउनु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

५.३.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

"एक घर एक धारा र एक घर एक चर्पी" नीतिको प्रभावकारी कार्यान्वयन भई सबै घरधुरीमा खानेपानीको पहुँच स्थापित हुन सकिने, खानेपानी सुविधा नपुगेका स्थानहरूमा खानेपानी योजना सञ्चालन गर्न सकिने, स्वच्छ पानीको वितरण हुने, खानेपानीका मुहानहरूको संरक्षण गर्न सकिने, खानेपानी प्रणालीको दीगो व्यवस्थापन हुने, सरसफाइको अभ्यास बढ्न सक्ने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

गाउँपालिकामा प्रशस्त पानीका मुहान र खोलानालाहरू हुनु, अधिकांश परिवारमा खानेपानीको पहुँच पुग्नु, खानेपानी सुविधा नपुगेका स्थानहरूमा खानेपानी योजना सञ्चालन गर्न प्रदेश सरकार र केन्द्र सरकारसँग समन्वय गर्न सकिने, खानेपानीमा विभिन्न सरकारी, निजी तथा गैससहरूको सहकार्य हुनु, स्वच्छ खानेपानी तथा सरसफाइको कारण जनस्वास्थ्य सुधारमा सहयोग पुग्ने, स्वच्छ, सफा, हराभरा गाउँपालिका स्थापित हुन सक्ने, पानीको स्रोतहरूको संरक्षण गरी प्राकृतिक स्रोतको सदुपयोग गर्न मद्दत पुग्ने, आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

५.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

स्वस्थ र सफा गाउँपालिका बनाउने ।

उद्देश्य

- स्वच्छ खानेपानी र सरसफाइद्वारा सभापोखरीवासीको जीवनस्तरमा सुधार ल्याउनु ।
- सम्पूर्ण घरधुरीमा स्वच्छ खानेपानी पहुँच सहज बनाउनु ।
- गाउँपालिका क्षेत्रभित्र नियमित सरसफाइको व्यवस्था गर्नु ।

५.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८० /८१ सम्मको उपल ब्धि	२०८१/ ८२ सम्मको अनुमानि त उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२ /८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
आधारभूतखानेपानी सुविधाउपलब्ध घरपरिवार	प्रतिशत	७०	८०	८५	९०	९५
स्वच्छ खानेपानीको पहुँच घरपरिवार	प्रतिशत	५०	५५	६०	६५	७०
पेन सेट जडान शौचालयभएका परिवार	प्रतिशत	९५				
पक्कि शौचालय भएका घरधुरी	प्रतिशत	२०	२०	२५	३०	३५

५.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रःकार्यक्रम ÷ आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	एक घर एक धारा अभियान	खानेपानीको पहुँच विस्तार गर्नु	लगातार	५००००	खाने पानीको पहुँच विस्तार भएको हुने

५.३.७ बिषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आब	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	१५०००	३०००	१२०००	०	१३५००	१५००
२०८३/८४	२००००	४०००	१६०००	०	१८०००	२०००
२०८४/८५	१५०००	३०००	१२०००	०	१३५००	१५००
जम्मा	५००००	१००००	४००००	०	४५०००	५०००

५.४ महिला, बालबालिका तथा लक्षित वर्ग

५.४.१ पृष्ठभूमि

सबै लिङ्ग, वर्ग र समूहको सहभागिता र अपनत्व बोध सहितको समावेशीताले राज्य प्रणालीलाई सुदृढ गर्नुका साथै समृद्धिको आकांक्षा परिपूर्ति गर्न ठूलो मद्दत गर्दछ । संविधानले वर्गीय, जातीय, क्षेत्रीय, भाषिक, धार्मिक, लैङ्गिक विभेद र सबै प्रकारका जातीय छुवाछुतको अन्त्य गरी आर्थिक समानता, समृद्धि र सामाजिक न्याय सुनिश्चित गर्न समानुपातिक समावेशी र सहभागितामूलक सिद्धान्तका आधारमा समतामूलक समाजको निर्माण गर्ने सङ्कल्प गरेको छ ।

यस आवधिक योजनाले महिला, बालबालिका तथा लक्षित समूहलाई प्राथमिकताका साथ सम्बोधन गर्ने गरी कार्ययोजना प्रस्ताव गरेको छ । पिछडिएका समुदायलाई विकासको मूल प्रवाहमा ल्याउनु नै यस आवधिक योजनले परिलक्षित गरेको छ । यस गाउँपालिकामा बाल उद्यान पार्क र ज्येष्ठ नागरिक चिन्तन चौतारीको सम्भावना रहेको छ । महिला, बालबालिका तथा लक्षित वर्ग सीपमूलक तालिम प्रदान गरिएको छ ।

५.४.२ समस्या र चुनौती

समस्या

शिक्षा, स्वास्थ्य लगायत सेवामा महिला र लक्षित वर्गको पहुँचमा कमी हुनु, महिलाको भूमिका औपचारिक आर्थिक क्रियाकलापमा भन्दा घरायसी काममा बढी केन्द्रित हुनु, महिला, अपाङ्गता तथा बाल मैत्री पूर्वाधारको कमी हुनु, लक्षित वर्गमा सचेतनाको अभाव हुनु, लक्षित वर्गहरू आर्थिक रूपमा अत्यन्तै पछाडी पर्नु, लक्षित वर्गको समाजमा देखिएका सामाजिक कुरीति, जातीय, लैङ्गिक, भाषिक, धार्मिक, विभेद अन्त्य गर्नका लागि राज्य तथा सम्बन्धित निकायहरू औपचारिकतामा मात्र सीमित रहनु, बजार क्षेत्रमा बाल उद्यान पार्क र चिन्तन चौतारी निर्माणको लागि जग्गा छनौट नहुनु, तालिम प्राप्त दक्ष जनशक्तिहरूले व्यवहारिक रूपमा कार्य नगर्नु, महिला तथा लक्षित वर्गमा लागि न्यून कार्यक्रमहरू हुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

स्थानीय तहमा समानता र सामाजिक समावेशीकरणको दृष्टिकोणलाई मूलप्रवाहिकरण गर्न ज्ञान, दक्षता र क्षमता भएका जनशक्तिको उचित व्यवस्थापन गर्नु, अन्तर निकाय र समन्वय र सहकार्यलाई प्रभावकारी बनाउनु, लक्षित वर्गको शिक्षा र स्वास्थ्य जस्ता क्षेत्रमा पहुँच स्थापित गर्नु, महिला तथा लक्षित वर्ग समुदायको क्षमता विकास गरी उत्पादनशील क्षेत्रमा परिचालन गर्नु, महिला तथा लक्षित वर्गको अर्थपूर्ण सहभागिता र निर्णयमा पहुँच स्थापित गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

५.४.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

महिला, बालबालिका तथा लक्षित वर्गहरू समेत गाउँपालिकाको प्राथमिकतामा रहँदै आएको, विकासमा लक्षित वर्ग र समुदायलाई परिचालित गर्ने सम्भावना रहेको, स्थानीय सरकारमा लक्षित वर्गको सम्मानजनक उपस्थिति तथा उनीहरूको सहभागिता हुनु आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

संविधानका मौलिक हकमा समावेशीकरणलाई प्राथमिकता अनुसार विभिन्न हक सुरक्षित हुनु, दलित तथा सीमान्तकृत समुदाय लक्षित विशेष कार्यक्रम सञ्चालनमा आउनु, गाउँपालिकाको निर्णय प्रक्रियामा महिला, दलित

तथा अल्पसङ्ख्यकको प्रतिनिधित्वले गर्दा सम्बन्धित वर्ग र समुदायको मुद्दा समेटिदै जानु, स्थानीय जनजाति समुदायको घरायसी निर्णय प्रक्रियामा महिलाको भूमिका प्रभावकारी हुनु, समावेशी र समानतामूलक समाज निर्माण गर्न सकिने, लक्षित वर्गको सामाजिक र आर्थिक उत्थान गर्न सकिने, विकास निर्माणमा महिला तथा लक्षित वर्गहरूको समावेशी सहभागिता सुनिश्चित गर्ने सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

५.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

महिला, बालबालिका, ज्येष्ठ नागरिक, अपाङ्गता भएका व्यक्ति, जनजाती, सिमान्तकृत, समुहविपन्न वर्गलाई सामाजिक समावेशीकरण, लक्षित वर्गको क्षमता विकास, लैङ्गिक समानताको आधारमा निर्णय तहमा पहुँच अभिवृद्धि गरी समान समाज विकास गर्ने ।

उद्देश्य

- महिला, दलित, जनजाती, अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको सशक्तिकरण र सामाजिक समावेशीकरण गर्नु ।
- ज्येष्ठ नागरीक सम्मान, संरक्षण, सुरक्षा गर्नु ।
- बालबालिकाहरूको उचित संरक्षण, विकास र सशक्तिकरण गर्न बालमैत्री वातावरण सिर्जना गर्नु ।
- जनजाति, सिमान्तकृत समुह, अल्पसंख्यकहरूका लागि निर्णय तहमा मुल प्रवाहिकरण गर्नु ।

५.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२ /८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
लक्षित वर्गका लागि वजेट विनियोजन (महिला बालबालिका, पिछडिएका, विपन्न वर्ग)	प्रतिशत	३५	३७	३९	४१	४२
राष्ट्रपति महिला उत्थान कार्यक्रमबाट लाभान्वित महिला	संख्या	५०	६०	७०	८०	८५
सामाजिक सुरक्षाबाट लाभान्वित जनसंख्या	प्रतिशत	११२४	११५०	१२००	१२५०	१४००
सम्पत्ति माथिको स्वामित्व भएका महिला	प्रतिशत	५.६	८	१०	१२	१४
व्यवसायिक सीपमूलक तालिम प्राप्त महिला	संख्या	२००	२२५	२५०	३००	३५०
महिला उद्यमशीलता, क्षमता तथा सीप विकास कार्यक्रमका लागि वजेट व्यवस्था	रु. लाख	१०	१३	१५	१८	२०

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२ /८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
लक्षित वर्गका लागि बजेट विनियोजन (महिला बालबालिका, पिछडिएका, विपन्न वर्ग)	प्रतिशत	३५	३७	३९	४१	४५

५.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	दलित जनजाति लक्षित कार्यक्रम	लक्षित वर्गको क्षमता अभिवृद्धि गर्ने	२०८२/८३- २०८४/८५	१५००	लक्षित वर्गको क्षमता अभिवृद्धि भएको हुने
२	महिला लक्षित कार्यक्रम		२०८२/८३- २०८४/८५	१४००	
३	बालबालिका लक्षित कार्यक्रम		२०८२/८३- २०८४/८५	१५००	
४	ज्येष्ठ नागरिक लक्षित कार्यक्रम		२०८२/८३- २०८४/८५	१२००	
५	अपाङ्गता लक्षित कार्यक्रम		२०८२/८३- २०८४/८५	१५००	
६	अल्पकालीन सेवा केन्द्र		२०८२/८३- २०८४/८५	५०००	
७	व्यक्तिगत घटना दर्ता अभियान सञ्चालन		२०८२/८३- २०८४/८५	५०००	

५.४.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आब	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	५१३०	१०२६	४१०४	५१३	४१०४	५१३
२०८३/८४	६८४०	१३६८	५४७२	६८४	५४७२	६८४
२०८४/८५	५१३०	१०२६	४१०४	५१३	४१०४	५१३
जम्मा	१७१००	३४२०	१३६८०	१७१०	१३६८०	१७१०

५.५ युवा तथा खेलकुद

५.५.१ पृष्ठभूमि

राष्ट्रिय विकासमा युवा सहभागिता अभिवृद्धि गर्दै राजनीतिक, सामाजिक, साँस्कृतिक र आर्थिक अधिकारहरुको पूर्ण उपयोग गर्ने वातावरण तयार गरी युवाको सर्वाङ्गीण विकास, सशक्तिकरण र युवा उद्यमशीलताका लागि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगारी लगायतका क्षेत्रमा विशेष अवसर प्रदान गर्ने संवैधानिक व्यवस्था रहेको छ। उद्यमशील युवा मुलुकको विकासका संवाहक हुन्। खेलकुद शारीरिक तथा मानसिक विकासको महत्वपूर्ण माध्यम हो। त्यसैले युवा तथा खेलकुदको विकास बिना गाउँपालिकामा विकास निर्माण र नविनतम कार्यहरु सम्भव हुँदैन।

गाउँपालिकाभित्र रहेका सबै वडाहरुमा युवा क्लबहरुको गठन गरिएको छ। यस्ता क्लबहरु खेलकुद तथा सामाजिक गतिविधिहरुमा संलग्न रहेका छन्। गाउँपालिकामा स्थानीय विद्यालयमा भएका खेल मैदान र गाउँपालिकामा रहेका खुल्ला चौरहरु नै खेलकुदका मुख्य पूर्वाधारहरु हुन्। यी खेलमैदानहरुको स्तरोन्नति गरी पूर्वाधार निर्माण गर्न जरुरी छ। पालिका स्तरिय खेलमैदानको आवश्यकता रहेको छ भने तेक्वान्दो, भलिबल, फुटबल, ब्याडमिन्टनको व्यवस्था गरिएको छ।

५.५.२ समस्या र चुनौती

समस्या

युवा शक्तिलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा परिचालन गर्न नसक्नु, युवामा दक्षता र क्षमताको कमीका साथै उनीहरूलाई उद्यमशील, रोजगारीमूलक र स्वरोजगार बनाउन नसक्नु, युवाहरुको क्रमागत विदेश पलायन हुनु, खेलकुदको विकासका लागि पूर्वाधारको अभाव हुनु, क्लब तथा खेलकुदसँग सम्बन्धित संस्थाको आयस्रोतमा कमी हुनु, खेलकुद प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक खेलकुदको कमी हुनु, राष्ट्रिय मापदण्ड अनुसारको खेलमैदान नहुनु, कराते, उसु, वास्केटबल लगायत इन्डोर खेलहरु नहुनु आदि प्रमुख समस्या हुन्।

चुनौती

युवा क्षमताको विकास गर्नु, युवा प्रतिभा पलायन रोक्नु, युवामा सकारात्मक सोचको निर्माण नहुनु, स्थानीय स्तरमा सिर्जना गर्न सकिने रोजगारीका सम्भावनाहरुमा युवाहरुको आकर्षण गराउनु, खेलकुद पूर्वाधारको निर्माण गर्नु, खेलकुद प्रतियोगिताहरु नियमित रुपमा आयोजना गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन्।

५.५.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

खेलकुदको विकास गरी युवा क्षमताको विकास गर्न सकिने, स्थानीय स्तरमा खेलकुदको नियमित कार्यक्रम गरी स्थानीय खेल प्रतिभाहरुको पहिचान र विकास गर्न सकिने, युवा लक्षित आय आर्जन कार्यक्रम सञ्चालन गरी युवाहरुलाई रोजगारीमा आवद्ध गराउन सकिने, स्थानीय बेरोजगार युवाहरुलाई उद्यमशील रोजगारीको सुनिश्चितता गर्न सकिने, स्थानीय स्तरमा खेलकुदलाई विकास र विस्तार गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

खेलकुद एकेडेमीको निर्माण गरी स्थानीय स्तरमा नै राष्ट्रिय खेलाडी उत्पादन गर्न सकिने, खेलकुद पूर्वाधार विकास गर्न स्थानहरु उपलब्ध हुन सकिने, स्थानीय खेल प्रतिभाहरुको माध्यमबाट गाउँपालिकाको पहिचानमा थप योगदान हुने, स्थानीय युवायुवातीहरुलाई स्वस्थ र स्फूर्त गराउन सकिने, दक्ष तथा तालिम प्राप्त युवाहरुलाई गाउँपालिकाले परिचालित गर्न सकिने, युवा विकासका लागि संवैधानिक व्यवस्था हुनु, रोजगार र स्वरोजगारका अवसर अभिवृद्धिका लागि सरकारको उच्च प्राथमिकता रहनु, युवा संलग्न स्थानीय संरचना रहनु, खेलकुद क्षेत्रको एकीकृत विकास रणनीतिक योजना निर्माण गर्ने गाउँपालिकाको नीति तथा कार्यक्रम रहेको, पालिका स्तरीय खेलकुद विकास समिति गठन गरी खेलकुद गतिविधि अगाडी बढाउन सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

५.५.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

स्वास्थ्यका लागि खेलकुद, युवाका लागि खेलकुद भन्ने अवधारण विकास गरी युवा शक्तिलाई सशक्त बनाउने उद्देश्य

- युवा शक्तिलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा परिचालन गर्नु ।
- स्वास्थ्य युवा एवं दरिलो जनशक्ती निर्माण गर्नु ।

५.५.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
स्थानीय तहको संरचनामा युवाहरुको संलग्नता	प्रतिशत	१५	१७	१८	२०	२२
क्रियाशील युवा क्लबहरु	संख्या	७		८		९
व्यवसायिक युवा खेलाडी	संख्या	१०	१२	१५	२०	२५
खेल अभ्यास प्रशिक्षण केन्द्र (कवर्डहल)	संख्या	१	-	-	-	-
खेलकुद मैदानहरु	संख्या	२०	२२	२४	२६	२८
पालिका स्तरीय खेलकुद प्रतियोगिता	संख्या	१	-	२	-	३

५.५.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	गाउँ पालिका स्तरीय खेलमैदान निर्माण	खेलकुद क्षेत्रको विकास गर्नु	२०८२/८३-८४/८५	३०००	खेलकुद क्षेत्रको विकास भएको हुने
२	वार्षिक साल बसाली कार्यक्रम		२०८२/८३-८४/८५	४०००	

५.५.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आब	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पुँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	२१००	४२०	१६८०	२१०	१६८०	२१०
२०८३/८४	२८००	५६०	२२४०	२८०	२२४०	२८०
२०८४/८५	२१००	४२०	१६८०	२१०	१६८०	२१०
जम्मा	७०००	१४००	५६००	७००	५६००	७००

परिच्छेद ६ : पूर्वाधार क्षेत्र

६.१ वस्ती, आवास भवन तथा सार्वजनिक निर्माण

६.१.१ पृष्ठभूमि

स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐनले प्राप्त तथा प्रदेश कानूनको अधीनमा रहि सुरक्षित वस्ती विकास र भवन निर्माण सम्बन्धी नीति, योजना तथा कार्यक्रम तर्जुमा, कार्यान्वयन, अनुगमन, नियमन र मूल्याङ्कन गर्ने तथा सरकारी भवन, विद्यालय, सामुदायिक भवन, सभागृह र अन्य सार्वजनिक भवन तथा संरचनाको निर्माण, मर्मत सम्भार, सञ्चालन र व्यवस्थापनको जिम्मा स्थानीय सरकारलाई दिएको छ । बजार क्षेत्रहरूमा केही निर्माण संरचनाहरू पक्की भएता पनि अधिकांश क्षेत्रमा कच्ची संरचना नै रहेको छ । तीव्र शहरीकरण नहुँदा अब निर्माण गरिने सार्वजनिक निर्माण तथा शहरीकरणलाई व्यवस्थित गर्न सहज भने हुने देखिन्छ । भवनहरू पनि अधिकांश परम्परागत माटोले जोडिएका भवनहरू छन् । गाउँपालिका क्षेत्रमा शहरी सेवा सुविधाहरूको वितरणको अवस्था विश्लेषण गर्दा हालको शहरी पूर्वाधार अपर्याप्त रहेको देखिन्छ । नयाँ सडकको निर्माण बढेको भएता पनि धेरै जसो सडकको अवस्था सुदृढिकरण गर्नुपर्ने देखिन्छ । खानेपानी, विद्युत तथा सञ्चारको अवस्था सन्तोषजनक रहेको छ । अन्य पूर्वाधार जस्तै ढल निर्माण, बसपार्क तथा हाट बजार व्यवस्थापन, फोहोर व्यवस्थापनका साथै गाउँपालिकाको संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्ने तर्फ पनि तत्काल ध्यान केन्द्रित हुन आवश्यक छ ।

यस गाउँपालिकामा हाल सम्म कार्यपालिका तथा प्रशासकीय भवन बनेको छैन भने सबै वडा कार्यलय भवन निर्माण भएको छ । सबै वडामा आधारभूत स्वास्थ्य केन्द्रहरू रहेका छन् । वडा नं. १, ३, ६ मा स्वास्थ्य चौकी रहेका छन् । वडा नं. २ मा ५ शैयाको पालिका स्तरीय प्राथमिक अस्पताल निर्माण सम्पन्न भई संचालनको अवस्थामा रहेको छ । पालिका स्तरीय खेलमैदान त्रिवेणी माध्यमिक विद्यालयको खेलमैदानमा प्रयोग भइरहेको छ । पालिका भित्र २५ प्रतिशत मात्र भूकम्प प्रतिरोधी विद्यालय भवन रहेको छ । बाह्रविसे बजार क्षेत्र र डके बजार क्षेत्रमा वस्ती विस्तार उच्च र अन्य क्षेत्रमा कम रहेको छ । सार्वजनिक निर्माणमा भवन निर्माण संहिता तथा न्यूनतम मापदण्ड लागु भएको छ । फुसको छानो विस्थापित गर्ने कार्यक्रम तिव्र गतिमा रहेको छ ।

६.१.२ समस्या र चुनौती

समस्या

योजनावद्ध वस्ती विकास गर्न नसकिएको, भवन संहिता पूर्ण रूपले लागु हुन नसकेको, ग्रामीणयुक्त छरिएर रहेको वस्ती भएकोले पूर्वाधार सेवा विस्तार गर्न कठिन । भौगोलिक बनावटको कारण सडक सञ्जालको कमी, प्रशासकीय भवन नभएकोले प्रशासनीय काम काजमा कठिनाइ हुनु, वडा कार्यलय भएता पनि पर्याप्त कक्षकोठा नहुनु, जनशक्ति, उपकरण र उपयुक्त स्वास्थ्य केन्द्र नभएकोले उपचारमा कठिनाइ हुनु, पालिका स्तरीय खेलकुद निर्माणमा कठिनाइ फलस्वरूप खेल क्षेत्र विकासमा कठिनाइ हुनु, बाल उद्यान, वृद्धश्रम, अपाङ्गमैत्री सार्वजनिक पुस्तकालय जस्ता भौतिक संरचना नहुनु, कतिपय विद्यालय भवन पुरानो र जीर्ण भएको, खाद्यपदार्थ संरक्षण गर्ने चिस्यान केन्द्र नभएको, जडिवुटी, रुद्राक्ष, अम्लिसो लगाएत वस्तु सम्बन्धी घरेलु उद्योग स्थापना नभएको, वडा स्तरीय खेलमैदान नभएको आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

योजना तथा निर्माण मापदण्ड कार्यान्वयन गरी सुरक्षित वस्ती विकास गर्नु, जोखिमयुक्त वस्तीहरू सुरक्षित स्थानमा स्थानान्तरण गर्नु । नयाँ घरहरू निर्माण गर्दा मौलिकता लोप हुँदै गएको, व्यवस्थित आवास, वस्ती विकास तथा सार्वजनिक निर्माणमा जग्गा प्राप्त गर्न । छरिएर रहेका वस्तीहरूमा सेवा सुविधा विस्तार गर्न आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

६.१.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

व्यवस्थित वस्ती विकास गरी शहरीकरणलाई व्यवस्थित गर्न सकिने, तीव्र शहरीकरण भई नसकेको हुँदा पूर्वाधार विकासलाई सहज हुने, सुरक्षित स्थानहरू पहिचान गरी सुरक्षित वस्ती तथा आवास निर्माण गर्न सकिने, भवन संहिता र निर्माण मापदण्डको पूर्ण कार्यान्वयन गर्ने सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

आवास तथा सार्वजनिक निर्माणमा स्थानीय सामग्रीहरू प्रयोग गर्न सकिने, भूकम्प प्रतिरोधी घर निर्माण गर्न सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन गरी व्यवस्थित र भूकम्प प्रतिरोधात्मक भवन निर्माण र वस्ती विकास गर्न सकिने, असुरक्षित र जोखिमयुक्त वस्तीहरूलाई स्थानान्तरण गरी एकीकृत वस्ती विकास गर्न सकिने, स्थानीय निर्माण व्यवसायी तथा कामदारहरूलाई दक्ष कालिगढको तालिम सञ्चालन गरी क्षमता अभिवृद्धि गर्ने, भवन तथा संरचनाहरूको अभिलेखिकरण र नक्सा पास गरी आन्तरीक आय वृद्धि गर्न सकिने, नयाँ घरहरू निर्माण गर्दा स्थानीय मौलिकता कायम राख्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

६.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

सुरक्षित आवास तथा वस्ती विकास गरी बसोवासलाई सहज बनाउने ।

उद्देश्य

- सबै वर्ग, क्षेत्र र तहका मानिसहरूको आवासमा पहुँच सुनिश्चित गर्नु ।
- गुणस्तरीय, व्यवस्थित, सुरक्षित र किफायती आवास तथा भवन निर्माण गर्नु ।

६.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
मापदण्ड र भूकम्प प्रतिरोधी प्रविधि अनुसार बनेका आवासीय भवन	प्रतिशत	०	०	२	३	४
सुरक्षित सार्वजनिक यातायातको उपलब्धता	प्रतिशत	६०	६०	७०	७५	८०
मापदण्ड अनुसार निर्माण भएका कार्यालय, विद्यालय तथा स्वास्थ्य भवन	प्रतिशत	२०	२०	२५	३०	३५

सूचक	एकार्ड	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८ २/८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
लैङ्गिकमैत्री, तथा अपांगमैत्री सार्वजनिक भवनहरू	प्रतिशत	४०	४०	४५	५०	५५
सार्वजनिक शौचालय	संख्या	१	१	१	०	०

६.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रःकार्यक्रम ःआयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	प्रहरी चौकी स्तरोन्नति भवन निर्माण	सार्वजनिक भवन तथा आवास क्षेत्रको प्रबलिकरण गर्नु	२०८२/८३- २०८४/८५	३०००	सार्वजनिक भवन तथा आवास क्षेत्रको प्रबलिकरण भएको हुने
२	फुसको छााना विस्थापन कार्यक्रम		२०८२/८३- २०८४/८५	१०००	
३	सार्वजनिक शौचालय (देवालय)		२०८२/८३- २०८४/८५	२०	

६.१.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पुँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	३६६००	३६६०	३२९४०		१८३००	१८३००
२०८३/८४	४८८००	४८८०	४३९२०		२४४००	२४४००
२०८४/८५	३६६००	३६६०	३२९४०		१८३००	१८३००
जम्मा	१२२०००	१२२००	१०९८००		६१०००	६१०००

६.२ सडक पूर्वाधार तथा यातायात

६.२.१ पृष्ठभूमि

स्थानीय तहहरूको सामाजिक, आर्थिक र भौतिक विकासमा सडक पूर्वाधार तथा यातायातको महत्वपूर्ण भूमिका हुने गर्दछ । सडक र यातायातको विकाससँगै स्थानीय उत्पादनहरूले बजारसम्मको सहज पहुँच पाउँछन् भने वरिपरिका अन्य बजार केन्द्र, शहर र पालिकाहरूसँग समेत सामाजिक आर्थिक अन्तरसम्बन्ध स्थापित हुन्छ । त्यसैले सडक र यातायात जस्ता भौतिक पूर्वाधारहरूलाई स्थानीय विकास प्रणालीबाट अलग्याएर हेर्न सकिदैन । विकास प्रणालीलाई वेवास्था गरेर बनाईने पूर्वाधारको उपयोगिता रहँदैन भने गुणस्तरीय सडक र यातायात प्रणाली बिना स्थानीय विकास र जनविजन पनि सहज र सबल हुँदैन । सडक तथा यातायात प्रणालीमा गरिने लगानीले आर्थिक विकासलाई समेत सहयोग पुर्याईरहेको हुन्छ ।

खादवारी-वाहविसे र चैनपुर-वाहविसे कच्ची ठूलो सडक तथा पालिका केन्द्रबाट प्रत्येक वडा क्षेत्रमा पुग्ने सडक सञ्जाल रहेको छ । प्रत्येक आर्थिक वर्षमा बजेट रकम अनुसार सडक स्तरोन्नति गरिएको छ । सडक यातायातका साधनको आंशिक प्रयोग भएको देखिन्छ । खादवारी-वाहविसे सडक खण्डमा पाइँठा खोला, सभाखोलामा पक्की पुल र भोटी खोला तथा वडा नं. ६-४ जोड्ने सडक पुल निर्माणाधिन रहेको छ । पुलको सहयोगले आवतजावतमा सहज भएको छ । वडा नं ६ को नयाँ बस्ती र वडा नं ३ को बाहविसे बजार जोड्ने पक्की मोटरवल पुल निर्माणको लागि कोशी प्रदेश सरकारबाट बहुवर्षिय योजना स्वीकृत भएले छिट्टै पुल बन्ने अपेक्षा राखिएको छ । गाउँपालिकाको केन्द्रदेखि वडा कार्यालयसम्म जाने सडकहरू ट्रयाक ओपन भई केहीमात्रामा गाउँपालिकाको मेशिनद्वारा स्तरोन्नति गरिएका छन् । यसका अतिरिक्त प्रत्येक वडा बस्तीहरूमा कच्ची सडकको पहुँच पुगेकोछ । बाहविसे डके खाँदवारी सडक खण्डको बाहविसे धुपुखोलासम्म सडक कालोपत्रे भएकोमा आ व २०८२।०८३मा डके बजारको जिरो प्वाइन्टसम्म सडक कालोपत्रे गर्ने गरि बजेट विनियोजन गरिएको छ ।

६.२.२ समस्या र चुनौती

समस्या

धुलाम्मे र हिलाम्मेको कारण वाहै महिना सडक सुचारूमा कठिनाई हुनु, भाडादर, निर्माण सामग्रीको मूल्य, उपभोग्य वस्तुको मूल्य उच्च हुनु, विरामीको समयमा नै उपचार हुन नसकी मृत्यु सम्म हुने गरेको, बढी वर्षाको कारण तत्काल बाटो अवरुद्ध हुने गरेको, बजार तथा वस्ती क्षेत्र संरक्षण सम्बन्धी ग्याविड वालको कमजोर कार्यक्रमले विपतको संभावना उच्च रहेको, अपेक्षित रूपमा सडक स्तरोन्नति नहुनु, सडक सञ्जालको गुणस्तरको कारण ग्रामीण भेगहरूमा आर्थिक गतिविधिहरूको कम हुनु, सडक निर्माणसँग नाली तथा ढल निर्माण नहुनु, अध्ययन ईञ्जिनियरिङ डिजाईन बिनै सडकहरूको ट्रयाक खोल्नु, सडक अधिकार क्षेत्र अनुसार सडक लगत कट्टा गर्नु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

सडक निर्माणको लागि लगानीको जुटाउनु, सडक निर्माणको लागि भौगोलिक कठिनाईले गर्दा सडक निर्माणमा कठिनाई हुनु, पहाडी भू-भाग भएकोले सडक निर्माणमा अत्यधिक लगानी आवश्यक पर्ने, गाउँपालिकाको न्यून आन्तरिक आय भएको हुँदा सडक पूर्वाधारमा लगानी बढाउनु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

६.२.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

डिजाईन अनुसार गुणस्तरीय सडक निर्माण गर्न सकिने, स्थानीय बजार र बस्तीहरूलाई सडक सञ्जालसँग जोड्न सकिने, नयाँ सडक निर्माण कार्यलाई निरुत्साहित गरी सडक स्तरोन्नतिलाई प्राथमिकता दिन सकिने, सडक निर्माण कार्यलाई व्यवस्थित गर्न सडक अधिकार क्षेत्रभित्र पर्ने जग्गाहरूको लगत कट्टा गर्न सकिने, सडक निर्माण र विस्तार गर्न स्थानीय सडक सम्बन्धी कानून निर्माण गरी कार्यान्वयन गर्न सकिने, सडक निर्माण गर्दा वातावरणलाई न्यून क्षति गरेर काम गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

सडक सञ्जालको विस्तार तथा स्तरोन्नति गरी पर्यटन तथा आर्थिक गतिविधि बढाउन सकिने, पूर्वाधारमा लगानी केन्द्रित गरी स्तरीय सडकहरू बनाउन सकिने, विभिन्न संघ संस्थाहरूले स्थानीय पुल, पुलेसाहरू र झोलुङ्गे पुल निर्माणमा सहयोग पुर्याउनु आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

६.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

सडक सञ्जालको विकास र विस्तार गरी जनताको पहुँचमा विकास गर्ने ।

उद्देश्य

- गाउँपालिकाको वस्तीहरूमा बाह्र महिना चल्ने सडक यातायातको पहुँच बढाई आवतजावतमा सहज बनाउनु
- सडक स्तरोन्नति, पुल पुलेसा निर्माण गरी दैनिक उपभोग्य वस्तु र निर्माण सामग्रीको उपभोग र उपयोग सहज गर्नु ।

६.२.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२ /८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
१२ महिना सञ्चालन हुने सडकको २ किमि वरपर बसोबास गर्ने जनसंख्याको अनुपात	प्रतिशत	६०	६०	६५	७०	७५
आसिसिढलान भएका सडकको लम्बाइ	किमि	१.५	२	२.५	३	३.५
कालोपत्रे सडक	कि.मि.	४.५	४.५	९	१३	१८
ग्राभेल सडक	कि.मि.	७	७	१०	१५	२०
धुले सडक लम्बाइ	किमि	१८५	२०५	२२५	२४०	२६०

६.२.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रःकार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	यातायात (सडक) गुरुयोजना अद्यावधिक गर्ने	सडक तथा पुल को सबलीकरण गर्नु	२०८३/८४	१५००	यातायात क्षेत्र को गुणस्तरीयता बढेको हुने
२	पालिका केन्द्रदेखि वडा जोड्ने सडक स्तरोन्नति		२०८२/८३- २०८४/८५	१०००००	
३	भित्री सडक स्तरोन्नति			१६००००	
४	पुल निर्माण			९००००	

६.२.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	१०५४५०	१०५४५	९४९०५	५२७२.५	५७९९७.५	४२१८०
२०८३/८४	१४०६००	१४०६०	१२६५४०	७०३०	७७३३०	५६२४०
२०८४/८५	१०५४५०	१०५४५	९४९०५	५२७२.५	५७९९७.५	४२१८०
जम्मा	३५१५००	३५१५०	३१६३५०	१७५७५	१९३३२५	१४०६००

६.३ सिंचाई

६.३.१ पृष्ठभूमि

स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ अनुसार स्थानीय साना सतह तथा भूमिगत सिंचाई प्रणालीको सञ्चालन तथा मर्मत सम्भार, सेवा शुल्क निर्धारण र सङ्कलन सम्बन्धी व्यवस्थापन गर्न सकिन्छ । तसर्थ भूमिमा बाह्रै महिना सिंचाई सुविधा पुग्यो कृषिको उत्पादकत्व बढाउन सिंचाईको दिगो व्यवस्था गर्न आवश्यक छ । सभापोखरी गाउँपालिका जलस्रोतमा नेपालकै दोस्रो ठूलो जिल्ला संखुवासभामा अवस्थित रहेको, तल्लो भेग, पहाडको खोंचमा पानीको प्रयाप्त उपलब्धता भएको, सभा खोला, लङ्खुवा खोला, ऐक्सुवा, ठकुवा, भोटे खोला, पिखुवा खोला आदि खोलाहरू भएकाले सिंचाई तथा खानेपानी प्रचुर मात्रा पुग्योउन सकिने ठाउँहरू रहेका छन् ।

गाउँपालिकामा कृषि उत्पादन र उत्पादकत्व बढाउन परम्परागत सिंचाई प्रणालीको मर्मत सम्भार र नयाँ प्रविधिमा आधारित सिंचाई प्रणालीको माध्यमबाट सिंचित कृषि क्षेत्रको विस्तार गर्नुपर्ने आवश्यकता देखिन्छ । सिंचाई पूर्वाधार निर्माणमा रणनीतिक महत्वका ठूला सिंचाई संघबाट, मझौला सिंचाई प्रदेशबाट र साना सिंचाई स्थानीय तहबाट लगानी परिचालन गर्ने व्यवस्था मिलाउन आवश्यक छ । सिंचाई प्रणालीको निर्माण पछिको मर्मत सम्भार, व्यवस्थापन एवम् सञ्चालनमा उपभोक्ता समुदायको सक्रिय सहभागिता थप सुदृढ गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ । सिंचाईको थप पूर्वाधार विकास र सम्पन्न सिंचाई प्रणालीको सुदृढीकरण गरी व्यवस्थित बनाउन लगानी वृद्धि गर्न आवश्यक छ ।

६.३.२ समस्या र चुनौती

समस्या

सिंचाई र निकासको अवस्था नहुनु, पहाडी भू-भाग भएकोले लिफ्टिङ्ग सिंचाई गर्न महंगो पर्नु, जलस्रोत धनी भएको ठाउँ भएता पनि उचित सदुपयोग गर्न नसकेको, भौगोलिक विकटता भएको ठाउँहरू रहेको, वर्षायाममा बाढी, पहिरो आदि प्रकोपले गर्दा खोलामा पानी बढ्ने, बाढि आउने र भूक्षय हुने, परम्परागत सिंचाई कुलोहरूको आवश्यक मर्मत सम्भार हुन नसक्नु, सिंचाई क्षेत्रमा न्यून बजेट विनियोजन हुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

नयाँ प्रविधिमा आधारित सिंचाई आयोजना विस्तार गर्नु, परम्परागत कुलोहरूको नियमित मर्मत सम्भार गर्नु, सिंचाई आयोजना तोकिएको समय र लागतमा सम्पन्न नहुनु, सिंचाई पूर्वाधार विकासका लागि लगानीको प्राथमिकता निर्धारण गर्नु, पानीजन्य प्रकोप नियन्त्रण गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

६.३.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

विद्यमान नदी, खोलाबाट सिंचाई सुविधा उपलब्ध गर्न सकिने, सिंचाई मार्फत स्थानीय कृषि उत्पादन र उत्पादकत्व बढाउन सकिने, यातायातको विस्तारसँगै सिंचाई पूर्वाधार विकास गर्न सहज हुनु, परम्परागत कुलोहरूको आवश्यक मर्मत सम्भार गरि सिंचाई सुविधा बढाउन सकिने, कृषि उत्पादन र उत्पादकत्व बढाई व्यवसायिकरणका लागि पर्याप्त सिंचाई सुविधा उपलब्ध गराउन सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

सिंचाईको लागि पर्याप्त खोलानाला उपलब्ध हुनु, सिंचाई विकास र व्यवस्थापनमा कृषक उपभोक्ताको पहुँच र सहभागिता बढ्दै जानु, स्थानीय कृषि उत्पादन र उत्पादकत्व बढाउन सकिने, कृषिमा बाह्य ज्ञान सीपको उपयोग तथा बाह्य लगानी भित्र्याउन सकिने, कृषि विधिधिकरणद्वारा रोजगारी सिर्जना गर्न सकिने, युवा पुस्तालाई कृषिमा आकर्षित गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

६.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

कृषियोग्य भूमिमा दिगो, भरपर्दो सिंचाई सुविधा विकास गरी उत्पादनमा वृद्धि ल्याउने ।

उद्देश्य

- कृषियोग्य जमिनमा सिंचाई सुविधा पुर्याइ खेती वाली लगाउन, उत्पादन गर्न सहज बनाउनु ।
- उपयुक्त प्रविधि मार्फत कृषियोग्य भूमिमा सिंचाई सेवा विस्तार गरी उपभोग्य वस्तु तथा आयआर्जनमा सुधार ल्याउनु ।

६.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाई	२०८०/८१	२०८१/८२	मध्यम कालीन लक्ष्य		
		सम्मको उपलब्धि	सम्मको अनुमानित उपलब्धि	२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
खेतीयोग्य जमिन मध्ये सिंचित भूमि	हेक्टर	४२३	४५०	५००	५२५	५५०
वर्षाको आकाशे पानीमा निर्भर सिंचाइ भूमि	हेक्टर	७९०	७५०	७००	६००	५००
खोला तथा मुहानहरुबाट सिंचित भूमि	हेक्टर	५००	४५०	४००	३५०	३००
वर्षभरी नियमित सिंचित क्षेत्र	हेक्टर	२००	२२५	२५०	२७५	३००
स्तरोन्नति तथा मर्मत संभार भएका पानी कुलो	संख्या	५	६	७	८	९

६.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	प्रत्येक वडामा सिंचाइ विस्तार तथा स्तरीकरण आयोजना	सिंचाइ आयोजनाको क्षमता अभिवृद्धि गर्नु	२०८२/८३-२०८४/८५	१०००००	सिंचाइ आयोजनाको क्षमता अभिवृद्धि भएको हुने

६.३.७ बिषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	५४०००	१०८००	४३२००	-	५४०००	-
२०८३/८४	७२०००	१४४००	५७६००	-	७२०००	-
२०८४/८५	५४०००	१०८००	४३२००	-	५४०००	-
जम्मा	१८००००	३६०००	१४४०००	-	१८००००	-

६.४ जलस्रोत, विद्युत तथा वैकल्पिक उर्जा

६.४.१ पृष्ठभूमि

संविधानले साना जल विद्युत र वैकल्पिक उर्जा स्थानीय सरकारको अधिकार सूचीमा राखेको छ । आम नागरिकको जीवनलाई सरल र सहज बनाउन र आर्थिक तथा सामाजिक विकास गर्न विद्युत तथा उर्जाको महत्वपूर्ण स्थान छ ।

स्थानीय सभाखोला लघु जलविद्युत आयोजना स्थानीय वासीको लगानीमा करीव ४० किलोवाटको संचालनमा रहेको छ । जल विद्युत आयोजना संचालनका प्रचुर सम्भावना भएको छ । विभिन्न हाइड्रोपावर कम्पनीबाट १ वटा संचालनमा र बाँकी ३ वटा निर्माणाधिन रहेको छ । विपन्न घर धुरीलाई सोलार प्यानल वितरण, सुधारिएको चुलो निशुल्क मिटर वक्स वितरण गरिएको छ । सडक बत्ती जडानको कार्यक्रम अगाडी बढाएको छ । लगभग ९० प्रतिशत जनताले विद्युत उपयोग गरेको छ । गाउँपालिकामा लघु जलविद्युतको पहुँच बढेसँगै बिजुलीबाट खाना पकाउने घरहरूको सङ्ख्या पनि क्रमश बढ्दै गईरहेको छ । विद्युत नपुगेका ठाउँमा विद्युतीकरण गर्नु, काठे पोल भएका स्थानमा फलामे पोलको व्यवस्था, नाङ्गो तारलाई प्लाष्टिकको तारमा परिणत गर्नुपर्ने देखिन्छ ।

६.४.२ समस्या र चुनौती

समस्या

१००% विद्युत सेवा पुर्याउन नसकिएको, पालिकाको पूर्ण स्वामित्वमा जलविद्युत आयोजना संचालनमा नरहेको, हाइड्रोपावरलाई नियमन निगमन सम्बन्धी स्पष्ट ऐन, कानून बन्न नसकेको, विपन्न वर्ग विभाजन गरी गरीब लक्षित कार्यक्रम संचालन नहुनु, खोला तथा पर्याप्त पानीको श्रोत भएर पनि यसको अधिकतम उपयोग हुन नसकेको, लघु जलविद्युतमा अपेक्षित रूपमा वाह्य लगानी आकर्षित हुन नसक्नु, आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

इन्धनको श्रोतको रूपमा दाउराको प्रयोगले गर्दा वनमा अत्याधिक चाप परेको, स्थानीय लघु जलविद्युत आयोजना निर्माण गरी बिजुली उत्पादन गर्नु, स्थानीय घरधुरीहरूमा विद्युत खपत बढाउनु, विद्युतीकरणको लागि बजेटको व्यवस्था गर्नु, स्थानीयवासीलाई लघु जलविद्युतमा वाह्य लगानी आकर्षित गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

६.४.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

प्रशस्त खोलानालाहरू रहेकोले लघु जलविद्युत उत्पादन गर्न सकिने, छिमेकी पालिकाबाट विद्युत नपुगेका स्थानमा विद्युत विस्तार गर्न सकिने, गाउँपालिकामा वैकल्पिक ऊर्जाको सम्भावना समेत प्रसस्त रहेको, सिंचाईमा विद्युतको प्रयोग गरी कृषि उत्पादन बढाउन सकिने, विद्युत उत्पादनको लागि जलश्रोतको उपलब्धता आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

स्थानीय लघु जलविद्युतबाट उत्पादित बिजुली निर्यात गर्न सकिने, स्थानीय लघु तथा घरेलु उद्योगहरूको प्रवर्द्धनबाट विद्युत खपत बढाउन सकिने, कृषिमा विद्युतीकरण गरी कृषि उत्पादन र उत्पादकत्व बढाउन सकिने, वैकल्पिक उर्जालाई प्रवर्द्धन गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

६.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

विद्युत तथा वैकल्पिक ऊर्जा विकास गरी जीवन शैलीमा सुधार गर्ने ।

उद्देश्य

- पालिका भित्रका सबै घरधुरीमा विद्युत सेवा पुर्याई जीवन शैलीमा सहज ल्याउनु ।
- गाउँपालिकाको जलस्रोतको संरक्षण र उपयोग गरी लघु/घरेलु उद्योगहरूमा ऊर्जाको पहुँच स्थापित गराउनु ।

६.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
केन्द्रीय विद्युत लाइन प्रसारणबाट लाभान्वित घरधुरी	संख्या	२३००	२३२५	२३५०	२४००	२४५०
विद्युत सेवामा पहुँच प्राप्त घरधुरी	संख्या	२४५०			२४७५	
सोलार प्रणालीमा आवद्ध घरधुरी	संख्या	६०	५५	५०	४०	३०
खाना पकाउन एलपि ग्याँस प्रयोग गर्ने घरधुरी	संख्या	११००	१०५०	१०००	९००	८००
सुधारिएको वा धुँवा रहित चुल्हो जडान भएका घरधुरी	संख्या	२१००	२१५०	२२००	२२५०	२३२५
खाना पकाउन एलपि ग्याँसको सट्टामा विद्युतीय ऊर्जा (इन्डक्सन) प्रयोग गर्ने घरधुरी	संख्या	०	५०	१००	१५०	२२५

६.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रःकार्यक्रम ÷ आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	विद्युतीय पूर्वाधार सम्बर्धन कार्यक्रम (आयोजना निर्माण, सडक बत्ति जडान तथा सालबसाली कार्यक्रम)	विद्युतीय पहुँच अभिवृद्धि गर्नु	२०८२/८३-२०८४/८५	५००००	विद्युतीय पहुँच अभिवृद्धि भएको हुने

६.४.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश

२०८२/८३	१५०००	१५००	१३५००	७५०	८२५०	६०००
२०८३/८४	२००००	२०००	१८०००	१०००	११०००	८०००
२०८४/८५	१५०००	१५००	१३५००	७५०	८२५०	६०००
जम्मा	५००००	५०००	४५०००	२५००	२७५००	२००००

६.५ सूचना, सञ्चार तथा प्रविधि

६.५.१ पृष्ठभूमि

सूचना, सञ्चार तथा प्रविधिमा भएको विकासले गर्दा आधुनिक विश्व नै एक ठाँउमा रूपान्तरण भएको छ । दिगो विकासका बृहत्तर लक्ष्य हासिल गर्न अवलम्बन गरिएका रणनीतिहरूको केन्द्रमा सूचना तथा सञ्चार प्रविधि रहँदै आएको छ । सूचना तथा सञ्चार मानव जीवनको अभिन्न अङ्गको रूपमा स्थापित भएको छ । संविधानले समेत सूचना सम्बन्धी हकलाई मौलिक हकको रूपमा व्यवस्थित गरेको छ । यसको प्रयोग मार्फत प्राप्त हुने अन्य लाभका अतिरिक्त यो प्रविधिको प्रयोगबाट गाउँपालिकामा सुशासनको प्रत्याभूत गर्नुका साथै पारदर्शी एवम् प्रभावकारी सार्वजनिक व्यवस्थापनको लागि यथेष्ट पूर्वाधार निर्माण गर्न सकिन्छ । सूचना प्रविधि र सूचना प्रविधिमा आधारित विभिन्न सेवाहरू लगायत अन्य उद्योग एवम् सेवाजन्य व्यवसायको वृद्धिद्वारा गाउँपालिकाको मात्र नभएर बृहत्तर राष्ट्रिय लक्ष्यहरू हाँसिल गर्नमा समेत सहायक हुने देखिन्छ ।

गाउँपालिका तथा वडा कार्यलयहरूमा आइ.सि.टि. जडान भएको, विद्यालयहरूमा करीव ३०% क्षेत्रमा आइ.सि.टि. जडान भएको, नेट, इन्टरनेट मार्फत कार्यक्रम सुचारु भएको, बजार क्षेत्रमा सि.सि. क्यामेरा जडान गरिएको, स्थानीय एफ.एम रेडीयो संचालन नभएको, सूचना तथा संचार विमुख घरपरिवारको संख्या उच्च रहेको छ । गाउँपालिकामा समेत सक्षम प्राविधिक जनशक्तिको कमी हुँदा सेवालाई चुस्त दुरुस्त बनाउन सकिएको छैन ।

६.५.२ समस्या र चुनौती

समस्या

आइ.सि.टि., इन्टरनेट जडान भएता पनि पटक पटक अवरोध भइरहने गरेको, भौगोलिक विकटता वितरित वस्तीको कारण सूचना तथा संचार विद्युत सेवामा सुधार दिन नसकिएको, सबै सामाजिक संस्थामा इन्टरनेटको पहुँच नभएकोले प्रभावकारी कार्यक्रम संचालन गर्न नसकिएको, जडान भएका सामग्रीहरूमा पटक पटक मर्मत संभार गर्दा बढी लागत भइरहने, आवश्यक जनशक्ति र प्राविधिक ज्ञानको अभाव हुनु, आवश्यक कानुन र नीतिगत व्यवस्थाको अभाव हुनु, नीति अनुरूप संस्थागत हुन नसक्नु, महंगो पर्ने भएकोले सबैको पहुँच हुन नसक्ने, आवश्यक बजेट नहुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

मोबाईल टावरहरू विस्तार गर्नु, ईन्टरनेट र वाईफाईको गुणस्तर र पहुँच बढाउनु, आवश्यक जनशक्ति र प्राविधिक ज्ञान बढाउनु, नीति अनुरूप संस्थागत हुनु, प्रयोगसँगै साईबर सुरक्षाको चुनौती हुनु, बौद्धिक सम्पत्तिको संरक्षण तथा सुरक्षा संवेदनशीलता राख्नु, आवश्यक कानुन र नीतिगत व्यवस्था गर्नु, सामाजिक सञ्जालको बढ्दो प्रयोगबाट आउने चुनौती र विकृतिहरू नियन्त्रण गर्नु, सूचना तथा सञ्चार प्रविधिका क्षेत्रमा विभिन्न परियोजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयनमा चुनौती आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

६.५.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

सञ्चार क्षेत्रको प्रवर्द्धन र विकासका लागि ठूला सञ्चार गृहसँग समन्वय र सहकार्य गर्न सकिने, सूचना प्रविधिको प्रयोगले पालिकाको सेवा प्रवाहलाई सरल, चुस्त गर्न सकिने, प्रेस गृह, मेडिया सेन्टर, टेलि सूचना केन्द्र, अनलाईन मेडिया हाउस छिटो र सहज रूपमा सूचना जनमानसमा पुर्‍याउन सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

नेपालको संविधानले प्रदान गरेको सूचना, सञ्चार, प्रकाशन र प्रसारण सम्बन्धी हकहरूको सुनिश्चितता हुने, गाउँपालिकाका सबै वडा, टोल र वस्तीहरूसम्म ल्याण्डलाईन, मोबाईल सेवा र ईन्टरनेट सेवाको पहुँच स्थापित हुने, गाउँपालिकाबाट प्रवाह हुने सेवाहरू सरल, सहज र पारदर्शी हुने, गाउँपालिकाका काम कारवाही र भुक्तानी प्रणाली पारदर्शी हुने, समय र पैसाको बचत हुने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

६.५.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

सूचना तथा संचार प्रविधिको विकास गरी आधुनिक प्रविधिको विकास गर्ने ।

उद्देश्य

- भरपर्दो सूचना तथा सञ्चार सेवा र सुविधा विस्तार गरी प्रविधिमैत्री वातावरण निर्माण गर्नु ।
- मोबाईल र टेलिफोन सेवाको पहुँच सबै नागरिकमा सुनिश्चित गर्नु ।

६.५.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
मोबाइल फोन प्रयोगकर्ता	प्रतिशत	९१	९३	९५	९७	१००
ल्याण्डलाईन टेलिफोन वितरण	संख्या	३५	३७	४२	४६	५०
इन्टरनेट सेवा उपलब्ध हुन नसकेका क्षेत्र (घरघुरी)	प्रतिशत	८६.५	७५	६५	५५	५०
स्थानीय केवल नेटवर्क तथा इन्टरनेट सेवा प्रदायक संस्थाहरू	संख्या	०	०	-	-	१
निःशुल्क इन्टरनेट सेवा वाइफाई उपलब्ध भएका क्षेत्रहरू	संख्या	०	०	१	२	३
विद्युतीय प्रणालीमा आधारित पालिकाका सेवाहरू (अनलाईन सेवा)	संख्या	७	८	९	१०	११

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
विद्यालय लगायत सार्वजनिक भवन तथा कार्यालयहरुमा सुचारु इन्टरनेट सेवा	संख्या	३४	३५	३६	३७	३८
सार्वजनिक स्थल तथा कार्यालयहरुमा जडित सि.सि.क्यामेरा	संख्या	३०	३२	३५	४०	४५

६.५.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	सूचना, संचार तथा प्रविधि तालिम	सूचना प्रविधि को पहुँच सुदृढ गर्ने	-	२०००	सूचना प्रविधि को पहुँच सुदृढ भएको हुने
२	गाउँपालिका, वडा कार्यालय, स्वास्थ्य संस्था, विद्यालयहरुमा प्रभावकारी इन्टरनेट तथा सि.सि क्यामारा जडान		-	१५००	
३	वडाबाट हुने सेवा सुविधालाई प्रविधियुक्त बनाउने		-	२०००	

६.६.७ बिषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आब	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	१६५०	१६५	१४८५	४९५	०	११५५
२०८३/८४	२२००	२२०	१९८०	६६०	०	१५४०
२०८४/८५	१६५०	१६५	१४८५	४९५	०	११५५
जम्मा	५५००	५५०	४९५०	१६५०	०	३८५०

परिच्छेद ७: वन, वातावरण तथा विपद् व्यवस्थापन

७.१ वन तथा जैविक विविधता

७.१.१ पृष्ठभूमि

वन क्षेत्र एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक सम्पदा हो । वन, वनस्पति, वन्यजन्तु, जैविक विविधता समेट्ने यो क्षेत्र प्रत्येक्ष रूपमा पर्यापर्यटन, जलविद्युत, कृषि, पशुपालन, स्वच्छ पर्यावरण र वन तथा जडिबुटीमा आधारित पर्यटनको विस्तार समृद्धिका आधार हुन् । स्वच्छ पर्यावरण, हरियाली, जैविक विविधता, प्राकृतिक रमणीयता, समुन्नत जलाधार, प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापनमा महिला, आदिवासी तथा स्थानीय समुदायको सहभागिता एवम् पहुँच र लाभको निष्पक्ष र न्यायोचित वितरण सुखी नेपालीका महत्वपूर्ण सूचक हुन् । नेपालमा उपलब्ध वानस्पतिक स्रोत तथा जडिबुटीको अध्ययन, अनुसन्धान, अभिलेखीकरण तथा दर्ता र गुण पहिचान गर्दै मुलुकभित्र मूल्य अभिवृद्धि गरी तुलनात्मक लाभ लिन सकिने प्रचुर सम्भावना रहेको छ । वन तथा जल सम्पदा जैविक विविधताको भण्डार मात्र होईनन्, यी सम्पदाहरू मानव, जीवजन्तु लगायत समग्र पर्यावरणीय सन्तुलनको आधार हुन् । यी सम्पदाहरू कृषि, उर्जा, जल तथा उद्योग धन्दाको लागि कच्चा पदार्थको स्रोत, बहुसङ्ख्याक जनसङ्ख्याको जीविकाको आधार र पर्यटकीय हिसाबले मनोरञ्जनको माध्यम पनि हुन् । यिनै विविध कारणले गर्दा नेपालको संविधानमा वातावरणीय सन्तुलन र स्वच्छताको लागि वन क्षेत्र र जैविक विविधताको संरक्षण गर्न राज्यले प्राथमिकता दिनु पर्ने प्रावधान गरेको छ । वन र जैविक विविधतालाई सन्तुलन राख्नको लागि प्राप्त सरकाले वातावरण संरक्षण ऐन, २०७६ र वातावरण संरक्षण नियमावली, २०७७ तयार गरी हरेक स्थानीय तहलाई आफैले वातावरण तर्जुमा योजना निर्माण गर्न पाउने प्रावधान तय गरेको छ । यसले स्थानीय तहको वन व्यवस्थापन, जलाधार संरक्षण तथा जैविक विविधता संरक्षणमा ठूलो टेवा पुग्ने छ ।

सभापोखरी गाउँपालिकामा सामुदायिक वन २९ वटा रहेको र सबैमा उपभोक्ता समिति गठन भएको छ भने सबै वन क्षेत्रमा आगलागीको संभावना बढी रहेको छ । नर्सरी विरूवा उत्पादन तथा वितरण नभएको अवस्था रहेको छ । वृक्षारोपण तथा चराचुरुङ्गीको अभिलेख तथा प्रोफाइल निर्माण भएको छैन । चिडियाखानाको आवश्यकता जनताले बुझेता पनि स्थापना हुन नसकेको अवस्था छ । वन्य जनावर (बाँदर)बाट बालीनालीमा क्षति पुगेको छ र हिसांमक जनावरबाट मानवीय क्षतिको पनि अवस्था रहेको छ । यस गाउँपालिकामा जडीबुटीको उपलब्धता (अलैंची) प्रचुर मात्रामा रहेको छ ।

७.१.२ समस्या र चुनौती

समस्या

वन क्षेत्र सिमाङ्कनमा विवाद हुनु, भिरालो भू-भाग हुनु र वन संरक्षण प्रति जनचेतनाको कमी, प्राविधिक ज्ञानको कमी तथा आर्थिक समस्या हुनु, नर्सरी विरूवा उत्पादन गर्न प्राविधिक ज्ञान तथा पूर्वाधारको अभाव हुनु, वन संरक्षण तथा जैविक विविधता संबर्द्धन कार्यविधिको अभाव हुनु, वन्यजन्तु र जनावर संख्यात्मक वृद्धि हुनु, वस्ती नजिकै वन जंगल भई आहाराको समस्या हुनु, वनमा रहेका जडिबुटीहरूको संरक्षण हुन नसकेको, उपलब्ध जडीबुटीको उचित प्रसोधन र बजार व्यवस्थापन नभएको, वनको दिगो व्यवस्थापन हुन नसकेको, वन पैदावार, भू-क्षय, आगलागी जस्ता प्राकृतिक प्रकोप रहेको, वन फडानीको कारण पानीका स्रोत र मुहानहरूको संरक्षण नभएको, डढेलो र वन जथाभावी फडानी नियन्त्रण नभएको आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

विकास र वातावरण बीच सन्तुलन कायम गर्नु, वन तथा वातावरण संरक्षणलाई आर्थिक क्रियाकपालसँग आवद्ध गर्नु, डढेलो नियन्त्रण र जथाभावी वन फडानी नियन्त्रण गर्नु, वन पैदावार र वन्यजन्तुहरूको संरक्षण गर्नु, दाउरा, घर निर्माण र फर्निचरको लागि वन फडानी रोक्नु, वन, वातावरण तथा जैविक विविधता सम्बन्धी जनचेतनामा वृद्धि गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

७.१.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

विद्यमान प्राकृतिक स्रोतहरूको समुचित प्रयोग गरी आय आर्जन बढाउन सकिने, जैविक विविधता संरक्षण गरी पर्या पर्यटनको विकास हुने, वातावरणीय सरसफाइ तथा हरियाली प्रवर्द्धन हुने, सामुदायिक वनहरूमा जङ्गल पार्कको अवधारणा लागू गरी आय श्रोत वृद्धि गर्न सकिने, वन संरक्षणको लागि सामुदायिक वन उपभोक्ता समितिहरूलाई थप जिम्मेवार बनाउन सकिने, सामुदायिक वन उपभोक्ता समिति र वन उपभोक्ताहरूलाई वन संरक्षण सम्बन्धी अभिमुखीकरण तालिम सञ्चालन गर्न सकिने, समुदायको संलग्नतामा वृद्धि भई वातावरण प्रति जनतालाई उत्तरदायी बनाउने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

वनको दिगो व्यवस्थापन भई स्थानीयवासीहरूको जीवनस्तरमा सकारात्मक प्रभाव पर्ने, भू-स्खलन नियन्त्रण तथा वन पैदावार, वन्यजन्तु र जैविक विविधताको संरक्षण हुने, भू-क्षय, पहिरो, आदिको प्रकोप न्यूनीकरण हुने, पानीका स्रोत र मुहानहरूको संरक्षण हुने, वनमा रहेका जडिबुटीहरूको संरक्षण हुने, डढेलो र वन जथाभावी फडानी नियन्त्रण हुने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

७.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

वन क्षेत्र सिमाङ्कन गरी जनचेतना जगाई समन्वय मार्फत कार्यविधिबाट जडिबुटी प्रशोधन तथा व्यवस्थापन गर्ने ।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन मार्फत वन पैदावारको उत्पादनमा वृद्धि तथा वन, वन्यजन्तु र जैविक विविधताको संरक्षण गर्नु ।

७.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यम कालीनलक्ष्य

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/ ८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
जैविक विविधता संरक्षण सम्बन्धी जनचेतनामूलक अभिमुखी कार्यक्रमहरू संचालन	संख्या	५	७	१०	१२	१५
सामुदायिक वनले ओगटेको क्षेत्र	हेक्टर	४७७३.४३	-	-	-	-

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/ ८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
वन्यजन्तुवाट अन्नवालीमा पुगेको वार्षिक क्षति	रु.लाख	५	-	-	-	-
वृक्षारोपण गरिएको क्षेत्र	हेक्टर	१००	२००	३००	४००	५००
संरक्षित चरन क्षेत्र	संख्या	५			६	
वन जङ्गलको कूल क्षेत्रफल (कूल भूमिको)	प्रतिशत	८८	८९	९०	९१	९२
जडीवुटीमा आधारित उद्योग र रोगजारी	संख्या	-	-	१	-	२
गैरकाष्ठ वन पैदावारको व्यवसायिक खेती क्षेत्र	हेक्टर	१५००	-	१५५०	-	१६००

७.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रःकार्यक्रम ःआयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	स्थानीय वन ऐन	वन को क्षेत्राधिकार तोक्ने	२०८२/८३- २०८४/८५	१०००	वन को प्रयोग बाट गाउँ पालिकाको
२	वृक्षारोपण कार्यक्रम	सार्वजनिक जग्गा मा वन विकास गर्नु	२०८२/८३- २०८४/८५	१५००	स्रोतमा अभिवृद्धि भएको हुने

७.१.७ बिषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	७५०	७५	६७५	२२५	०	५२५
२०८३/८४	१०००	१००	९००	३००	०	७००
२०८४/८५	७५०	७५	६७५	२२५	०	५२५
जम्मा	२५००	२५०	२२५०	७५०	०	१७५०

७.२ भू-संरक्षण तथा जलाधार व्यवस्थापन

७.२.१ पृष्ठभूमि

यो गाउँपालिका पहाडी भूगोल भएको कारण यहाँ पहिरो र भू-क्षयको समस्या रहेको छ । भू-क्षयको प्रत्यक्ष सम्बन्ध जलाधारसँग जोडिएको छ । दिगो प्राकृतिक श्रोत व्यवस्थापन र स्थानीय जनताको जिविकोपार्जनको

लागि जलाधार व्यवस्थापन एउटा यस्तो पद्धति हो जसले सबै विषयहरू जस्तै वन, कृषि, चरन आदिलाई समाहित गरेको हुन्छ । यस पद्धतिले जलाधार क्षेत्रको दुवै माथिल्लो तटिय र तल्लो तटिय क्षेत्रमा रहेका बहुसरोकारवालाहरूको बीचमा अन्तरक्रिया र सहयोग गराउँदछ । स्थानीय जनताहरूको जीविकोपार्जनमा सुधार ल्याउन, जलाधार क्षेत्रको माथि र तल दुवै क्षेत्रको पर्यावरण र अवस्थालाईसँगै लैजान र जलाधारका स्रोतहरूको दिगो व्यवस्थापन गर्न विभिन्न नीति निर्माता, अनुभवी व्यक्तिहरू र समुदायको बीचमा नियमित बहस, अन्तरक्रिया र छलफल गर्ने पद्धतिको विकास गर्नु अपरिहार्य छ ।

सभापोखरी गाउँपालिकाले आफ्नो क्षेत्रभित्र भू-संरक्षण, जलाधार व्यवस्थापन, पहिरो तथा भू-क्षय नियन्त्रणलाई स्थानीय सरकारको मुख्य जिम्मेवारीको रूपमा लिई विपद् व्यवस्थापन कोषको गठन गर्ने नीति लिएको छ । पहिरो र भू-क्षय पहिरो यहाँका प्रमुख विपद्हरू भएतापनि यस्ता विपद्हरूबाट विगतका वर्षहरूमा गाउँपालिकामा ठूलो क्षति भएको छैन । गाउँपालिकाले पहिरो तथा भू-क्षय नियन्त्रणको लागि सडक लगायत विकास निर्माण गर्दा वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कनलाई अनिवार्य गरिनु पर्दछ । साथै पहिरो तथा भू-क्षय नियन्त्रणको लागि स्थानीय परम्परागत प्रविधिको प्रयोगलाई समेत जोड दिनुपर्दछ ।

हाल यस सभापोखरी गाउँपालिकामा नदी किनारमा वृक्षारोपण नभएको, सडक छेउमा ड्रेनवाल निर्माण आंशिक मात्रामा भएको, पोखरी तथा ताल संरक्षण (सभापोखरी) पूर्ण रूपमा नभएको, भू-क्षय लगायत संवेदनशील क्षेत्र पहिचान तथा नक्साङ्कन नभएको, बाढी पहिरोबाट मानवीय क्षति भएको, सिमसार तथा पोखरी क्षेत्रहरू संरक्षण तथा वैज्ञानिक व्यवस्थापन नभएको, जथाभावी सडक निर्माण भएको र बाढी पहिरोमा वृद्धि भएको, नदी किनारमा आंशिक तटवन्धन भएको अवस्था छ ।

७.२.२ समस्या र चुनौती

समस्या

पहाडी भू-भाग भएकोले भौगोलिक समस्याका कारण भू-क्षय र पहिरोको जोखिम हुनु, पहिरो तथा भू-क्षय नियन्त्रणको लागि गाउँपालिकासँग पर्याप्त बजेट (आर्थिक कठिनाई) प्रविधि र यन्त्र उपकरण नभएको, आवश्यक प्राविधिक तथा दक्ष जनशक्तिको अभाव हुनु, पहिरो तथा भू-क्षय सम्बन्धी जनचेतनाको अभाव हुनु र स्थानीय तहको ध्यान कम हुनु, अव्यवस्थित बसोबास र भौगोलिक बनावटको समस्या हुनु, पहिचान नगरी जथाभावी सडक निर्माणको कारण बाढी पहिरोको समस्या भएको, कमजोर सडक पूर्वाधारको कारण पहिरो र भू-क्षयबाट हुने मानवीय जोखिम न्यूनीकरण गर्न कठिन हुने आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

विपद्मा परेका घरपरिवार तथा समूहलाई तत्काल राहतको व्यवस्था गर्नु, वर्षातको समयमा हुने पहिरो तथा भू-क्षयलाई नियन्त्रण गर्न पर्याप्त बजेट, प्रविधि र यन्त्र उपकरणको व्यवस्था गर्नु, जलवायु परिवर्तनको कारण विपद् व्यवस्थापनलाई समय अनुकूल परिमार्जित र व्यवस्थित गर्न नसक्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

७.२.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

वन र कृषि दुवै क्षेत्रको संरक्षण गर्दै आयआर्जनमा जोड दिन सकिने, जलाधार क्षेत्रमा विभिन्न जलचरहरू पाइने, जलस्रोत तथा जलाधार क्षेत्रको उच्चतम प्रयोग गरी कृषि, उद्योग, पर्यटन आदिको विकास गरी आर्थिक समृद्धि हासिल गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

जोखिम क्षेत्र पहिचान गरी वस्ती विकासलाई सुरक्षित र व्यवस्थित गर्न सकिने, भू-क्षय नियन्त्रण गरी प्राकृतिक स्रोतको संरक्षण गर्न सकिने, दिगो विकासको बाटोमा पालिकालाई डोर्याउन सकिने, सबै प्रकारका विपद्को सामना गर्न आधुनिक प्रविधि संरचना, मापदण्ड र आवश्यक दक्ष जनशक्तिको विकास गर्न सकिने, पहिरो र भू-क्षय नियन्त्रणको लागि अन्तर सरकार र दातृ निकायहरूसँग समन्वय र सहकार्य गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन्।

७.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

भू-क्षय र बाढि, पहिरो नियन्त्रण गरी स्वच्छ र हरीयाली वातावरण तयार गर्ने ।

उद्देश्य

- वृक्षारोपण तथा तटबन्धन गरी पहिरो तथा भू-क्षयबाट हुने मानवीय तथा अन्य क्षतिमा न्यूनीकरण गर्नु ।
- दक्ष जनशक्ति मार्फत भू-पहिचान गरी सुरक्षित स्थानमा एकीकृत वस्ती बसाउनु ।
- गाउँपालिका क्षेत्रको जलाधार व्यवस्थापन गरी स्वच्छ, हरियाली सुरक्षित वातावरण तयार गर्नु ।

७.२.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाई	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/ ८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
संरक्षित पानी मुहान क्षेत्र	संख्या	१००	११०	१२०	१३०	१३०
भूक्षय नियन्त्रणका लागि प्रयोगमा ल्याइएको बायोइन्जिनियरिङ (घाँसपात, झार तथा वनस्पति रोपण) गरिएका क्षेत्रहरू	संख्या	१०	१५	२०	३०	३०
संरक्षित गल्छी तथा पहिरोहरू	संख्या	२०	२५	३०	३५	३५
पहिरो नियन्त्रणका लागि निर्मित रिटेनिडवालहरू	संख्या	५०	६०	७०	८०	८०
भूक्षय नियन्त्रणका लागि वृक्षारोपण गरिएका उजाड डाँडा पाखाहरू	संख्या	२०	२२	२४	२६	२६

७.२.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र/कार्यक्रम /आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षित नतिजा
१	नदी किनारमा र सडक किनारमा भूक्षय नियन्त्रण	जल तथा जमिनको सम्बर्धन गर्नु	२०८२/८३- २०८४/८५	९०००	जल तथा जमिनको सम्बर्धन भएको हुने
२	भूक्षयबाट जोखिमयुक्त क्षेत्र पहिचान तथा संरक्षण		२०८२/८३- २०८४/८५	४००००	
३	रिचार्ज पोखरी निर्माण		२०८२/८३- २०८४/८५	७०००	

७.२.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	१६८००	१६८०	१५१२०	५०४०	०	११७६०
२०८३/८४	२२४००	२२४०	२०१६०	६७२०	०	१५६८०
२०८४/८५	१६८००	१६८०	१५१२०	५०४०	०	११७६०
जम्मा	५६०००	५६००	५०४००	१६८००	०	३९२००

७.३ वातावरण तथा फोहोरमैला व्यवस्थापन

७.३.१ पृष्ठभूमि

मानवीय क्रियाकलाप र प्राकृतिक वातावरण बिचको अन्तरक्रिया र अन्तरसम्बन्धलाई सन्तुलित गर्ने कार्य नै वातावरण व्यवस्थापन हो । नेपालको संविधानले हरेक नागरिकले स्वच्छ तथा स्वस्थ वातावरणमा बाँच्न पाउने मौलिक हकको व्यवस्था गरेको छ । फोहोरमैला व्यवस्थापन गर्ने कानुनी दायित्व र अधिकार स्थानीय सरकारलाई तोकेको छ । फोहोरमैला व्यवस्थापन ऐन, २०६८) शंसोधन २०७४ को परिच्छेद २ को दफा ३ मा व्यवस्था भए बमोजिम फोहोरमैलाको सङ्कलन, अन्तिम विसर्जन तथा प्रशोधनको लागि आवश्यक पर्ने पूर्वाधार तथा संरचनाको निर्माण तथा सञ्चालन गर्ने जिम्मेवारी स्थानीय तहको हुनेछ लेखिएको छ । यसैगरी दफा ११ प्रारम्भिक चरणमा सङ्कलन भएको फोहोरमैला व्यवस्थित गर्न कुनै स्थानलाई स्थानान्तरण केन्द्रको रूपमा तोक्नुपर्ने व्यवस्था गरेको छ भने दफा १२ मा फोहोरलाई स्थायी विसर्जन गर्नको लागि वातावरण सम्बन्धी प्रचलित कानुनको अधिनमा रही फोहोरमैला व्यवस्थापन स्थल तोक्न सक्ने छ भनि उल्लेख गरेको छ । त्यसैले फोहोरमैला व्यवस्थापनको प्रबन्ध मिलाउने जिम्मेवारी स्थानीय तहको हुनेमा दुईमत छैन तसर्थ कानुनी आधारमा टेकेर स्थानीय सरकारले फोहोरको व्यवस्थापन गर्न निर्देशिका बनाई त्यसको माध्यमबाट स्थानीय स्तरमा नै विविध योजना र कार्यक्रमहरू बनाई त्यसको प्रभावकारी कार्यान्वयन मार्फत नगरिकलाई सुसूचित गर्ने जिम्मेवारी स्थानीय निकायको हो ।

यस गाउँपालिकामा घरभित्रको वायु प्रदुषण न्यूनीकरणको आंशिक मात्रामा मात्र प्रयास भएको छ । हरित पार्क तथा एक वडा एक उद्यान निर्माण भएको छैन । ढुङ्गा तथा बालुवाको व्यवस्थित उत्खनन नभएको अवस्था

देखिन्छ । खुल्ला दिशामुक्त क्षेत्र घोषणा भएको तर कार्यान्वयन नभएको अवस्था छ । वातावरण संरक्षण कार्ययोजना बनेको छैन । ल्याण्डफिल साइटको पहिचान र व्यवस्थापन भएको छैन । घरबाट निस्कने फोहोरको आंशिक व्यवस्थापन भएको देखिन्छ । सार्वजनिक स्थलका शौचालय एवं डस्टबिनको निर्माण आंशिक मात्रामा रहेका छन् ।

७.३.२ समस्या र चुनौती

समस्या

वातावरण संरक्षण तथा फोहोरमैला व्यवस्थापन सम्बन्धी स्थानीय तहमा आवश्यक कानुनी व्यवस्था तथा कार्यविधि नभएको, साथै स्थानीय तह र विभिन्न संघसंस्थासँग समन्वयको अभाव हुनु, वातावरण संरक्षण तथा फोहोरमैला व्यवस्थापनको जनचेतनाको अभाव हुनु र स्थानीय तहको प्राथमिकतामा नपर्नु, उचित फोहोरमैला व्यवस्थापनको लागि स्यानिटरी ल्याण्डफिल साइटको पूर्वाधार नभएको, बजार क्षेत्रमा फोहोरको मात्रा बढ्दै गएको, प्लाष्टिक झोलाहरूको प्रयोगमा वृद्धि हुनु, गाउँपालिकाबाट फोहोर सङ्कलनको उचित व्यवस्थाको कमी हुनु, वातावरण संरक्षणमा अत्यन्त न्यून बजेटको व्यवस्था हुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

वस्ती विस्तारसँगै फोहोरमैला व्यवस्थापन गर्न, फोहोरको श्रोतमै कुहिने र नकुहिने अनि पुनः प्रयोगमा ल्याउन सकिने गरि वर्गिकरण गरि उचित व्यवस्थापन गर्ने, प्लाष्टिक जन्य फोहोरको नियन्त्रण र व्यवस्थापन गर्न, फोहोरमैला व्यवस्थापन सम्बन्धी जनचेतना वृद्धि गर्ने, प्राकृतिक वातावरण र मानवीय वातावरण विच सन्तुलन बनाई राख्न आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

७.३.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

प्रदेशमा उद्योग, वन तथा वातावरण मन्त्रालयको गठन हुनु र यसले वातावरण संरक्षणमा तदारुकता देखाउनु, फोहोरलाई ऊर्जा रूपमा प्रयोग गर्न सक्ने प्रविधिको विकास हुनु, वातावरण संरक्षणको क्षेत्रमा दक्ष जनशक्ति उत्पादन हुन सक्ने, वातावरण संरक्षणमा गैरसरकारी संस्थाहरूको परिचालन गर्न सकिने, तीव्र शहरीकरण भई नसकेकोले शहरलाई व्यवस्थित गर्दै वातावरण संरक्षण गर्न सकिने, फोहोरमैला व्यवस्थापन सम्बन्धी जनचेतना अभिवृद्धि भई फोहोरलाई स्रोत मै व्यवस्थापन गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

वातावरण, फोहोर व्यवस्थापन र प्रदूषण नियन्त्रण क्षेत्रमा स्थानीय सरकार, विकास साझेदार तथा अन्य सरकारी/ गैरसरकारी संस्थाहरू, उपभोक्ता समितिहरू र नागरिकको चासो बढ्दै जानु, प्रदेश तथा सङ्घीय सरकारको फोहोर व्यवस्थापनको नीति, रणनीति र निर्देशिकाहरू निर्माण हुनु, वातावरण संरक्षण सम्बन्धी सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन गरी स्थानीयवासीहरूलाई परिचालन गर्न सकिने, वातावरण संरक्षणमा पर्याप्त बजेटको व्यवस्था गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

७.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

वातावरणीय संरक्षण तथा फोहोरको दिगो व्यवस्थापन गरी स्वच्छ तथा सफा वातावरण तयार गर्ने ।

उद्देश्य

➤ जनचेतना जगाई घरभित्र र घरबाहिरको वातावरण सफा र स्वच्छ राख्नु ।

➤ अव्यवस्थित ढुङ्गा तथा वालुवा उत्खननमा रोक लगाउनु ।

७.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/ ८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
डम्पींग साइट	संख्या	०	०	१	०	०
फोहोर संकलन साधन	संख्या	१	१	०	०	०
आधुनिक सरसफाइ सुविधा प्रयोग गर्ने परिवार	प्रतिशत	०	०	१	२	२
स्रोतमानै फोहर वर्गीकरण, व्यवस्थापन गर्ने परिवार	प्रतिशत	०	०	५	१०	१५

७.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	प्रशिक्षण कार्यक्रम	वातारणीय स्वच्छता कायम गर्नु	निरन्तर	१०००	वातारणीय स्वच्छता कायम भएको हुने
२	डम्पिङ साइट निर्माण			१००००	

७.३.७ बिषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	३३००	३३०	२९७०	९९०	०	२३१०
२०८३/८४	४४००	४४०	३९६०	१३२०	०	३०८०
२०८४/८५	३३००	३३०	२९७०	९९०	०	२३१०
जम्मा	११०००	११००	९९००	३३००	०	७७००

७.४ विपद् जोखिम न्यूनीकरण र व्यवस्थापन तथा जलवायु उत्थानशिलता

७.४.१ पृष्ठभूमि

नेपाल विपद्को अत्यधिक जोखिममा रहेको देश हो । यहाँ प्रत्येक वर्ष बाढी, पहिरो, चट्याङ, आगलागी, सडक दुर्घटना र महामारी जस्ता प्राकृतिक तथा गैरप्राकृतिक प्रकोपहरूका कारण जनधनको ठूलो क्षति तथा नोक्सानी हुने गरेको छ । मुलुक विषम भू-बनावट, कमजोर भौगर्भिक अवस्था, मौसमी विषमता तथा जलवायु परिवर्तनका कारण भूकम्प, बाढी, पहिरो तथा भू-स्खलन, डुबान, चट्याङ, खडेरी, हिमपात, असिना, हिमपहिरो, हिमताल विष्फोटन, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, हुरी बतास, वन डढेलो लगायतका प्राकृतिक प्रकोपहरूबाट प्रभावित छ । जलवायु परिवर्तनले पारेको असरलाई कम गरी जिविकोपार्जन, वातावरण र पारिस्थितिक प्रणालीलाई साविक प्राकृतिक अवस्थामा वा सो भन्दा सवल अवस्थामा लैजान गरिने कार्यलाई उत्थानशिलता भनिन्छ । (स्थानीय अनुकूलन कार्ययोजना खाका, २०७६) गाउँपालिकाको विपद्हरूमा पहिरो, भू-क्षय, बाढी, हावाहुरी, चट्याङ, आगलागी, आदि रहेका छन् । त्यसैगरी जलवायु परिवर्तनको जल्दो बल्दो समस्या र यसले पार्ने असर पनि गाउँपालिका भित्र विद्यमान छन् । गाउँपालिकाले विपद् व्यवस्थापनलाई गाउँपालिका स्तरीय र वडा स्तरीय विपद् समिति गठन गरेको छ । त्यसैगरी विपद् व्यवस्थापन योजनाले जलवायु अनुकूलन र प्रकोप जोखिम न्यूनीकरण, जोखिम सम्बेदनशील भू-उपयोग योजना तयार गर्ने र कार्यान्वयन गर्ने, एकीकृत जलाधार व्यवस्थापन र कार्यान्वयन र जलस्रोत संरक्षणको आवश्यकतामा जोड दिएको छ । गाउँपालिकाले विपद् न्यूनीकरणको लागि सडक लगायत विकास निर्माण गर्दा वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कनलाई अनिवार्य गरेको छ । वन जङ्गलको संरक्षणको लागि सामुदायिक वन उपभोक्ता मार्फत सचेतनामूलक कार्यक्रम गरेको छ ।

७.४.२ समस्या र चुनौती

समस्या

विपद् व्यवस्थापन तथा न्यूनीकरण सम्बन्धी कार्यविधि नभएको, विपद् व्यवस्थापन तथा न्यूनीकरणको लागि यन्त्र उपकरणको अभाव हुनु, विपद् तथा महामारी सम्बन्धी सचेतनाको अभाव हुनु साथै स्थानीय तहमा प्राविधिक ज्ञानको अभाव हुनु, स्थानीय तहको उक्त क्षेत्रमा ध्यान नपुगेको, भौगोलिक, आर्थिक तथा प्राविधिक कठिनाई रहेको र विकल्पको खोजी तथा अवधारणा नबनाएको, आपतकालिन प्रतिकार्य सञ्चालन र राहत सामग्रीको व्यवस्था नभएको, रक्त संचार केन्द्रको व्यवस्था नभएको, दमकलको व्यवस्था नभएको, आपतकालिन खुल्ला क्षेत्रको व्यवस्था नभएको, जोखिमयुक्त स्थानबाट वस्ती स्थानान्तरण नभएको, जलवायु परिवर्तनबाट अन्नबालीमा पुगेको क्षतिको तथ्याङ्क अद्यावधिक नभएको, बाली विमा नभएको आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

भू-क्षय र पहिरोजन्य प्रकोप व्यवस्थापन गर्नु, झाडा पखाला लगायत स्वास्थ्यजन्य माहामारी रोक्नु, जोखिमयुक्त बसोबास क्षेत्र पहिचान गरी सुरक्षित स्थानमा वस्ती स्थानान्तरण गर्नु, प्रकोप तथा महामारी बारे जनचेतना वृद्धि गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

७.४.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

गाउँपालिका स्तरीय तथा वडा स्तरीय विपद् प्रतिकार्य योजना निर्माण गरी गाउँपालिका स्तरीय र वडा स्तरीय विपद् समितिलाई सक्रिय बनाउन सकिने, जोखिम बारेमा स्थानीयवासीलाई सचेत गराई समयमा जोखिम

व्यवस्थापन गर्ने सकिने, भर्खरै मात्र शहरीकरण प्रारम्भ भएकोले सुरक्षित आवासको विकास गरी शहरीकरणलाई व्यवस्थित गर्न सकिने, गाउँपालिकामा संक्रमणजन्य रोगहरुको प्रकोपबाट बच्न नागरिकहरु अभ्यस्त हुँदै गएकोले सचेतना वृद्धि हुँदै गएको आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

विपद् जोखिम न्यूनीकरण राष्ट्रिय नीति र रणनीतिक कार्ययोजना कार्यान्वयनमा रहनु, गाउँ विपद् व्यवस्थापन समिति गठन भएको, नेपाल रेडक्रस सोसाईटी, नेपाल प्रहरी, शसस्त्र प्रहरी बल नेपालसँग समन्वय गरी विपद् पूर्व तयारी र उद्धार सम्बन्धी तालिमको व्यवस्था गर्न सकिने, स्थानीय सरकारको अधिकार क्षेत्रमा पर्नु र प्राथमिकताको विषय बन्नु, विपद् व्यवस्थापन कार्यमा सङ्घीय एवम् प्रदेश सरकारको सहयोग रहनु आदि प्रमुख अवसर हुन्।

७.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

जलवायु परिवर्तन र विपद्बाट आइपर्ने समस्यालाई न्यूनीकरण गर्ने ।

उद्देश्य

- जलवायु परिवर्तन अनुकूलका उपायहरु अवलम्बन गर्नु ।
- प्रतिरोधात्मक भौतिक संरचनाहरु निर्माण गर्नु ।
- आपत्कालीन उद्धार व्यवस्थाबाट मानवीय तथा भौतिक सम्पत्तिहरुको क्षति न्युनिकरण गर्नु ।

७.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/ ८३	२०८३/ ८४	२०८४/ ८५
विपद्को समयमा आश्रय लिन सक्ने संरक्षित खुल्ला स्थान	संख्या	१२	१३	१४	१६	१८
आपत्कालीन उद्धार गर्न तालिम प्राप्त स्वयंसेवक	संख्या	५	१०	१५	२०	२५
विपद् व्यवस्थापन स्थानीय कोषमा भएको रकम	रु. लाख	२०	२५	३०	३५	४२

७.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्त विवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	विपद व्यवस्थापन कोष स्थापना	विपद पूर्व तयारी गर्नु	निरन्तर	३०००	विपद जोखिम न्यूनीकरणमा सहजता आएको हुने

७.४.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	९०००	९००	८१००	२७००	०	६३००
२०८३/८४	१२०००	१२००	१०८००	३६००	०	८४००
२०८४/८५	९०००	९००	८१००	२७००	०	६३००
जम्मा	३००००	३०००	२७०००	९०००	०	२१०००

परिच्छेद ८ : संस्थागत विकास तथा सुशासन क्षेत्र

८.१ सुशासन ऐन, कानून र जवाफदेहिता

८.१.१ पृष्ठभूमि

संविधानले सार्वजनिक प्रशासनमा सुशासनको प्रत्याभूति गर्ने, मानव अधिकारको संरक्षण र संवर्द्धन गर्दै विधिको शासन कायम राख्ने, राष्ट्रिय सुरक्षा प्रणालीको विकास गरी शान्ति सुरक्षाको व्यवस्था गर्ने, भ्रष्टाचार र अनियमितता नियन्त्रणका लागि प्रभावकारी उपाय अवलम्बन गर्ने नीति लिएको छ । स्थानीय तह नागरिकका निकटका सरकार हुन् । राज्यका तर्फबाट स्थानीय स्तरमा गरिने सेवा प्रवाह स्थानीय तहको प्रमुख जिम्मेवारी हो । स्थानीय तहमा सुशासन स्थापना भएमा मात्र नागरिकले परिवर्तन र लोकतन्त्रको अनुभूति गर्ने अवसर प्राप्त गर्न सक्दछन् । यसका निमित्त स्थानीय तहहरू सक्षम, पारदर्शी, भ्रष्टाचार मुक्त, उत्तरदायी र सभागितामूलक हुन आवश्यक छ । संस्थागत सुशासन कायम भई चुस्त तथा दुरुस्त आर्थिक प्रशासन, पारदर्शी, गुणस्तरीय, छिटोछरितो सेवा प्रवाह, सामाजिक सुरक्षाको प्रत्याभूति, स्थानीय निकायहरू तथा अन्य विकास सरोकारवाला संस्थाहरूको क्षमता अभिवृद्धि, कार्यक्रमहरूको तर्जुमा, कार्यान्वयन सूचनामूलक, सहभागितामूलक हुनुको साथै स्थानीय तहमा आवाधिक योजना अनुसार विकास कार्यक्रम सञ्चालन, सबै कार्यक्रमहरू पारदर्शी तथा सूचना माथि सेवाग्राहीहरूको पहुँच अभिवृद्धि भई सुशासनको प्रत्याभूति, सबै सरोकारवालाहरू बीच प्रभावकारी समन्वय र विकास कार्यको प्रभावकारी अनुगमन तथा मुल्याङ्कन जस्ता कुराहरू सँगै गुणस्तरीय सेवा प्रवाह योजनावद्ध विकास हुने अपेक्षा योजनाले गरेको छ ।

सभापोखरी गाउँपालिकामा ऐन-१५, नियमावली-४, निर्देशिका-७, कार्यविधि-२९, कानून-१, मापदण्ड-१, आचारसंहिता-१ निर्माण भएका छन् । ऐन, नियम, कानूनहरू यस गाउँपालिकाको राजपत्रमा प्रकाशित हुने गरेको छ । सार्वजनिक सुनुवाई हुने गरेको, सामाजिक परीक्षण नियमित रूपमा संचालन भएको, सुचना पाटी भएको, गुनासो अधिकृतको व्यवस्था भएको साथै गुनासो पेटीकाको कार्यालय तथा अन्तर्गतका कार्यालयहरूमा व्यवस्था भएको, नागरिक अभिमत लिने नगरेको, सेवाग्राहीमा सहायत कक्षको व्यवस्था नभएको, बालमैत्री, अपाङ्गता मैत्री तथा वातावरण मैत्री संरचना निर्माण भएको अवस्था छ ।

८.१.२ समस्या र चुनौती

समस्या

गाउँपालिकाको आफ्नै सार्वजनिक खरिद ऐन, नियमावली नहुनु, निर्माण भएका ऐन, नियम कानून कार्यान्वयनमा समस्या हुनु, सरोकार वाला पक्षसँग अन्तर्क्रिया भई ऐन कानून निर्माण नभएको, सार्वजनिक सुनुवाई प्रभावकारी ढंगले संचालन नभएको, डिजिटल सूचना पाटी तथा राम्रो व्यवस्थापन नभएको, गुनासो सुनुवाई सुरक्षित तथा व्यवस्थित नभएको, आन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली व्यवस्थापन कार्यविधि, ऐन नियमावली नहुनु, अनुगमन मुल्याङ्कन सम्बन्धी ऐन कार्यविधि नहुनु, स्थानीय सडक व्यवस्थापन सञ्चालन तथा नियमन सम्बन्धी ऐन, नियम नहुनु, जनप्रतिनिधि कर्मचारी आचरसंहिता नहुनु, कार्य सञ्चालन निर्देशिका नहुनु, सार्वजनिक सुनुवाई नियमित नहुनु, जे.सी.परीक्षण नहुनु, धेरै आयोजनाहरूमा नागरिक अभिमत नलिनु, नागरिक समाज तथा समुदायको आधारित संस्थाहरूको क्षमता विकासका कार्यक्रमहरू सञ्चालन नहुनु, सामाजिक जवाफदेहिता अभिवृद्धि गर्ने सम्बन्धी कार्यक्रम कम हुनु, स्थानीय संस्थाहरूको सक्रिय परिचालन नहुनु साथै प्रोफाइल तयार नहुनु, सबै तिर सञ्चार

सुविधा प्रभावकारी हुन नसक्नु, गाउँपालिकाको सेवाको गुणस्तरियता परिक्षण हुन नसक्नु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

अन्तरनिकाय समन्वय प्रभावकारी बनाउनु, सबै सार्वजनिक निकाय तथा संघ संस्थाहरुको सेवा प्रवाहलाई पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, जवाफदेहिता विकास गर्नु, सुशासनयुक्त समाज तथा संस्कार विकास गर्नु, गाउँपालिकाको कार्यक्षेत्र सुस्पष्ट गर्दै बुझाइमा एकरूपता निर्माण गर्नु, संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्नु, उत्तरदायी प्रशासनिक प्रणालीको विकास गर्नु, गुणस्तरीय, भरपर्दो, विश्वसनीय एवम् सेवाग्राहीमैत्री सार्वजनिक सेवा प्रवाहको सुनिश्चितता गर्दै गाउँपालिका प्रतिको विश्वसनीयता अभिवृद्धि गर्नु, नागरिक समाज र समुदायमा आधारित संस्थाहरुको क्षमता विकास कार्यक्रम सञ्चालन गर्न, सामाजिक जवाफदेहिता अभिवृद्धि गर्ने सम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालन गर्न, स्थानीय स्तरमा रहेका संस्थाहरु परिचालन गरि प्रोफाइल तयार गर्न, उपभोक्ता हित प्रवर्द्धन तथा खाद्य वस्तुमा मिसावट कम गर्न लगायत समस्या न्युनिकरण गर्न, गाउँपालिकाको सेवाप्रवाह गुणस्तरियताको परिक्षण तथा सेवा प्रवाहको अवरोधमा सुधार ल्याउन, गाउँपालिकाका विकासका गतिविधिलाई पालिकावासी सामु सुसुचित गर्न तथा सुशासनलाई प्रवर्द्धन गर्न गराउन आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

८.१.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

स्थानीय निकायको लागि स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐनको व्यवस्था हुनु, सेवा प्रवाहलाई नतिजामूलक र प्रविधिमैत्री बनाउन सकिने, स्थानीय न्याय सम्पादन प्रक्रियालाई प्रभावकारी र व्यवस्थित बनाउन कार्यविधि, नीति निर्माण र संस्थागत संरचना खडा गर्न सकिने, विद्युतीय सुशासनलाई प्रवर्द्धन गर्न डिजिटल सरकार निर्माण गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

स्थानीय तहको एकल अधिकार भित्रका कानून निर्माण गरी जनशक्ति परिचालन गर्ने अधिकार हुनु, आर्थिक कार्य प्रणाली व्यवस्थित गर्ने सम्बन्धी आर्थिक ऐन र अन्य ऐन कानूनहरु तर्जुमा हुनु, समावेशी प्रतिनिधित्व सहित निर्वाचित प्रतिनिधिबाट स्थानीय तहको सञ्चालन हुनु, स्थानीय संघ, संस्था, नागरिक समाज, गैसस, टोल विकास संस्था, सामुदायिक संस्थाहरु क्रियाशील हुनु, स्थानीय सरोकारवालाहरु, विपक्षीय लगायत राजनीतिक दलहरु रचनात्मक, सहयोगि हुनु, विकास निर्माण एवम् स्रोतसाधनको बाँडफाँटमा अन्तरसरकार सहकार्य र साझेदारीको सम्भावना रहनु आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

८.१.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

सभापोखरी गाउँपालिकालाई सुशासन कायम गरी कानूनी पालिका बनाउने ।

उद्देश्य

- स्थानीय ऐन, नियम तथा मापदण्डहरुको निर्माण तथा कार्यान्वयनमा स्थानीय सबै सरोकारवालाहरुको सहभागिता र सामाजिक जवाफदेहिताका औजारहरुको अभ्यासबाट सार्वजनिक सेवा प्रवाहमा सुशासन अभिवृद्धि गर्नु ।

८.१.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/ ८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/ ८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
नागरिक वडापत्र अनुसार सेवा प्रवाहमा क्षतिपूर्ति गरिएको	संख्या	०	१०	२५	५०	७५
अभ्यास भएका सामाजिक जवाफदेहिताका औजारका प्रकारहरू	संख्या	०	-	१	-	२
वर्षभरीमा भएका सार्वजनिक सुनुवाई	संख्या	२	३	४	५	६
हेल्प डेस्कबाट लाभान्वित सेवाग्राही	प्रतिशत	०	-	-	२०	
पालिकामा पेश भएका सेवा प्रवाह सम्बन्धी गुनासो सुनुवाईको फछ्यौट	प्रतिशत	०	-	-	५०	
कूल दर्ता मध्ये न्यायिक समितिबाट फछ्यौट भएका मुद्दाहरू	प्रतिशत	५०	-	-	७५	

८.१.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	नीति कानून तथा सुशासन प्रबर्धन (साल बसाली कार्यक्रम)	नीति तथा कानूनको पारदर्शिता बढाउनु	निरन्तर	६५००	नीति कार्यान्वयन मा सुधार आएको हुने

८.१.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आब	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पुँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	१९५०	१९५	१७५५	५८५	०	१३६५
२०८३/८४	२६००	२६०	२३४०	७८०	०	१८२०
२०८४/८५	१९५०	१९५	१७५५	५८५	०	१३६५
जम्मा	६५००	६५०	५८५०	१९५०	०	४५५०

८.२ संस्थागत विकास, मानव संसाधन विकास तथा सेवा प्रवाह

८.२.१ पृष्ठभूमि

गाउँपालिकाको सेवा प्रवाहलाई प्रभावकारी बनाउन, व्यवस्थित गर्न तथा विकासको प्रतिफल आम गाउँवासीहरूलाई समानुपातिक रूपमा उपलब्ध गराउन समेत गाउँपालिकाको संगठन विकास योजना र जनशक्ति विकास योजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्नुपर्ने देखिन्छ । प्रत्येक कर्मचारीको कार्य विवरण प्रष्ट हुने गरी तयार गरी लागु गर्नुपर्ने देखिन्छ । गाउँपालिकाको कार्यवोझलाई बडा समितिहरूमा क्रमशः हस्तान्तरण गर्दै लैजानु पर्ने देखिन्छ । यसरी गाउँपालिकाले विकेन्द्रीकरणको रणनीति अवलम्बन गर्दै संस्थागत विकासमा महत्वपूर्ण भूमिका खेल्नुपर्ने हुन्छ । यसका लागि गाउँपालिकाले आवश्यक नीति तर्जुमा गर्दै समयानुकूल परिवर्तन गर्दै लैजानु पर्दछ र आवश्यक जनशक्ति परिपूर्ति गर्नु पर्दछ । गाउँपालिकाको लागि शहरी योजनाकार, भूगोल विद्व, तथ्याङ्कविद, समाजशास्त्री लगायतका जनशक्ति हुनु आवश्यक भएता पनि यो अवस्था हालसम्म यस गाउँपालिकामा हुन सकेको देखिन्न । यसले गर्दा प्राविधिक काम लगायत अन्य काम समयमा सहज रूपले सम्पन्न गर्न कठिनाई भएको देखिन्छ भने गाउँपालिकामा आवश्यक पर्ने तथ्याङ्क समेत अभाव रहेको देखिन्छ जसले गर्दा नीतिगत व्यवस्था लगायत मुख्य आवश्यकता पहिचानमा समेत समस्या परिरहेको देखिन्छ । संस्थागत विकास योजना सम्बन्धित सरोकारवालाहरूको क्षमता सुदृढीकरण गर्दै दक्ष र बौद्धिक संगठनात्मक संरचनाको स्थापना गरी विकास कार्यहरूलाई तीव्र र व्यवस्थित गर्ने तर्फ केन्द्रित छ । यस अन्तर्गत पूर्वाधार विकास र क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रमहरू समावेश गरिएको छ ।

८.२.२ समस्या र चुनौती

समस्या

गाउँपालिकाको आफ्नै भवन तथा सभाहल नहुनु, कर्मचारीहरूलाई वृत्ति विकास, प्रोत्साहन तथा पुरस्कारको अभ्यास नहुनु, सबै वडा कार्यालय, सबै विद्यालय, सबै स्वास्थ्य संस्था लगायत पालिका भित्रका सबै निकायहरूमा भरपर्दो इन्टरनेट जडान तथा सिसी क्यामरा नहुनु, कार्यपालिका पदाधिकारी सदस्य तथा कर्मचारीहरूको क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रम सञ्चालन नहुनु, सेवा प्रवाहमा प्राथमिकता तथा सेवाग्राहीका लागि सहायता कक्ष नहुनु, स्वीकृत

दरबन्दी अनुसारको कर्मचारी नहुनु र सरुवा भएर जाने प्रवृत्ति हुनु, बालमैत्री अपाङ्गता मैत्री, लैङ्गिक मैत्री, ज्येष्ठ नागरिक मैत्री आवश्यक पूर्वाधारहरू नहुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

गाउँपालिकाको कार्य जिम्मेवारी अनुसार आवश्यक प्रशासनिक संरचनाको निर्माण तथा संगठनात्मक पुनर्संरचना गर्नु, कर्मचारीको पदपूर्ति गरी सबै वडा तथा विषयगत शाखाहरूमा दरबन्दी अनुसारको कर्मचारी पदपूर्ति गर्न, संघीय सरकारबाट खटिने कर्मचारीहरूमा स्थायित्व ल्याउनु, समायोजित कर्मचारीहरूलाई स्थानीय सेवा अनुसार सञ्चालन गरी व्यवस्थित गर्न, सार्वजनिक सेवालाई गुणस्तरीय, छिटोछरितो, न्यून लागत र समयमा सेवा प्रवाह प्रदान गर्नु, सेवाग्राहीहरूको सन्तुष्टि अभिवृद्धि तथा सेवा प्रवाहलाई पारदर्शी एवं उत्तरदायि बनाउनु, स्थानीय स्तरमा रहेका केन्द्रिय, प्रादेशिक निकाय-कार्यक्रम तथा गैरसरकारी संस्थासँग प्रभावकारी समन्वय कायम गर्न जस्ता चुनौतीहरू छन् ।

८.२.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

गाउँपालिका कार्यालय तथा वडा कार्यालयका कर्मचारीहरूको आचार संहिता बनाएर लागू गर्न सकिने, विद्यमान सूचना प्रविधिको सदुपयोग गरी अन्य स्थानीय सरकारले गरेका उत्कृष्ट अभ्यासहरूको अनुशरण गर्न सकिने, वडा कार्यालयहरू तथा गाउँपालिकाको भवन निर्माण गर्न जग्गा व्यवस्थापन र निर्माण कार्य अगाडि बढाउन सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

निर्वाचित जनप्रतिनिधिहरूको सक्रियता बढ्दो रहनु, स्थानीय संघ, संस्था, नागरिक समाज, गैसस, टोल विकास संस्था, सामुदायिक संस्थाहरूको रचनात्मक सहयोग रहनु, विषयगत समिति तथा उप-समितिहरू गठन र क्रियाशील हुनु, गाउँपालिका केन्द्र एवं वडाहरूमा इन्टरनेट लगायत विद्युतीय उपकरणहरूको व्यवस्था हुन थाल्नु, जनप्रतिनिधि एवं कर्मचारीहरू क्षमता अभिवृद्धि तालिमबाट लाभान्वित हुँदै जानु, पेपरलेस सरकारलाई प्रवर्द्धन गर्दै गाउँपालिकाको सम्पूर्ण कार्य प्रणालीलाई अनलाइन सिस्टममा आवद्ध हुँदै जानु, गाउँपालिकाको आर्थिक केन्द्र, बजार क्षेत्र र बैंकसँग सहकार्य गरी नगद रहित कारोबारलाई प्रोत्साहन गर्न आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

८.२.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

दक्ष जनशक्ति र चुस्त सेवा प्रवाह भएको हुने ।

उद्देश्य

- प्रभावकारी संगठन संरचना निर्माण तथा दक्ष जनशक्तिको व्यवस्थापन गर्नु ।
- सेवा प्रवाहको पहुँच बढाउनु र ढिला सुस्ती हटाउनु ।

८.२.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/८३	२०८३/८४	२०८४/८५
कार्य विवरण दिई कार्यसम्पादन गर्ने कर्मचारी	संख्या	१३३	१३५	१३८	१४०	१४०
संगठन तथा व्यवस्थापन सर्भेक्षण अनुसार पदपूर्ति गर्नुपर्ने र पदपूर्ति भएका कर्मचारी	संख्या	११/१३३	१५	२०	२५	२५
प्रति एक सेवाग्राहीलाई सेवा प्रवाह गर्न लाग्ने औषत समयावधि	मिनेट	२०	-	-	१८	१८
क्षमता विकास कार्यक्रमबाट लाभान्वित जनप्रतिनिधि र कर्मचारी	संख्या	३४/८७	-	-	३६/९२	३६/९२
क्षमता विकास कार्यक्रमबाट लाभान्वित सरोकारवाला, संघसंस्था, गैसस	संख्या	६	७	८	९	९
संस्थागत क्षमता स्वमूल्याङ्कनमा प्राप्ति	प्राप्ति	७६.२५	८०	८५	९०	९०
उत्कृष्ट कार्यसम्पादन गरेवापत पुरस्कृत कर्मचारी	संख्या	०	२	४	६	६

८.२.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	सङ्गठन, मानव संसाधन तथा क्षमता विकास (साल बसाली कार्यक्रम)	अन्तरिक क्षमतामा सुधार गर्नु	निरन्तर	७०००	अन्तरिक क्षमतामा सुधार भएको हुने

८.२.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आव	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	२१००	२१०	१८९०	२१००	०	०
२०८३/८४	२८००	२८०	२५२०	२८००	०	०
२०८४/८५	२१००	२१०	१८९०	२१००	०	०
जम्मा	७०००	७००	६३००	७०००	०	०

८.३ वित्तीय स्रोत परिचालन

८.३.१ पृष्ठभूमि

सार्वजनिक स्रोतको मितव्ययी र अधिकतम परिचालन, प्रतिवेदन तथा लेखा परीक्षण मार्फत् वित्तीय व्यवस्थापनमा पारदर्शिता र जवाफदेहिता अभिवृद्धि गरी नागरिकलाई वित्तीय सुशासनको प्रत्याभूति दिनु स्थानीय सरकारको दायित्व हो । सार्वजनिक आयको अद्यावधिक स्थितिको लेखाङ्कन तथा प्रतिवेदन प्रणालीलाई नियमित र एकरूपता कायम गरी प्रभावकारी बनाउँदै लैजानको लागि सूचना प्रविधिमा आधारित वित्तीय व्यवस्थापनको विकासमा जोड दिदै राजस्व व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको विकास गरिएको छ । सार्वजनिक खर्चको पारदर्शिता अभिवृद्धि गर्न सरकारी निकायका कार्यक्रम तथा खर्चलाई सार्वजनिकीकरण गर्ने पद्धतिको समेत विकास भएको छ ।

सेवा प्रदायक सबै सरकारी निकाय, स्थानीय निकायहरूमा मानवीय तथा भौतिक स्रोत साधनको व्यवस्था, प्रभावकारी रूपमा आन्तरिक स्रोतहरूको पहिचान, परिचालन र व्यवस्थापन हुनुपर्छ । वित्तीय विकास योजनाले राजस्व सुधार गर्ने योजनालाई समावेश गरी स्थानीय आम्दानीका स्रोत वृद्धि गर्ने, कर प्रशासन प्रणालीमा सुधार र निजी क्षेत्र तथा नागरिक समाजको प्रवृद्धनका लागि रणनीति एवम् कार्यक्रमहरू समावेश गरेको छ । सभापोखरी गाउँपालिकाको आर्थिक वर्ष २०८०/८१को कुल वार्षिक बजेट ३६,७३,१८,२९६.९९ रहेको छ ।

८.३.२ समस्या र चुनौती

समस्या

गाउँपालिकाको वित्तीय व्यवस्थापन गर्ने निकायको सुदृढीकरण नहुनु, गाउँपालिकामा आउने वार्षिक बजेट केन्द्रीकृत हुनु, विकास खर्च कम हुनु, चालु खर्च समयमा भएपनि पूँजीगत खर्च पूर्ण रूपमा हुन नसक्नु, वित्तिय साक्षरता कार्यक्रम सञ्चालन नहुनु, बेरुजु फछ्छोट सम्बन्धी ध्यान नपुग्नु, सम्झौता अघि काम गर्ने र सम्झौता

अधिको बिल ल्याउने प्रवृत्तिमा सुधार नहुनु, पर्याप्त मात्रामा राजश्वका स्रोतहरू नहुनु, राजश्व संकलन र परिचालन क्षमतामा वृद्धि नहुनु, राजश्व अध्ययन सुधार कार्ययोजना कार्यन्वयन नहुनु, विकास आयोजनाहरूको ठेक्का पट्टा निर्धारित समयमा नहुनु, विद्युतीय बोलपत्रको व्यवस्था नहुनु, खरिद प्रकृया नियमसंगत, व्यवस्थित र पारदर्शी हुन नसक्नु, विद्युतीय आर्थिक कारोवार व्यवस्थित नहुनु र आर्थिक वर्षको अन्त्यमा आएर मात्र खर्च गर्ने परिपाटी कायम रहनु आदि यस क्षेत्रका समस्याहरू हुन् ।

चुनौती

लेखा परीक्षण गर्ने क्रममा आवश्यक तयारी पुग्न गाह्रो, लेखाको क्रममा सुत्र सिस्टमको प्रयोग गर्नुपर्नेमा केही कारोबारहरू सिस्टम भन्दा बाहिर गर्ने प्रवृत्ति हुनु, गाउँपालिकाबाट विभिन्न शिर्षकमा गर्ने खर्चहरूमा प्रभावकारिता, मितव्ययीता र नियमितता कायम गर्न, संघ र प्रदेशबाट प्राप्त अनुदान समयमा नै निकास भई विकास आयोजनाहरू निर्धारित समयमा ठेक्का पट्टा गरी सम्पन्न गर्न, वार्षिक राजश्व र व्ययको अनुमान यथार्थ परक बनाई कार्यान्वयन गर्न, राजश्व संकलन र परिचालनलाई पारदर्शी र प्रभावकारी बनाउन, खरिद प्रकृया नियमसंगत, व्यवस्थित र पारदर्शी, नियमित र व्यवस्थित गर्न, सम्पूर्ण आर्थिक कारोवारलाई विद्युतीय माध्यमद्वारा सञ्चालन गर्न, विकास खर्चमा वृद्धि गरी आर्थिक वर्षको प्रथम चौमासिकदेखि बजेट निकास गरी कार्यक्रम सञ्चालन गर्न जस्ता चुनौतीहरू रहेका छन् ।

८.३.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

विकास साझेदार संस्था एवं निजी क्षेत्रसंग सहकार्य हुन सक्ने, आन्तरिक आय स्रोत अभिवृद्धिको सम्भावना हुनु, आन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली निर्माण गरी लागू गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

संघ र प्रदेश सरकारबाट अनुदानहरू प्राप्त हुनु, आन्तरिक आय स्रोत अभिवृद्धिको सम्भावना हुनु, वेरुजु फछ्छ्यौटमा उल्लेख्य प्रगति हुनु, लक्षित वर्ग तथा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको अभ्यास हुनु, लागत सहभागितामा कार्यक्रम सञ्चालन गर्न सकिने, विकास साझेदार संस्था एवं निजी क्षेत्रसंग सहकार्य गर्न सकिने, राजश्व सङ्कलन, लेखा अभिलेखीकरण कम्प्युटराइज हुनु जस्ता अवसरहरू रहेका छन् ।

८.३.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

बजेट आकारमा वृद्धि र प्रभावकारी वित्तिय स्रोत परिचालन गर्ने ।

उद्देश्य

- आन्तरिक स्रोत र बाह्य स्रोतको खोजी गरी बजेट आकारमा वृद्धि र वित्तीय सुशासन कायम गर्नु ।
- उत्पादनमुखी र आर्थिक समृद्धिसँग सभापोखरी गाउँपालिकालाई अगाडी बढाउने गरी वित्तीय स्रोत परिचालन गर्नु ।

८.३.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीनलक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/ ८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
पालिकाको कूल वार्षिक बजेट	रु.करोड	३६.६९	४०.३६	४४.४०	४८.८४	५३.७२
प्रतिव्यक्ति बजेट खर्च (विकास तर्फ)	रु.हजार	३६.८०	४०.४८	४४.५२	४८.९८	५३.८८
कूल बजेटको वास्तविक खर्च	प्रतिशत	८५	८७	९०	९२	९५
कूल बजेटको पूँजीगत खर्च	प्रतिशत	४०	-	४५	-	-
लैङ्गिक उत्तरदायी बजेट विनियोजन	प्रतिशत	२	५	७	८	९
कूल बजेटमा बाह्य श्रोतको हिस्सा	प्रतिशत	८९	-	-	८५	

८.३.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्रःकार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	राजस्व सबलीकरण कार्यक्रम (साल बसाली)	अन्तरिक राजस्व अभिवृद्धि गर्नु	निरन्तर	२०००	आन्तरिक राजस्वमा सुधार आएको हुने

८.३.७ विषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आब	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पूँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	६००	६०	५४०	६००	०	०
२०८३/८४	८००	८०	७२०	८००	०	०
२०८४/८५	६००	६०	५४०	६००	०	०
जम्मा	२०००	२००	१८००	२०००	०	०

८.४ योजना व्यवस्थापन

८.४.१ पृष्ठभूमि

विकास प्रयासलाई व्यवस्थित र प्रणालीगत रूपमा सञ्चालन गरी अपेक्षित उपलब्धि हाँसिल गर्न योजनावद्ध विकासको आवश्यकता पर्दछ । भरपर्दो तथ्याङ्क कार्यान्वयनयोग्य योजनाको आधार हो । स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐनले स्थानीय तहले आफ्नो क्षेत्राधिकारका विषयमा योजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्नु पर्ने व्यवस्था गरेको छ । यसैगरी ऐनले स्थानीय तथ्याङ्क र अभिलेख व्यवस्थापन, पाश्वर्चित्र तथा श्रोत नक्सा अद्यावधिक बनाउने, सूचना तथा अभिलेख केन्द्र सञ्चालन गर्ने, जनशक्तिको तथ्याङ्क संकलन गर्ने आदि कार्य स्थानीय तहको काम, कर्तव्य र अधिकारको दायरामा राखेको छ । यस गाउँपालिकाले घरधुरी सर्वेक्षण वस्तुगत विवरण तयार गरेको छ ।

योजना तर्जुमा सम्बद्ध समितिहरू गठन भई कार्यरत छन् । आयोजनाहरू कार्यान्वयनमा उपभोक्ता समितिहरूको सहभागिता हुँदै आएको पाइन्छ, तापनि स्थानीय संस्थाहरू, गैसस लगायत निजी क्षेत्रसँगको सहकार्य प्रभावकारी हुन सकेको देखिदैन । आयोजनाहरू कार्यान्वयन पश्चात सहभागितामूलक अनुगमन मूल्याङ्कन गर्ने अभ्यास हुँदै आएको छ । सबै विषयक्षेत्रगत गुरु योजनाहरू तर्जुमा हुन सकेको छैन । केहि विषय क्षेत्रगत योजना रहेको, केहि विषय क्षेत्रगत गुरु योजना बनेको, वार्षिक योजनाहरू नियमित बनेको, पूर्वाधारमा धेरै आयोजनाहरू भएको (सडक ट्रयाक खोल्ने काम), आयोजनाहरू अनुगमन हुने गरेको, टुक्रे आयोजना मार्फत काम हुने गरेको, लाभान्वित को अनुकूल केहि योजना बन्ने गरेको पाइन्छ । सार्वजनिक परीक्षण र सामाजिक परीक्षण हालसालै आरम्भ भएका छन् ।

यस सभापोखरी गाउँपालिकाको आवधिक योजनाले वडा तहसम्म पुगेर स्थानीयवासीको माग, प्राविधिक अध्ययन र सम्भाव्यताका आधारमा गाउँपालिका स्तरीय र वडा स्तरीय योजना तथा कार्यक्रमहरूको आयोजना बैंक तयार गरेकोले गाउँपालिकाले उक्त आयोजना बैंकमा भएका आयोजनाहरूलाई क्रमैसँग कार्यान्वयन गर्दै लानु पर्ने छ । साथै आवधिक योजनाले तयार गरेको गाउँपालिकाको सामाजिक, आर्थिक, भौतिक, वातावरणीय आदि विषयसँग सम्बन्धित तथ्याङ्कहरूलाई समेत आगामी विकास निर्माणको लागि उपयोग गर्न सकिन्छ । गाउँपालिकामा विकास निर्माण र अन्य सामाजिक कार्यहरूमा जनसहभागिता भने उत्साहप्रद हुने गरेको छ ।

८.४.२ समस्या र चुनौती

समस्या

कृषि, पर्यटन, यातायात, वातावरण जस्ता अग्रणी क्षेत्रहरूको दीर्घकालीन गुरुयोजना तर्जुमा हुन नसक्नु, आयोजनाहरूको दिगोपना, व्यवस्थित तथा मर्मत सम्भारका लागि लाभान्वितबाट उपभोग शुल्क सङ्कलन हुन नसक्नु, नतिजामा आधारित अनुगमन मूल्याङ्कन अभ्यास नहुनु, आयोजना र योजनाहरू योजनावद्ध ढंगबाट विकास नहुनु, आयोजनाहरू छनौट गर्दा पर्याप्त सरोकारवालाहरूसँग समन्वय नहुनु एवं योजना बमोजिम कार्यान्वयन नहुनु, समावेशी तथा सहभागितामूलक योजना तर्जुमा नहुनु, आयोजनाहरू बालमैत्री, अपाङ्गमैत्री, लैङ्गिकमैत्री, जेष्ठ नागरिकमैत्री नहुनु, धेरै आयोजनाहरू नागरिक स्तरमा प्रभावकारी नहुनु आदि प्रमुख समस्या हुन् ।

चुनौती

तथ्याङ्कलाई व्यवस्थित गरी विद्युतीय प्रणालीमा आबद्ध गर्न, तथ्याङ्क तथा वस्तुगत विवरणलाई वार्षिक रूपमा अद्यावधिक गर्न, योजना र तथ्याङ्क बीच तादात्म्यता कायम गर्न, पूर्व सम्भाव्यताका आधारमा आयोजनाहरूको

छनौट र कार्यान्वयन गर्न, दामासाहीमा आधारित बजेट वितरणको कार्यलाई योजना अनुशासनमा ल्याउन, संघीय र प्रादेशिक योजना कार्यक्रमको स्थानीय तहसँग समन्वय मिलाउन र योजनागत दोहोरोपना हटाउन, योजना अभिलेख व्यवस्थापन अध्यावधिक गर्न, नियमित अनुगमन गरी निर्धारित समय, लागत र गुणस्तरमा आयोजना सम्पन्न गर्न, आयोजनाहरूमा गुणस्तरीयता कायम राख्दै निर्धारित समयमै सम्पन्न गर्नु, आयोजनाहरूको दिगोपना, मर्मत सम्भार र स्थानीयहरूको अपनत्व श्रृजना गर्नु आदि प्रमुख चुनौती हुन् ।

८.४.३ सम्भावना र अवसर

सम्भावना

योजना तर्जुमामा स्थानीय सरोकारवाला, निकाय, गैर सरकारी संस्था, सामुदायिक संस्था र नागरिक समाजहरूको सहभागिता गर्न सकिने, आयोजनाहरू कार्यान्वयनमा उपभोक्ता समितिको सहभागिता प्रभनवकारी गर्न सकिने, सञ्चार माध्यम मार्फत् गाउँपालिकाका काम र विकास निर्माणका योजना सुसूचित गर्न सकिने, दीर्घकालीन गुरुयोजना निर्माण गर्न सकिने, बालश्रम र महिला हिंसा नियन्त्रणको योजना बनाई नियन्त्रण गर्न सकिने आदि प्रमुख सम्भावना हुन् ।

अवसर

वार्षिक नीति तथा कार्यक्रमहरू कार्यान्वयन हुनु, आवधिक योजना, गौरव आयोजना, मध्यमकालीन खर्च संरचना तर्जुमा हुने क्रममा रहेको, आयोजनाहरू कार्यान्वयनमा उपभोक्ता समितिको सहभागिता हुनु, योजना तर्जुमामा स्थानीय सरोकारवाला, निकाय, गैसस, सामुदायिक संस्था र नागरिक समाजहरूको सहभागिता हुनु, सार्वजनिक संरचनाहरू लैङ्गिक मैत्री बनाउने कार्यको थालनी हुनु, सहभागिता मुलक तथा प्रभावकारी ढँगबाट हुने अभ्यास हुनु, प्रत्येक नागरिकले सबै आयोजनामा आफ्नो भाव सृजना गर्न र स्वामित्व ग्रहण गर्न सकिने, लाभान्वित मार्फत सहभागिताको सुनिश्चित तथा योगदान गर्न सकिने आदि प्रमुख अवसर हुन् ।

८.४.४ उपक्षेत्रगत लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यक्रम तथा आयोजना

लक्ष्य

नतिजामुखी योजना निर्माण, अपनत्व र संरक्षण भएको हुने ।

उद्देश्य

- वित्तिय अनुशासन कायम गरी योजना सफल बनाउनु ।
- निर्माण भएका र भइरहेको योजना आयोजना सफल र दिर्घकालीन बनाउनु ।

द.४.५ नतिजा सूचक तथा मध्यमकालीन लक्ष्य

सूचक	एकाइ	२०८०/ ८१ सम्मको उपलब्धि	२०८१/८२ सम्मको अनुमानित उपलब्धि	मध्यम कालीन लक्ष्य		
				२०८२/ ८३	२०८३ /८४	२०८४ /८५
आयोजना बैंकमा समावेश भएका कूल आयोजनाहरु डिपिआर हुन बाँकी समेत	संख्या	-	२	५	७	८
तर्जुमा भएका विषय क्षेत्रगत गुरुयोजना (कृषि, पर्यटन, यातायात गुरुयोजना...)	संख्या	१	२	४	६	७
श्रोत नक्शा सहित खण्डीकृत वस्तुगत विवरण (प्रोफाइल) तयारी तथा अद्यावधिक भएको विषयगत क्षेत्र	संख्या	-	-	१		२
कार्यान्वयन भएका स्थानीय गौरव आयोजनाहरु	संख्या	-	१	२	३	४
सम्पन्न भएका पूँजीगत तर्फका कूल आयोजनाहरु	प्रतिशत	९०	९१	९३	९५	९७

द.४.६ कार्यक्रम/आयोजनाको संक्षिप्तविवरण

क्र.सं.	उपक्षेत्र÷कार्यक्रम ÷आयोजना	उद्देश्य	अवधि (शुरु र समाप्ति)	कुललागत (रु हजारमा)	अपेक्षितनतिजा
१	योजना ब्यवस्थापन कार्यक्रम (साल बसाली)	योजना ब्यवस्थापन लाई चुस्त बनाउनु	साल बसाली	५०००	योजना कार्यान्वयन सहज हुने

द.४.७ बिषयक्षेत्र गत खर्च र स्रोत को त्रि बर्षीय अनुमान

आब	बजेट अनुमान (रु हजारमा)			बजेटको स्रोत		
	कुल	चालु	पुँजीगत	अन्तरिक	सङ्घ	प्रदेश
२०८२/८३	३५६७.९	३५६.७९	३२११.११	३५६७.९	०	०
२०८३/८४	४७५७.२	४७५.७२	४२८१.४८	४७५७.२	०	०
२०८४/८५	३५६७.९	३५६.७९	३२११.११	३५६७.९	०	०
जम्मा	११८९३	११८९.३	१०७०३.७	११८९३	०	०